डाक पंजीयन नं. 99/2018-20
ई-मेल:- adhuniksamachar2014@gmail.com

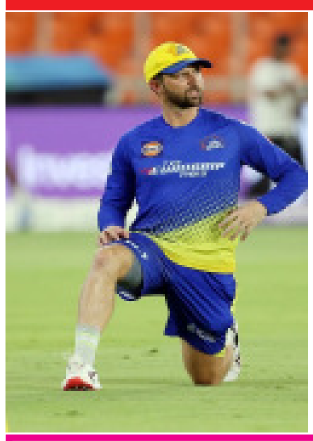

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

आधुनिक समाचार

हिन्दी साप्ताहिक संस्थापकः- श्री महेन्द्र अरोरा

खेलः कोनवे को सीखते रहने की विलियमसन की.... | वर्ष-12 अंक-23 | प्रयागराज, रविवार 04 जून 2023 से शनिवार 10 जून 2023 तक | पृष्ठ- 8 मूल्यः 3 रूपये | सिनेमाःकई एक्टर्स से जुड़ा नाम फिर भी रहीं...

संक्षिप्त समाचार

अतीत में ओडिशा ट्रेन दुर्घटना जैसे हादसे होने पर रेल मंत्री इस्तीफा दे दिया करते थेः अजित

नागपुर/मुंबई। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के वरिष्ठ नेता अजित पवार ने शनिवार को कहा कि देश ने ओडिशा रेल दुर्घटना से बड़ा हादसा पहले कभी नहीं देखा, जिसमें कम से कम 261 यात्रियों की मौत हो चुकी है। पवार ने कहा कि अतीत में ऐसे हादसे होने पर रेल मंत्री इस्तीफा दे दिया करते थे, लेकिन फिलहाल इस बारे में कोई बात नहीं कर रहा। महाराष्ट्र विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष पवार ने नागपुर में पत्रकारों से यह बात कही। ओडिशा के बालासोर जिले में बेंगलुरू-हावड़ा सुपरफास्ट एक्सप्रेस, शालीमार चेन्नई सेंट्रल कोरोमंडल एक्सप्रेस और एक मालगाड़ी की भिड़ंत में कम से कम 261 यात्रियों की मौत हुई है और 650 लोग घायल हैं। पवार ने कहा, 'ओडिशा ट्रेन दुर्घटना बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है। इससे पहले देश ने इतनी बड़ी ट्रेन दुर्घटना नहीं देखी थी। रेलवे विभाग और सरकार को तत्काल इस घटना की जांच करके जिम्मेदार लोगों को खिलाफ कार्रवाई करनी चाहिए।' उन्होंने कहा, 'इससे पहले जब इस तरह के हादसे होते थे, तो रेल मंत्री इस्तीफा दे दिया करते थे। यह इतिहास रहा है। लेकिन अब कोई इस बारे में बोलने को तैयार नहीं है।

ओडिशा ट्रेन दुर्घटना सदी का सबसे बड़ा रेल हादसा : ममता बनर्जी

कोलकाता। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने शनिवार को कहा कि ओडिशा के बालासोर में हुई भीषण ट्रेन दुर्घटना "इस सदी का सबसे बड़ा" रेल हादसा है और सच्चाई का पता लगाने के लिए उचित जांच की आवश्यकता है। रेल मंत्री के तौर पर दो बार सेवाएं दे चुकीं बनर्जी बचाव अभियान का जायजा लेने के लिए शनिवार दोपहर दुर्घटनास्थल पहुंचीं। उन्होंने वहां पहले से मौजूद रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों से बात की।

रेलगाड़ियों को टकराने से रोकने की प्रणाली ने काम क्यों नहीं किया।" बनर्जी ने हादसे में मारे गए पश्चिम बंगाल के यात्रियों के परिवारों को पांच-पांच लाख रुपये का मुआवजा देने की घोषणा की है। उन्होंने रेलवे और ओडिशा सरकार को भी पूरी मदद मुहैया कराने की पेशकश की। न्होंने कहा, "हमने 70 एंबुलेंस, 40 चिकित्सक और नर्स घायलों की मदद के लिए पहले ही भेज दिए हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी दुर्घटना पर दुख व्यक्त किया, और प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष (पीएमएनआरएफ) से मृतकों के परिजनों के लिए दो-दो लाख रुपये और घायलों के लिए 50-50 हजार रुपये की अतिरिक्त अनुग्रह राशि की घोषणा की।

रेल हादसे के बाद घायलों से भरे अस्पताल, यात्रियों को बचाने में जुटे चिकित्सा कर्मी

बालासोर (ओडिशा)। ओडिशा में शुक्रवार को हुए भीषण रेल हादसे के बाद बालासोर जिला अस्पताल और सोरो अस्पताल में बड़ी संख्या में घायलों को लाया गया जिससे इन अस्पतालों के कमरे भर गये और गलियारों तक में मरीजों को रखा गया है। चिकित्सा कर्मचारियों को घायल यात्रियों की मदद करने की कोशिश करते देखा गया, जिनमें से कई ओडिशा के अलावा अन्य राज्यों से हैं और बात करने की स्थिति में नहीं हैं। शनिवार दोपहर तक करीब 526 घायलों को बालासोर जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

बालासोर जिला मुख्यालय अस्पताल में अतिरिक्त जिला चिकित्सा अधिकारी (एडीएमओ) डॉ. मृत्युंजय मिश्रा ने कहा, "मैं कई दशकों से इस पेशे में है, लेकिन मैंने अपने पूरे करियर में इस प्रकार की अफरा-तफरी की स्थिति नहीं देखी।... अचानक 251 घायलों को हमारे अस्पताल लाया गया और हम इसके लिए कतई तैयार नहीं थे। हमारे कर्मियों ने रातभर काम किया और सभी को प्राथमिक उपचार मुहैया कराया।" उन्होंने बताया कि इनमें से 64 मरीजों को कटक स्थित एससीबी चिकित्सकीय महाविद्यालय अस्पताल रेफर किया गया और अब "हमारे अस्पताल में 60 बिस्तरों पर मरीज हैं।

अन्य को मामूली ऑपरेशन के बाद छुट्टी दे दी गई।"

मिश्रा ने कहा, "हम यह देखकर वाकई हैरान है कि बड़ी संख्या में युवा रक्तदान करने यहां पहुंचे। हमने रातभर में करीब 500 यूनिट रक्त एकत्र किया। सभी का शुक्रिया। यह जीवन में एक बार होने वाला अनुभव है। अब चीजें सामान्य हैं।" अधिकारियों ने बताया कि पुलिसकर्मी और स्थानीय लोग स्वेच्छा से यहां और कई अन्य अस्पतालों में रक्तदान कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि दो हजार से अधिक लोग घायलों की मदद करने के लिए रात में बालासोर चिकित्सकीय महाविद्यालय एवं अस्पताल पहुंचे और कई ने रक्तदान भी किया। अस्पताल के मुर्दाघर में सफेद कफन में लिपटे शवों का ढेर लगा हुआ है, जिनमें से कई की अभी तक शिनाख्त नहीं हो पाई है। अस्पताल के अधिकारियों ने बताया कि हादसे के शिकार हुए कई लोगों के रिश्तेदार अभी तक शहर नहीं पहुंच पाए हैं, क्योंकि प्रमुख रेल मार्ग पर दुर्घटना के कारण कई ट्रेन को रद्द कर दिया गया है, कई के मार्ग में परिवर्तन किया गया है और कई ट्रेन देरी से चल रही हैं। बालासोर अस्पताल में भर्ती जगदेब पात्रा ने बताया कि वह चेन्नई जा रहे थे।

पात्रा के दोनों हाथों की हड्डियां टूट गई हैं। पश्चिम बंगाल समेत कई राज्यों से आए लोग अपने लापता संबंधियों एवं मित्रों की तलाश में बालासोर अस्पताल और सोरो अस्पताल पहुंच रहे हैं। घायलों को बालासोर, सोरो, भद्रक, जाजपुर अस्पताल और कटक के एससीबी मेडिकल कॉलेज ले जाया गया है। कोरोमंडल एक्सप्रेस से चेन्नई जा रहे झारखंड के एक यात्री मुकेश पंडित ने 'पीटीआई-भाषा' से कहा कि उन्हें "समझ नहीं आया कि हादसा कब हुआ और उन्हें होश में आने के बाद एहसास हुआ कि उन्हें बहुत दर्द हो रहा है।"

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मांडविया ने शनिवार को बताया कि राहत अभियान में मदद के लिए अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) भुवनेश्वर के चिकित्सकों को बालासोर और कटक रवाना किया गया है। मांडविया ने ट्वीट किया, 'एम्स- भुवनेश्वर के चिकित्सकों के दो दल राहत अभियान में मदद के लिए बालासोर में ट्रेन दुर्घटनास्थल और कटक के उस अस्पताल के लिए रवाना किए गए हैं, जहां घायलों का इलाज किया जा रहा है।' उन्होंने कहा, 'हम कीमती जिंदगियों को बचाने के लिए इस भीषण रेल दुर्घटना के पीड़ितों को सभी आवश्यक सहायता और चिकित्सकीय मदद मुहैया करा रहे हैं।

छिपा है कौन सा रहस्य? जमीन में 10 हजार मीटर गहरा गड्ढा कर रहा चीन, 16 हजार मस्जिदें कर दी गायब

बीजिंग। चीन में मुसलमान और सरकार आमने-सामने हैं। चीन में मुसलमानों की मस्जिद को तोड़ने का मामला अभी ठंडा भी नहीं हुआ था कि उसके बाद ये खबर आई कि चीन ने एक और मुस्लिम इलाके में दुनिया का सबसे बड़ा गड्ढा खोदना शुरू कर दिया है। चीन इस मुस्लिम इलाके में 10 हजार मीटर गहरा गड्ढा खोद रहा है। ये गड्ढा भारत से ज्यादा दूर नहीं है। वहीं एक मीडिया रिपोर्ट में यहां तक दावा किया गया है कि चीन 1-2 नहीं बल्कि 16 हजार मस्जिदों को निकल चुका है। चीनी वैज्ञानिकों ने पृथ्वी की क्रस्ट में 10 हजार मीटर (10 किमी या 32,808 फीट) गहरा छेद करना शुरू कर दिया है। चीन सतह के ऊपर और नीचे नई सीमाओं को खोजना चाहता है। चीन ने अब तक के सबसे गहरे बोरहोल के लिए ड्रिलिंग मंगलवार को देश के तेल-समृद्ध शिंजियांग क्षेत्र में शुरू की। इस समय धरती पर सबसे गहरा होल रूस में है। यह प्रोजेक्ट बेहद मुश्किल है। चाइनीज एकेडमी ऑफ इंजीनियरिंग के एक वैज्ञानिक सन जिनशेंग ने ड्रिलिंग के दौरान आने वाली कठिनाई की तुलना 'दो पतले तारों पर चलने वाले बड़े ट्रक' से की है। दरअसल, चीन इस्लाम से जुड़ी सभी चीजों को धीरे-धीरे करके मिटा रहा है। चीनी सरकार ने अभियन छेड़ा हुआ है कि वो देश की सभी मस्जिदों पर मेड इन चाइना छाप छोड़ देगा। मतलब साफ है कि या तो वो मस्जिदों को पूरी तरह तोड़ देगा या फिर उसकी बनावट को ही बदल देगा। चीन के हुनान प्रांत में हाल ही में एक मस्जिद के पुनर्निर्माण के दौरान पुलिस और लोगों के बीच झड़प हो गई। युन्नान प्रांत में जातीय रूप से हुई मुसलमानों के लिए इबादत और धार्मिक शिक्षा की एक महत्वपूर्ण नजियायिंग मस्जिद के गुबंद और मिनार को तोड़ने की कोशिश करने पर भीड़ के साथ झड़प हुई। बताया जा रहा है कि ये मस्जिद कई सौ साल पुरानी है। एक रिपोर्ट में दावा किया गया है कि पिछले कुछ सालों में चीन ने युन्नान और शिनजियांग के इलाकों में 16 हजार मस्जिदों को तोड़ दिया है। ये वही इलाका है जहां उईगर मुस्लिम रहते हैं।

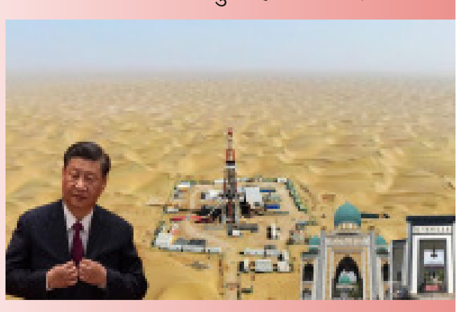

नेपाली प्रधानमंत्री प्रचंड को मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री चौहान ने दिया स्वच्छता के संदेश वाला खास तोहफा

इंदौर। नेपाल के प्रधानमंत्री पुष्पकमल दाहाल "प्रचंड" मध्यप्रदेश के दो दिवसीय दौरे के बाद शनिवार को इंदौर से दिल्ली रवाना हो गए। राज्य के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने यहां स्थित देवी अहिल्याबाई होलकर हवाई अड्डे पर विदाई के वक्त प्रचंड को उनकी एक तस्वीर भेंट की। इस तस्वीर की खासियत यह है कि इसे कपड़ों की अनुपयोगी कतरनों से तैयार किया गया है। तस्वीर बनाने वाली स्थानीय कलाकार अनीता पाल ने बताया, मैंने इंदौर नगर निगम के चलाए जा रहे एक आरआरआर (रिड्यूस, रीयूज, रीसाइकल) केंद्र में जमा कपड़े की कतरनों से प्रचंड की तस्वीर केवल एक दिन में तैयार की। ये अनुपयोगी कतरनें एक दर्जी ने जमा कराई थीं।

आरआरआर केंद्रों के जरिये ठोस कचरे के उत्पादन को कम करके, उनका पुनर्चक्रण कर उन्हें फिर से इस्तेमाल लायक बनाने पर जोर होता है। उन्होंने कहा कि इस तस्वीर के जरिये नेपाल के प्रधानमंत्री को इंदौर के नागरिकों की स्वच्छता की संस्कृति का संदेश दिया गया है। अधिकारियों ने बताया कि राष्ट्रीय स्वच्छता सर्वेक्षण में पिछले छह साल से सिरमौर इंदौर में अनुपयोगी सामान को व्यवस्थित रूप से जमा करके इसे फिर से इस्तेमाल के लायक बनाने के नवाचार के तहत "आरआरआर" केंद्र खोले गए हैं। उन्होंने बताया कि स्थानीय नागरिक इस केंद्र में अनुपयोगी कपड़े, खिलौने, जूते, फर्नीचर, किताबें, चश्मे आदि जमा कर सकते हैं।

अतिरिक्त जिलाधिकारी (एडीएम)आरएस मंडलोई ने बताया कि प्रचंड ने शनिवार को दिल्ली रवाना होने से पहले, शहर के सुपर कॉरिडोर पर आईटी दिग्गज टीसीएस के विशेष आर्थिक क्षेत्र (सेज) का दौरा किया और कंपनी के काम-काज को समझा। अधिकारियों ने बताया कि मध्यप्रदेश दौरे में प्रचंड ने धार्मिक नगरी उज्जैन में भगवान शिव के 12 पवित्र ज्योतिर्लिंगों में शामिल महाकालेश्वर मंदिर में दर्शन-पूजन किया। उन्होंने बताया कि नेपाल के प्रधानमंत्री ने इंदौर में गीले कचरे से बायो-सीएनजी बनाने वाले एशिया के सबसे बड़े संयंत्र तथा ठोस अपशिष्ट निपटान इकाई का दौरा भी किया और भारत के सबसे स्वच्छ शहर के स्वच्छता मॉडल को समझा। गौरतलब है कि प्रचंड बुधवार को भारत की चार दिन की यात्रा पर आए थे। उन्होंने बृहस्पतिवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ दोनों देशों के आपसी संबंधों को लेकर राजधानी दिल्ली में वार्ता की थी। प्रचंड ने शुक्रवार रात इंदौर में एक कार्यक्रम के दौरान कहा था कि इस भेंट के दौरान दोनों देशों के बीच संपर्क, जल संसाधन और ऊर्जा के क्षेत्रों में आपसी संबंध मजबूत करने को लेकर बहुत दूर तक जाने वाली सहमति बनी है।

द्विपक्षीय रक्षा सहयोग पर फोकस रक्षा मंत्री राजनाथ अमेरिका और जर्मनी के समकक्षों संग करेंगे बैठक

नई दिल्लील। रक्षा मंत्रालय के अनुसार राजनाथ सिंह अगले सप्ताह अपने अमेरिकी समकक्ष लॉयड ऑस्टिन और जर्मन संघीय रक्षा मंत्री बोरिस पिस्टोरियस के साथ बैठक करेंगे। राजनाथ सिंह 5 जून को अमेरिकी रक्षा सचिव लॉयड ऑस्टिन के साथ बैठक करेंगे। वह 4 जून से भारत की आधिकारिक यात्रा पर आएंगे। राजनाथ सिंह 6 जून को जर्मन संघीय रक्षा मंत्री बोरिस पिस्टोरियस के साथ बातचीत करेंगे, जो चार दिवसीय यात्रा पर भारत आ रहे हैं। दोनों बैठकों के दौरान औद्योगिक सहयोग पर फोकस के साथ द्विपक्षीय रक्षा सहयोग के मुद्दों पर चर्चा होने की संभावना है। बोरिस पिस्टोरियस 5 जून से भारत की चार दिवसीय यात्रा पर आएंगे। वह इंडोनेशिया से आएंगे। राजनाथ सिंह के साथ अपनी बैठक के अलावा, नई दिल्ली में इनोवेशन फॉर डिफेंस एक्सीलेंस (iDEX) द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान पिस्टोरियस के कुछ रक्षा स्टार्ट-अप से मिलने की संभावना है। रक्षा मंत्रालय की एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, 7 जून को जर्मन संघीय रक्षा मंत्री बोरिस पिस्टोरियस मुंबई का दौरा करेंगे, जहां उनके मुख्यालय, पश्चिमी नौसेना कमान और मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड का दौरा करने की संभावना है।

रिटायर जज से कराई जाए मामले की जांच, फारूक अब्दुल्ला बोले-मैंने अपनी उम्र में नहीं देखा ऐसा हादसा

नई दिलली (एजेंसी)। नेशनल कॉन्फ्रेंस के नेता फारूक अब्दुल्ला ने कहा कि ये बहुत अफसोसजनक घटना है। इसमें 250 से ज्यादा लोगों की मृत्यु हो गई है और कई लोगों का हालत गंभीर है। कुछ दिन पहले रेल मंत्री ने बयान दिया था कि अब एक्सीडेंट नहीं होंगे... अगर एक ट्रेन का एक्सीडेंट हुआ तो बाकी 2 ट्रेन कैसे नहीं रोकी गईं। इसमें जरूर कोई ह्यूमन एरर है। मामले की तहकीकात करना जरूरी है। कुछ ही दिन पहले रेलवे मंत्री ने बयान दिया था कि अब एक्सीडेंट नहीं होंगे। उन्होंने ऐसी मशीने लाई हैं, जिनसे एक्सीडेंट नहीं होगा। या तो वो मशीने यहां लगी नहीं।

अक्सर लोग रेल से ही सफर करते हैं और इसको बताने के लिए हमे हर कोशिश करनी चाहिए कि फिर कोई दुर्घटना न हो। आप फास्ट ट्रेन लाने वाले हैं जिसकी स्पीड बहुत तेज होगी। उसमें अगर ऐसी चीज हो जाए तो बहुत एक्सीडेंट हो जाए। अब्दुल्ला ने कहा कि बहुत खतरनाक एक्सीडेंट है ये और मैंने अपनी उम्र में नहीं सुना है कि तीन ट्रेंने आपस में टक्कर खाए। एक फिर खामियों की बात को दोहराते हुए अब्दुल्ला ने कहा कि इसमें खामियां जरूर हैं। हम बयान बहुत कुछ करते हैं, लेकिन वो काफी नहीं है। इसकी तहकीकात किसी इंडिपेंडेंट रिटायर जज से की जाए। जिसमें पूरी तरह से मालूम पड़े कि ये क्यों हुआ, कैसे हुआ, ताकी आगे ऐसी चीज न हो।

ओडिशा के बालासोर जिले में शुक्रवार को हुए भीषण ट्रेन हादसे के कारण जमीन में धंस गए डिब्बे को शनिवार को क्रेन और बुलडोजर की मदद से ऊपर लाने की कोशिश की गई। यह आखिरी डिब्बा है, जिस तक बचावकर्ता अभी तक पहुंचा नहीं पाए हैं। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। ओडिशा के बालासोर जिले में शुक्रवार शाम कोरोमंडल एक्सप्रेस और बेंगलुरु-हावड़ा एक्सप्रेस ट्रेन के पटरी से उतरने और एक मालगाड़ी से टकराने से जुड़े रेल हादसे में मृतक संख्या शनिवार को बढ़कर 261 हो गई और इस हादसे में 900 से अधिक यात्री घायल हुए हैं।

अखंड भारत के नक्शे पर नेपाल-पाकिस्तान ने आपत्ति जताई, अब भारत ने दी सफाई, केवल मौर्य साम्राज्य के प्रसार को दिखाया गया

नई दिल्ली। नए संसद भवन की एक तस्वीर लगातार चर्चा में बनी हुई है। दरअसल, नए संसद भवन में अखंड भारत का एक नक्शा भी लगा हुआ है। अखंड भारत के इस नए नक्शे को देख कई देशों की बेचैनी भी बढ़ गई है। पाकिस्तान में तो

भारत की नई संसद में लगे इस अखंड भारत के नक्शे को लेकर चर्चा तेज है ही। लेकिन एक और पड़ोसी मुल्क नेपाल भी इस पर चितिंत हो उठा है। जिसके बाद अब भारत ने नए संसद भवन के अंदर 'अखंड भारत' के भित्ति चित्र पर पड़ोसी देशों नेपाल और पाकिस्तान के नाराज होने के बाद सफाई दी है। विदेश मंत्रालय ने कहा कि विचाराधीन भित्ति चित्र अशोक साम्राज्य के प्रसार को दर्शाता है। यह जन-केंद्रित है।

नए संसद भवन के उद्घाटन के बाद केंद्रीय संसदीय मामलों के मंत्री प्रह्लाद जोशी ने भित्तिचित्र की एक तस्वीर ट्वीट की थी, जिसका शीर्षक था, 'संकल्प स्पष्ट है - अखंड भारत। इससे नेपाल में विरोध तेज हो गया है। नेपाल के पूर्व प्रधान मंत्री बाबूराम भट्टाराई ने एक बयान में कहा कि इस नक्श में भारत के अधिकांश निकटतम पड़ोसियों के बीच पहले से ही द्विपक्षीय संबंधों को खराब करने वाले विश्वास की कमी को और अधिक बढ़ाने की क्षमता है। पाकिस्तानी विदेश मंत्रालय ने भी नक्शे का विरोध किया है। 'अखंड भारत' से जोड़ने वाले एक केंद्रीय मंत्री सहित कुछ भाजपा नेताओं के बयानों से हम स्तब्ध हैं। विदेश कार्यालय की प्रवक्ता मुमताज ज़हरा बलोच ने कहा, 'अखंड भारत' का अनावश्यक दावा एक संशोधनवादी और विस्तारवादी मानसिकता का प्रकटीकरण है, जो न केवल भारत के पड़ोसी देशों बल्कि अपने स्वयं के धार्मिक अल्पसंख्यकों की पहचान और संस्कृति को भी अपने अधीन करना चाहता है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने स्पष्ट किया कि भित्तिचित्र का मुद्दा नेपाली नेता द्वारा नहीं उठाया गया था। उन्होंने कहा कि इसलिए मुझे नहीं पता कि विरोध अभी भी जारी है या नहीं। निश्चित रूप से नेपाली पक्ष ने इसे नहीं उठाया। उन्होंने यह भी दावा किया कि भित्तिचित्र अखंड भारत के बारे में नहीं था, बल्कि प्राचीन मौर्य साम्राज्य का विस्तार था।

सबका साथ नहीं, बृजभूषण का साथ, पहलवानों के विरोध पर चुप्पी को लेकर कपिल सिब्बल का केंद्र पर निशाना

नई दिल्ली। राज्यसभा सांसद कपिल सिब्बल ने शनिवार को पहलवानों के विरोध पर चुप रहने और पहलवानों द्वारा यौन उत्पीड़न का आरोप लगाने वाले भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) के प्रमुख बृजभूषण शरण सिंह के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं करने के लिए केंद्र पर निशाना साधा। उच्चतम न्यायालय में प्रदर्शनकारी पहलवानों का प्रतिनिधित्व करने वाले वरिष्ठ अधिवक्ता सिब्बल ने ट्विटर पर कहा कि मामले की जांच करने वालों के लिए 'संदेश' काफी है। सिब्बल ने कहा कि बृजभूषण सिंह अभी भी गिरफ्तार नहीं हुए हैं। पीएम चुप, गृह मंत्री चुप, भाजपा चुप, आरएसएस चुप। जांच करने वालों के लिए पर्याप्त संदेश! सिब्बल ने सरकार के नारे 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' पर तंज कसते हुए कहा कि 'सबका साथ नहीं बृजभूषण का साथ!' सिब्बल का यह हमला भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सांसद सिंह की गिरफ्तारी की मांग के जोर शोर से उठने के बाद हुआ।

देशद्रोह कानून को लेकर लॉ कमीशन की रिपोर्ट में ऐसा क्या है? जिसको लेकर बीजेपी-कांग्रेस में छिड़ी जंग

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट की तरफ से बीते वर्ष मई के महीने में देशद्रोह कानून को स्थगित कर दिया गया था। अब लॉ कमीशन ने इस कानून को लेकर केंद्र सरकार को अपनी रिपोर्ट सौंपी है। जिसके बाद देश के कानून मंत्री की तरफ से प्रतिक्रिया भी सामने आई और उन्होंने रिपोर्ट का स्वागत भी किया है। वहीं देशद्रोह कानून को लेकर लॉ कमीशन की रिपोर्ट को वरिष्ठ अधिवक्ता अभिषेक मनु सिंघवी ने बेहद दुखद और विश्वासघाती बताया है। ऐसे में आइए इस रिपोर्ट के जरिए समझते हैं कि आखिर देशद्रोह कानून को लेकर लॉ कमीशन की रिपोर्ट में ऐसा क्या है, इस पर केंद्र सरकार का क्या है कहना और कांग्रेस को आपत्ति किस बात से है?

लॉ कमीशन की तरफ से देशद्रोह कानून पर 1 जून को केंद्र सरकार को एक रिपोर्ट सौंपी गई। इसमें कमीशन ने कहा कि का मानना है कि राजद्रोह से निपटने वाली भारतीय दंड संहिता की धारा 124ए को बरकरार रखने की आवश्यकता है, लेकिन इसके इस्तेमाल के संबंध में अधिक स्पष्टता लाने के लिए कुछ संशोधन किए जा सकते हैं। सरकार को सौंपी अपनी रिपोर्ट में आयोग ने कहा कि धारा 124ए के दुरुपयोग संबंधी विचार पर गौर करते हुए वह

यह सिफारिश करता है कि केंद्र द्वारा दुरुपयोगों पर लगाम लगाते हुए आदर्श दिशानिर्देश जारी किया जाए। 22वें विधि आयोग के अध्यक्ष न्यायाधीश ऋतु राज अवस्थी (सेवानिवृत्त) ने कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल को लिखे पत्र में कहा कि इस संदर्भ में वैकल्पिक रूप से यह भी सुझाव दिया जाता है कि दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 की धारा 196 (3) के अनुरूप एक प्रावधान शामिल किया जा सकता है जो भारतीय दंड संहिता की धारा 124ए के तहत किसी अपराध के संबंध में प्राथमिकी दर्ज किए जाने से पहले अपेक्षित प्रक्रियात्मक सुरक्षा प्रदान करेगा।

देशद्रोह कानून पर विधि आयोग की रिपोर्ट को लेकर कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल की प्रतिक्रिया भी सामने आई। उन्होंने 2 जून को ट्वीट कर कहा कि राजद्रोह पर विधि आयोग की रिपोर्ट व्यापक परामर्श प्रक्रिया के चरणों में से एक है। रिपोर्ट में की गई सिफारिशें प्रेरक हैं और बाध्यकारी नहीं हैं। अंततः सभी हितधारकों से विचार-विमर्श के बाद ही अंतिम फैसला लिया जाएगा। अब जबकि हमें रिपोर्ट मिल गई है, हम अन्य सभी हितधारकों के साथ भी विचार-विमर्श करेंगे ताकि हम जनहित में एक सूचित और तर्कपूर्ण निर्णय ले सकें।

कांग्रेस की तरफ से लॉ कमीशन द्वारा राजद्रोह के अपराध संबंधी दंडात्मक प्रावधान का समर्थन किए जाने के बाद केंद्र सरकार पर इस कानून को पहले से अधिक खतरनाक बनाने के प्रयास करने का आरोप लगाया और कहा कि यह संदेश दिया गया है कि आगामी लोकसभा चुनाव से पहले विपक्षी नेताओं के खिलाफ इस कानून का दुरुपयोग किया जाएगा। वरिष्ठ वकील अभिषेक मनु सिंधवी ने कहा कि चुनाव नजदीक देखकर विपक्ष को और प्रताड़ित किया जाएगा। कोई भी ऐसा सुरक्षा चक्र नहीं दिया गया है जिससे इसके दुरुपयोग को रोका जा सके।

संपूर्ण समाधान दिवस की अध्यक्षता एसडीएम/ एसीपी ने की

आधुनिक समाचार सेवा

फूलपुर। संपूर्ण समाधान दिवस की अध्यक्षता एसडीएम फूलपुर सौरभ भट्ट तथा एसीपी मनोज कुमार सिंह ने करते हुए फरियादियों की सुनवाई की और प्राप्त 276 प्रार्थना पत्रों को संबंधितों को निस्तारण हेतु प्रेषित किया। इस अवसर पर मऊआइमा थाने के नई बाजार मुल्लापुर की फूलकली पांडेय महिला जो दोनों पैरों से दिव्यांग है। उसको ग्रामीण गोद में लादकर एसडीएम के समक्ष पेश किये। जिसको दबंगों द्वारा परेशान तो किया जा रहा है तथा

घर खेत छोड़कर भाग जाने की धमकी भी दी जा रही है। मामले को गंभीरता से लेते हुए अधिकारीद्वय ने थाना मऊआइमा के प्रतिनिधि को बुलाकर कर्रा करते हुए दिव्यांग को अविलंब सुनकर न्याय दिलाने हेतु कहा। इसी प्रकार एक महिला पत्रकार ने एसीपी से अवैध अड्डों की शिकायत की। सिकंदरा रोड पर पत्रकार के घर वालों के साथ अप्पे चालक ने बदसलूकी की थी। एसीपी ने प्रदेश सरकार के अवैध वाहनों तथा धार्मिक स्थलों पर बिना परमिशन तेज आवाज में बजा रहे लाउडस्पीकरों हेतु कार्यवाही की बात कही। इस अवसर पर तहसीलदार ओम प्रकाश शुक्ला, नायब तहसीलदार धनंजय यादव, बीडीओ फूलपुर एचपी वर्मा, एसडीओ फूलपुर व झूसी, आपूर्ति निरीक्षक अमित चौधरी, बीडीओ बहरिया, सहसों, बहादुरपुर, थाना प्रभारी बहरिया, फूलपुर मऊआइमा, थरवई, सीओ चकबंदी तथा समस्त आर आई लेखपाल मौजूद रहे।

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने लखनऊ विश्वविद्यालय को रेप पीड़िता की कुंडली जांच ने को कहा, आरोपी ने मांगलिक बता शादी करने से किया था इनकार

आधुनिक समाचार सेवा

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने बलात्कार से जुड़े एक मामले में लखनऊ विश्वविद्यालय के ज्योतिष विभाग के हेड ऑफ डिपार्टमेंट को निर्देश दिया कि वो कथित पीड़िता की कुंडली की जांच करके बताएं कि वो मांगलिक है या नहीं। जांच तीन सप्ताह के भीतर पूरी कर बताने का निर्देश दिया गया है।

जस्टिस बृज राज सिंह की बेंच आरोपी की जमानत याचिका पर सुनवाई कर रही थी। मामले में आरोपी ने कथित तौर पर यौन संबंध बनाने के बाद पीड़िता से इस आधार पर शादी करने से इनकार कर दिया कि लड़की की कुंडली में मंगल दोष है। यानी वो मांगलिक है। केस के मुताबिक

आरोपी ने शादी करने का झूठा वादा कर पीड़ता साथ यौन संबंध बनाए। आरोपी के वकील ने कोर्ट में दलील दी कि आरोपी और पीड़िता के बीच विवाह नहीं हो सकता क्योंकि पीड़िता मांगलिक है। हालांकि पीड़िता ने इस आरोप का विरोध किया। कहा कि वो मांगलिक नहीं है। इसे देखते हुए हाईकोर्ट ने लखनऊ विश्वविद्यालय के ज्योतिष विभाग के हेड ऑफ डिपार्टमेंट को निर्देश दिया कि वो कथित बलात्कार पीड़िता की कुंडली की जांच करके बताएं कि वो मांगलिक है या नहीं। साथ ही कोर्ट ने पक्षकारों को दस दिनों के भीतर अपनी कुंडली विभागाध्यक्ष के समक्ष पेश करने का भी निर्देश दिया। कोर्ट ने लखनऊ विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष को निर्देश दिया है कि वे तीन सप्ताह के भीतर सीलबंद लिफाफे में अपनी रिपोर्ट इस अदालत को सौंपें।

संक्षिप्त समाचार

महिला जिला टीम के द्वारा बाल सुरक्षा सम्मान का आयोजन हुआ सम्पन्न

आधुनिक समाचार सेवा

प्रयागराज। राष्ट्रीय मानवाधिकार एवं अपराध नियंत्रण ब्यूरो प्रयागराज महिला जिला टीम के द्वारा बाल सुरक्षा सम्मान का आयोजन प्रयागराज आजाद पार्क शाम 5:00 बजे संपन्न किया गया। इस कार्यक्रम में उपस्थित नेशनल मीडिया ऑफिसर शिशिर गुप्ता, यूथ विंग स्टेट प्रेसिडेंट सिद्धांत केसरवानी, डिस्ट्रिक्ट प्रेसिडेंट महिला विंग श्वेता साहू, जिला सचिव वंशिका, जिला संरक्षक मीरा सिंह, एक्टिव मेंबर शालिनी गुप्ता, शशांक वैश्य, शकील अख्तर शामिल रहे। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि एवं समाजसेवी बंजारे फाउंडेशन के प्रबंधक विनायक शुक्ला रहे। महिला टीम ने प्रयागराज में बाल सुरक्षा पर कार्य कर रहे कुछ जागरूक लोगों को सम्मानित किया गया , सचिन सिंह अध्यक्ष स्वदेश सेवा संस्थान , हिमांशु पांडे डायरेक्टर स्वदेश सेवा संस्थान, रुचिन वर्मा डायरेक्टर ओम टाइपिंग इंस्टीट्यूट, आचार्य कौशल किशोर अध्यक्ष ज्ञान आरोग्य चैरिटेबल ट्रस्ट, अभिषेक शुक्ला टीचर, प्रियांशु श्रीवास्तव योन उत्पीड़न से अवसाद ग्रस्त बच्चों के लिए मोटिवेशनल स्पीकर एवं उद्घोषक आकाशवाणी दूरदर्शन संस्कृति मंत्रालय उत्तर प्रदेश । महिला जिलाध्यक्ष श्वेता साहू ने इस कार्यक्रम का सारा श्रेय अपनी पूरी टीम को दिया , टीम के द्वारा ही कार्य को आगे बढ़ाना है और आगे भी अनेकों कार्य टीम के सहयोग से पूर्ण होते रहेंगे।

भाविनी डे केयर सेंटर प्रयागराज में समर कैंप समापन का आयोजन किया गया

आधुनिक समाचार सेवा

प्रयागराज। समर कैंप में मुख्य अतिथि श्रीमती सविता केसरवानी (पत्नी श्री उमेश चंद्र गणेश केसरवानी महापौर प्रयाग राज), विशिष्ट अतिथि में श्री नीरज त्रिपाठी महाधिवक्ता हाई कोर्ट प्रयागराज, श्रीमती रंजना गुलाटी ऑल इंडिया वोमेन्स कॉन्फ्रेंस की पूर्व अध्यक्ष, डॉ अशोक शुक्ला जी ज्वाइन डायरेक्टर तमन्ना हॉस्पिटल ने सरस्वती प्रतिमा पर माल्यार्पण कर दीप प्रज्वलित करके कार्यक्रम का शुभारंभ किया ट स्पेशल बच्चों द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किए गए ट संस्था के सचिव पूनम सिंह द्वारा सभी का स्वागत उद्बोधन किया गया ट संस्था की सचिव द्वारा सभी को पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया गया माही और संचिता द्वारा सूफी डांस का प्रदर्शन किया गया ट साहिल चौधरी और माही सिंह द्वारा बड़ी देर भई नंदलाला तेरी राह तके बृजबाला पर बहुत सुंदर नृत्य प्रस्तुत किया। आयशा, तेजस्वी सिंह लायरा, दर्शनी विशाल द्वारा हरा समंदर गोपी चंदन एक्शन पर कविता प्रस्तुत किया। कृष्णा भारतीय और पुष्पिका पांडे द्वारा हे रामचंद्र कह गए सिया से ऐसा कलयुग आएगा पर नृत्य प्रस्तुत किया। इस सांस्कृतिक कार्यक्रम में दर्शकों का भरपूर मनोरंजन आर.जे. राहुल द्वारा किया गया। बच्चों द्वारा समर कैंप में बनाए सामानों का स्टाल भी लगाया गया। बच्चों के बनाए सामानों की सभी ने बहुत सराहना की। सांस्कृतिक कार्यक्रम तैयार कराया सुश्री सुनीता मिश्रा ने ट समर कैंप के आयोजन में सभी बच्चों को सर्टिफिकेट प्राइज

देकर सम्मानित किया गया ट जिन बच्चों द्वारा पेपर बैग तैयार किया गया उन सभी बच्चों और महिलाओं को पेपर बैग की ट्रेनिंग के लिए मुख्य अतिथि द्वारा सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया गया ट इस दौरान उन अभिभावकों का भी मुख्य अतिथि द्वारा सम्मान कराया गया जो हमेशा संस्था के लिए अपना विशेष योगदान देते रहते हैंट ट मुख्य अतिथि द्वारा संस्था की विशेष अध्यापिका सुश्री प्रीति श्रीवास्तव, सुश्री सरिता पाल, सुश्री शीलू सोनकर, कृष्णा चौधरी, एवं हर्ष वर्धन सिंह सभी सम्मानित किया गया टट अभिभावकों में विशेष योगदान श्रीमती रितु भटनागर, श्रीमती अर्चिता अरोरा, श्रीमती सुप्रीत कौर, श्रीमती सोनल श्रीवास्तव, श्रीमती रूपा धूरिया का रहा ट कार्यक्रम का संचालन सुश्री रुचि राय द्वारा किया गया ट इस आयोजन में श्रीमती नीलम प्रसाद जी, डॉ नम्रता जयसवालजी, मीरा जी,श्वेता साहू, स्नेह लता सिंह,ने उपस्थित होकर बच्चों का उत्साहवर्धन किया।

सफाईकर्मियों ने मशीनो के साथ निकाल रैली,महापौर ने दिखाई झंडी

आधुनिक समाचार सेवा

प्रयागराज। नाला सफाई करने वाली मशीने, वाहन और अन्य उपकरणों का रैली निकालकर सड़क पर प्रदर्शन किया गया। पत्थर गिरजाघर से बुधवार सुबह निकाली गई रैली को महापौर गणेश केसरवानी और नगर आयुक्त चंद्र मोहन गर्ग ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

नए एसडीएम ने कोर्ट रूम में जनसुनवाई फिर मुकदमे सुनने की नई प्रथा शुरू की

आधुनिक समाचार सेवा

फूलपुर। फूलपुर के नए एसडीएम सौरभ भट्ट ने अपने चेंबर में जन सुनवाई हेतु जगह कम पड़ती देख कोर्ट रूम में ही पहले जनसुनवाई फिर मुकदमों की सुनवाई की, नई प्रथा चालू कर दी ना तो फरियादी कोर्ट समझ कर घुस पा रहे है ना ही वादकारी जनसुनवाई समझकर घुस पा रहे है। बता दे जब नई तहसील बनी थी तब एसडीएम कक्ष उस समय की आवश्यकता अनुसार बना था। अब समस्याओं का अंबार इतना है कि अधिकारी दिन भर सुने तब भी नहीं चुकने वाला। तहसील के अधिवक्ता गण कोषाध्यक्ष महेश कुमार यादव, अजय तिवारी एडवोकेट, सौरभ यादव एडवोकेट आदि ने जनसुनवाई हेतु पर्याप्त जगह तहसील दिवस हाल से बेहतर कहीं नहीं होने और उसी में जनसुनवाई करने की मांग की है। इस पर पत्रकार बंधु एवं ग्रामीण फरियादी भी सहमत दिखे।

कदीमी जल निकासी के नाले को पाट लेने की शिकायत

आधुनिक समाचार सेवा

फूलपुर। थाना अंतर्गत रसूलपुर गांव के दर्जनों लोगों ने हस्ताक्षर युक्त ज्ञापन एसडीएम फूलपुर को सौप कर कदीमी जल निकासी के नाले को पाट लेने की शिकायत की है। कथित रूप से उक्त नाले का बरसाती पानी ढकपूरा, रसूलपुर व मैलहन गांव का बरसाती पानी ले जाकर मैलहन झील में गिराता है। यदि जनहित में नाला की सफाई ना हुई तो बरसात में ग्रामीणों के घर तक पानी भरने से इनकार नहीं किया जा सकता। एसडीएम ने आर आई मैलहन वा लेखपाल को आख्या हेतु प्रेषित किया।

तहसील गेट पर दो दिनों से खड़ा है बिगड़ा ट्रक

आधुनिक समाचार सेवा

फूलपुर। तहसील गेट के पास फ्लाईओवर की चढ़ाई के पास 2 दिनों से लदा ओवरलोड ट्रक बिगड़ा पड़ा है। जिससे लगातार जाम की स्थिति बनी है। हालांकि फूलपुर चौकी की पुलिस ने हटवाने का प्रयास किया। परंतु ओवरलोड ट्रक ना तो आगे जा रहा है ना ही बैंक या मोड़ कर हटाया जा सकता है। ऐसे में आने जाने वाले परेशान हैं दिन भर जाम की स्थिति बनी रहती है।

सीधे प्रवेश
नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र
15% Fee Concession
(भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त)
पहले आओ पहले पाओ
15% Fee Concession

- कम्प्यूटर हार्डवेयर
- डाटा इंट्री ऑपरेटर
- फायर सेफ्टी
- कम्प्यूटर ऑपरेटर (कोपा)
- कम्प्यूटर टीचर ट्रेनिंग
- इलेक्ट्रीशिन
- सीएनसी प्रोग्रामिंग
- इलेक्ट्रिक मैकेनिक
- बेसिक कम्प्यूटिंग
- सीसीए
- वेल्डर
- फिटर
- रेफ्रीजरेटर एवं ए.सी.
- सिक्योरिटी सर्विस

Apply Online: www.nainiiti.com
प्रवेश हेल्पलाइन नं.:
8081180306 ,9415608710 ,8103021873

एमटेक कैम्पस, 'बी' ब्लाक, ए.डी.ए. कालोनी (पुलिस चौकी के पीछे), नैनी, प्रयागराज।
C-41 औद्योगिक थाने के पीछे औद्योगिक क्षेत्र UPSIDC नैनी, प्रयागराज।

बिना परमिट के ही निकल रही बालू कोरगी से जा रही बालू की ट्रकों

आधुनिक समाचार सेवा

दुद्धी/ सोनभद्र। कोरगी बालू साइट से पिछले दो दिनों से बिना परमिट ही बालू लदे ट्रकों को ठीकेदार द्वारा निकाला जा रहा है और तहसील प्रसाशन कान में तेल डाल सोया हुआ है । साइट पर रहने वाले सूत्रों ने बताया कि 31 मई से परमिट का पोर्टल किन्ही कारणों से बन्द है ,अभी गाड़ी को बिना परमिट ही बालू लोड कर साइट से निकाला जा रहा है ,गुरुवार को 80-85 गाड़ी बिना परमिट ही बालू लोड कर नदी से निकाली गई । वहीं शुक्रवार को भी पूरे दिन बिना परमिट का बालू लोड कर नदी से निकाला गया । जिससे कई लाख रुपये की राजस्व की क्षति बताई जा रही है । एक वाहन स्वामी ने बताया कि कोरगी साइट की परमिट पोर्टल 31 तारीख से ही बन्द है केवल डब्लू टी लोडिंग चालू है ।पर्यावरण कार्यकर्ताओं ने

इसे विभागीय मिलिभगत करार दिया है ,जिससे सरकार की जीरो टॉलरेंस की खनन नीतियों पर पलीता लगाया जाना बताया है।इस मामले में ज्येष्ठ खान अधिकारी आशीष कुमार ने अनभिज्ञता जताते हुए कहा कि साइट संचालक ने किश्त नही जमा की होगी तो पोर्टल बंद किया गया होगा ,बिना परमिट गाड़ी नही निकल रही होगी ,फिर भी गाड़ी लोडिंग की जा रही होगी तो पता करता हूं।

31 मई रात्रि 12 बजे से ही जारी नही हो रही परमिटः ग्रामीणों का आरोप है कि 31 मई रात्रि 12 बजे से जब परमिट का पोर्टल बन्द है तो साइट पर किस आधार पर दिन रात बालू का खनन किया जा रहा है जो समझ से परेय है ।

बांदा में पति पत्नी के बीच आपसी विवाद में पत्नी ने मायके वालों के साथ पति को जमकर मारा पीटा

आधुनिक समाचार सेवा

बांदा। बांदा में पति पत्नी के बीच आपसी विवाद हो गया जिसके बाद पत्नी ने अपने मायके पक्ष वालो के साथ पति को जमकर मारा पीटा है और पति के प्राइवेट पार्ट्स में डंडा लट भी डाल दिया है जिससे युवक के प्राइवेट पार्ट्स में गंभीर चोटें आई हैं युवक के परिजनों ने घटना के बाद आनन-फानन में युवक को बांदा जिला अस्पताल पहुंचाया है जहां घायल युवक का इलाज हो रहा है! बांदा जनपद के गिरवां थाना क्षेत्र के मसुरी गांव का है जहां पर आज किसी बात को लेकर के पति पत्नी के बीच आपसी विवाद हो गया जिसके बाद महिला ने अपने मायके पक्ष वाले 5 लोगो के साथ मिलकर अपने ही पति पर हमला कर दिया लाठी-डंडों से पीटकर लहूलुहान कर दिया घायल युवक ने ऐसा आरोप लगाया है मारपीट के दौरान मरणासन्न की स्थिति हो जाने पर पत्नी ने अपने घर वालों के साथ मिलकर अपने ही पति के प्राइवेट पार्ट्स में लठ डाल दिया ऐसा पति का आरोप है खून से लथपथ देख युवक के परिवारजनों ने आनन-फानन मे बांदा जिला अस्पताल पहुंचाया जहां उसका उपचार किया जा रहा है!

एक सप्ताह से ट्रांसफार्मर खराब हो जाने से 50 घर अंधेरे में

आधुनिक समाचार सेवा

डाला,सोनभद्र। विकास खण्ड चोपन अंतर्गत ग्राम पंचायत कोटा के टोला गुरमुरा में पिछले एक सप्ताह से बिजली ट्रांसफॉर्मर खराब रहने के कारण गांव के पचासों परिवारों को अंधेरे में रात गुजारनी पड़ रही है। बिजली विभाग की मनमानी से आक्रोशित ग्रामीणों ने ट्रांसफॉर्मर के समीप विरोध प्रदर्शन किया।

ग्रामीणों ने बताया कि पिपरी डिवीजन के अंतर्गत सबस्टेशन जवारीडाड़ के क्षेत्र गुरमुरा में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के समीप लगा 16केवीए का ट्रांसफार्मर ओवरलोड होने के कारण लगभग एक हफ्ते से जला पड़ा है जिसके कारण गांव की विद्युत प्रवाहित प्रभावित हो गई। बताया कि इस 16केवीए ट्रांसफार्मर से लगभग पचास परिवार के कनेक्शन हैं। ग्रामीणों ने बताया कि इसकी जानकारी बिजली विभाग 1912 पर भी ट्रांसफार्मर जलने का कम्प्लेन किया गया हैं और साथ ही अधिकारियों को भी सूचना देने के बावजूद ट्रांसफर्मर नहीं बदला गया। जिसके कारण इस भीषण गर्मी व पानी की समस्या से लोगों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। वही बिजली विभाग की एक और लापरवाही सामने आई कि लगभग बीस दिन से ऊपर बिजलेंस द्वारा एक 10 केवीए का ट्रांसफार्मर गुरमुरा में

अबाड़ी रोड पर पास किए हो गया परन्तु बिजली विभाग के ठीकेदार के लापरवाही के कारण आज तक नही लग पाया। इस सम्बंध में क्षेत्र के जेई रामलाल ने बताया कि लगभग एक हफ्ते से एक 25केवीए का ट्रांसफार्मर आकर डाला में रखा हुआ हैं जिसे लगाने के बाद 10केवीए का ट्रांसफार्मर खाली होगा वही ट्रांसफार्मर गुरमुरा में लगेगा लेकिन ठीकेदार विपिन सिंह के लापरवाही के कारण 15 दिनों से आया ट्रांसफार्मर नही लग सका जिसके कारण ओवरलोड के चलते गुरमुरा का 16केवीए का ट्रांसफार्मर जल गया और 25केवीए ट्रांसफार्मर जब डाला में लगेगा तभी 10केवीए का ट्रांसफार्मर खाली होगा और वही अबाड़ी रोड पर लगेगा।वही डाला के लाइनमैन ने बताया कि ट्रांसफार्मर तो लगभग बीस दिनों से आकर रखा हैं परन्तु डाला के जेई साहब के तरफ से कोई आदेश न मिलने के कारण नही लग सका और हमलोगों किसी और कार्य मे कार्य करवाते रहे। बहरहाल अधिकारी व ठीकेदार एक दूसरे पर कमियां थोप कर अपना पल्ला झाड़ते नजर आ रहे हैं और वही लगभग एक हफ्ते से उपभोक्ताओं के घरों में अंधेरा कायम है और साथ ही एक तो भीषण गर्मी उसपे पानी की समस्याओं से जूझ रहे हैं गुरमुरा के पचासों घरों के उपभोक्ता परेशान हैं यह बिजली विभाग बड़ी लापरवाही देखने को मिल रही हैं।

डिग्री कालेज के छात्र-छात्राओं ने नुक्कड़ नाटक से समझाए तम्बाकू सेवन के नुकसान

आधुनिक समाचार सेवा

नोएडा 'मैं शपथ लेता हूं कि मैं अपने जीवन में कभी भी किसी भी प्रकार के तम्बाकू उत्पादों का उपयोग या सेवन नहीं करूंगा एवं अपने परिजनों, मित्रों या परिचितों को भी तम्बाकू का सेवन नहीं करने के लिए प्रेरित करुंगा। इसके अलावा मैं अपने पर्यावरण को भी तम्बाकू उत्पादों के उपयोग से होने वाले दुष्प्रभाव से बचाने में योगदान करूंगा।' बुधवार को विश्व तम्बाकू निषेध दिवस के अवसर पर जिला अस्पताल व जनपद के सभी सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर यह शपथ दिलायी गयी। इसके अलावा जिला अस्पताल में राजकीय महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं ने नुक्कड़ नाटक के माध्यम से जनसमुदाय को तम्बाकू सेवन से होने वाले नुकसान के प्रति आगाह किया।

नाटक की शुरुआत 'तम्बाकू हटाना है जीवन बचाना है' के नारे के साथ हुई। नाटक में दिखाया गया कि चार दोस्त बैठे हैं सिगरेट पी रहे हैं, तभी एक और दोस्त आता है सभी उसे सिगरेट ऑफर करते हुए कहते सुट्टा मार यार, कुछ नहीं होगा। वह सभी को सिगरेट न पीने को कहता है और समझाता है कि इससे कैंसर हो सकता, फेफड़े खराब हो सकते हैं। इसे मत पिया करो। तभी सिगरेट पीने वाले एक लड़के को जोर-जोर से खांसी होने लगती है। वह बताता है यह सिगरेट पीने का नतीजा है। नाटक के माध्यम से छात्र-छात्राओं ने तम्बाकू सेवन से होने वाले नुकसान, बीमारियों के बारे में बताया साथ ही बताया कि इस लत को कैसे छोड़ा जा सकता है। तम्बाकू की लत छोड़ने के लिए थ्रीडी फार्मूला बताया। डी- डिले यानि टालना। जब भी तलब लगे तो उसे टालने का प्रयास करें। इसे पांच-सात मिनट तक टालें। दूसरा डी- डिस्ट्रैक्ट यानि ध्यान हटाना। जब भी सिगरेट पीने का विचार आये उससे ध्यान हटाएं, धीरे-धीरे इधर उधर टहलें। तीसरा डी- हाइड्रेट- यानि ज्यादा से ज्यादा पानी पीना। अधिक से अधिक पानी मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार करता है। नाटक के माध्यम से बताया गया कि तम्बाकू लत छोड़ने से तुरंत फायदे होते हैं। उपचार शुरू होते ही रक्त से कार्बन मोनो आक्साइड का लेबल खत्म हो जाता है। दो दिन में खुशबू और स्वाद महसूस होने लगता है।

मगरमच्छ दिखाई देते ही क्षेत्र में मचा हड़कंप

आधुनिक समाचार सेवा

डाला सोनभद्र।वन प्रभाग ओबरा क्षेत्र के अंतर्गत डाला बाड़ी गांव बिती रात में एक मगरमच्छ लगभग चार फीट लंबा मगरमच्छ दिखाई देते ही क्षेत्र में मचा हड़कंप, कई घंटे रेस्क्यू ऑपरेशन के बाद पकड़ा गया मगरमच्छ मंगलवार के बिती रात को लगभग साढ़े दस बजे वन प्रभाग ओबरा क्षेत्र के अंतर्गत डाला बाड़ी श्याम नारायण गोंड के पुराने मकान से लगभग सौ मीटर नाला के तरफ मगरमच्छ दिखाई देते ही क्षेत्र में हड़कंप मच गया यह मामला क्षेत्र में आग तरह फैल गई देखते देखते स्थानियो का भिड़ इकठ्ठा हो गया जिसके उपरांत स्थानीय लोगों ने डायल 112 नम्बर पुलिस सहित वन विभाग को सूचना दी गई । वहीं क्षेत्रीय वन अधिकारी के निर्देशन में मौके पर पहुंची टीम ने स्थानियो लोगों के मदद से लगभग साढ़े तीन घंटे रेस्क्यू ऑपरेशन के बाद लगभग तीन से चार फीट लंबा मगरमच्छ पड़ लिया गया जिसके बाद सोन नदी के सुरक्षित स्थान पर मगरमच्छ छोड़ दिया गया।

रंगारंग आतिशबाजी के बीच महादेव कप-2023 का हुआ आगाज

उद्घाटन मुकाबले में विजयगढ़ एकादश ने हर हर महादेव को दी पटखनी

आधुनिक समाचार सेवा

सोनभद्र । एवरग्रीन क्रिकेट क्लब की ओर से आयोजित प्रथम रात्रिकालीन कैनवस टी-10 क्रिकेट प्रतियोगिता महादेव कप-2023 का शुक्रवार को घुवास कॉलोनी में रंगारंग आतिशबाजी के बीच आगाज हुआ। मुख्य अतिथि सदर ब्लॉक प्रमुख अजीत रावत, पंचशील मल्टी स्पेशलिटी हॉस्पिटल के एमडी पवित मौर्य, पूर्व सभासद अमन वर्मा, सभासद ओमप्रकाश यादव ने संयुक्त रूप फीता काटकर और खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर प्रतियोगिता का शुभारंभ किया।

इस दौरान सदर ब्लाक प्रमुख अजीत रावत ने कहा कि क्रिकेट लोकप्रिय खेलों में शुमार हो चुका है। नियमित रूप से खेलने से मानसिक और शारीरिक वृद्धि को प्रोत्साहन मिलता है।

उद्घाटन मुकाबला विजयगढ़ एकादश और हर हर महादेव के बीच खेला गया। टॉस जीतकर हर हर महादेव के कप्तान ने टॉस जीतकर

विजयगढ़ एकादश को बल्लेबाजी के लिए आमंत्रित किया। विजयगढ़ एकादश की टीम ने टाइगर के शानदार 35 रनों की बदौलत निर्धारित 10 ओवर में 72 रनों का पहाड़ का स्कोर खड़ा किया। जवाब में उतरी हर हर महादेव की टीम ने निर्धारित 10 ओवरों में 59 रन ही बना सकी। विजयगढ़ एकादश के टाइगर को मैन आफ द मैच घोषित किया गया। वहीं दूसरा मुकाबला हाईडिल क्रिकेट क्लब और इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी के बीच खेला गया जिसमें इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी ने हाईडिल को हराकर अगले चक्र में प्रवेश किया। जिसमें इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी के हरफनमौला प्रदर्शन 16 रन और तीन विकेट के लिए मैन ऑफ द मैच घोषित किया गया। आज के मैच में मेराज शाहिद, संतोष सोनी और अनुपम पाण्डेय निर्णायक की भूमिका में रहे, वहीं सत्यम पांडेय और आनंद मौर्या स्कोरर रहे। कौस्तुभम मिश्रा ने अपनी कमेंट्री से दर्शकों का मनोरंजन किया। कमेटी के संरक्षक आनन्द कुमार चौबे ने अतिथियों, खिलाड़ियों और दर्शकों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

इस दौरान महादेव कमेटी के अध्यक्ष डॉ0 अनिल पासवान, कोषाध्यक्ष सूर्या, आशीष श्रीवास्तव, भाजपा नगर अध्यक्ष बलराम सोनी, अभिषेक श्रीवास्तव, मेराज वाहिद, मेराज खालिद, पंकज चौबे, अरुण आर्या, अजय मौर्या, राजू, सोनू, राजाराम यादव, अमित, अंकित, जय सहित बड़ी संख्या में दर्शकगण मौजूद रहे।

वैध लीजो की आड़ में अवैध खनन का अड्डा बना मैहर का बाठिया गांव

बरसात आने से पहले हैवी ब्लास्टिंग कर हजारों लाखों टन पत्थर किया जा रहा स्टाक भंडारण

आधुनिक समाचार सेवा

मैहर। नादन देहात क्षेत्र ग्राम पंचायत मठिया वेद लीज की आड़ में किया जा रहा अवैध उत्खनन बरसात आने से पहले हजारों लाखों तन पत्थर किया जा रहा भंडारण वर्तमान समय में मैहर क्षेत्र का बाठिया बरहिया इलाका अवैध उत्खनन के सारे रिकॉर्ड तोड़ डालने पर आमादा है सबसे मजेदार बात यह है कि यहां पर अवैध खनन का सारा कारोबार वही लोग कर रहे हैं जिन लोगों ने वैध लीजो का चोला और रखा है कहने को तो इनके पास शासन द्वारा स्वीकृत लीजे हैं लेकिन हकीकत यह है कि ये लीजे दिखाने मात्र के लिए हैं और उत्खनन कार्य इन्हीं लीजो की

आड़ में पूरे क्षेत्र में दिलेरी से किया जा रहा है मैहर के बाठिया बरहिया क्षेत्र में उच्च गुणवत्ता का चूना पत्थर प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं यह लीज धारी फिटपास तो अपनी स्वीकृत खदानों से काटते हैं पर माइनिंग और सप्लाई का काम पूरे इलाके में अवैध रूप से करते हैं यदि इनके लीजो की विधिवत जांच की जाए तो सारी सच्चाई सामने आ जाए चोरी जालसाजी का पूरा पत्थर जिले के एक प्रसिद्ध उद्योगपति के सीमेंट प्लांट में खफाया जा रहा है ज्ञात हो कि इस उद्योग में तीन पांच के इस तरह की गतिविधियों को अंजाम देने के लिए कुछ खास गुर्गे कुंडली मार कर बैठे हैं और कंपनी प्रबंधन को दिग्भ्रमित कर अपनी काली करतूतों को बखूबी अंजाम दे रहे हैं शासन-प्रशासन एवं माइनिंग से संबंधित केंद्र एवं राज्य के भारतीय खान ब्यूरो तथा भौमिक एवं खनिकर्म जैसे विभाग यह सब देखते हुए भी ना जाने किन मलाईदार या राजनैतिक रसूख वाले कारणों से आंखों पर पट्टी बांधकर बैठे हैं यह एक अति संवेदनशील तथा गंभीर मुद्दा है जिस पर तत्काल कार्यवाही की आवश्यकता है

12 मई को सतना रामनगर आगमन पर मुख्यमंत्री जी को लिखित जानकारी दी गई और समस्या से अवगत कराया गया मुख्यमंत्री जी द्वारा आश्वासन दिया गया की जल्द जांच करा कर कार्यवाही की जाएगी लेकिन आज दिनांक तक अवैध उत्खनन प्रदूषण एवं ओवरलोड पर कोई कार्यवाही नहीं की गई यदि सतना कलेक्टर जी इस ओर ध्यान देंगे तो ग्राम बाठिया में हो रहे अवैध खनन को रुकवाया जा सकता है जिससे ग्रामीणों को राहत मिल सकती है।

बस व कार की टक्कर में सभी बचे बाल बाल

आधुनिक समाचार सेवा

डाला,सोनभद्र। चोपन थाना क्षेत्र गुरमुरा में एक प्राइवेट बस व कार आपस मे टकराकर बस डिवादर पर चढ़ गई गनीमत रही कि कोई बड़ी दुर्घटना नही घटी प्राप्त जानकारी के अनुसार दुद्धी से राबट्र्सगंज जा रही और से लगभग एक किलोमीटर आगे एक कार से अचानक टकरा कर डिवाइडर के ऊपर बीचोबीच चढ़ गई। बस के सवारियों को हल्का फुल्का ही चोट आई। बताया जा रहा कि बस सही जा रही थी कि अचानक एकाएक कार सवार बस से ओवरटेक करने के चक्कर मे साइड से जा सटी बस कार को बचाने के चक्कर मे अनियंत्रित होकर डिवाइडर पर बीचोबीच चढ़ गई गनीमत रही कि कोई बड़ी दुर्घटना नही वही लोगों का कहना कि आज बड़ी दुर्घटना हो जाती मगर टल गई सवारियों को हल्का फुल्का ही चोट आई जो दूसरी वाहन से अपने गन्तव्य को चले गए। वही दोनों वाहनों के चालक मौके से फरार हो गए।

जब चोरी की सूचना जनहित में आई नही तो दो चोर कहाँ से सामान के था पकड़े गए- जाने सच

आधुनिक समाचार सेवा

डाला सोनभद्र- स्थानीय डाला पुलिस चौकी क्षेत्र के अंतर्गत गनीराम अग्रहरी पुत्र सहतु निवासी बाडी डाला शाराद पेट्रोल पम्प के पास के घर चोरी की घटना इस तरह स्थानीय चौकी से छुपाई गयी व जनहित में जारी तक नही हो पाई ,जिससे प्रशासन पर सवालिया निशान खड़े हो जाय। डाला में चोरी की समस्या आम तौर पर ज्यादा बढ़ने लगी है। इसमें कहीं न कही प्रशासन की निरंकुश विचारधारा है। उसी क्रम में जब चोरी की शिकायत जनहित में नही आने दिया गया तो आज चोरी के पर्दाफास कैसे हो हो गया। फिर प्रशासन ने कैसे जाना कि चोरी हुई भी थी।

उसी क्रम में चौकी का चक्कर लगाने वाले परिवार के दूसरी तहरीर के आधार पर बिते 02/06/23 शुक्रवार को थाने में मु0अ0स0 107/2023 धारा 457,380 के तहत मुकदमा दर्ज कर लिया गया जिसके उपरांत पुलिस अधीक्षक सोनभद्र, अपर पुलिस अधीक्षक (मुख्यालय) व पुलिस उपाधीक्षक नगर के निर्देशन में व प्रभारी निरीक्षक चोपन के कुशल मार्ग दर्शन में उक्त घटना से सम्बन्धित

अभियुक्तगणो की गिरफ्तारी एवं बरामदगी हेतु प्राप्त निर्देश के क्रम में शनिवार 03 जून 2023 सुबह छः बजे सेवा सदन मोड से चेकिंग के दौरान संजीव रावत उर्फ सोनू उम्र लगभग 28 वर्ष पुत्र सुखदेव निवासी बाड़ी डाला, कोर्शीद आलम उम्र लगभग 24 वर्ष पुत्र स्व0 समसुद्दीन इदरीशी निवासी गोसिया नगर सेवा सदन के पीछे को गिरफ्तार करते हुए उनके कब्जे से 1. 02 अदल पीतल का परात की जिसका वजन 02 किलो 600 ग्राम था और 02 अदद कमर की करधन चांदी का जिसका वजन 500 ग्राम जिसके साथ 02 अदद एंड्रायड मोबाइल फोन बरामद किया गया

उपरोक्त विवरण अभियोग- मु0अ0सं0- 107/2023 धारा- 457,380,411 भादवि थाना चोपन सोनभद्र किया गया और वहीं अभियुक्त गण का पूर्व आपराधिक इतिहास- में अभियुक्त संजीव रावत उर्फ सोनू - 1.मु0अ0सं0- 199/2022 धारा- 380,411 भादवि थाना चोपन दूसरा अभियुक्त कोर्शीद आलम- 1.मु0अ0सं0- 160/2021 धारा- 380,411 भादवि थाना चोपन रहा है इस टीम में प्रभारी निरीक्षक विश्वनाथ प्रताप सिंह प्रभारी निरीक्षक, डाला चौकी इंचार्ज राजेश प्रताप सिंह ,आरक्षी दीपक कुमार, आरक्षी मुकेश कुमार, आरक्षी आनन्द कुमार गौड शामिल रहे।

टूटे नम्बर प्लेट पर कार्यवाही तो बिना नम्बर वाले पर क्यों नही

आधुनिक समाचार सेवा

डाला सोनभद्र । स्थानीय डाला चौकी अंतर्गत आकस्मिक चेकिंग के दौरान मोटरसाइकिल का नंबर प्लेट टूटा होने के कारण , उक्त मोटरसाइकिल को जप्त कर की गई कार्यवाही। नगर पंचायत - डाला बजार निवासी इम्तियाज अपने डाला बाजार स्थित दुकान से लगभग 7.30 बजे शाम को डाला चढ़ाई पेट्रोल टंकी पर पेट्रोल भरवाने जा रहा था कि गस्त के दौरान सीओ सदर, थानाध्यक्ष - चोपन , व चौकी इंचार्ज डाला द्वारा जांच में सम्बन्धित मोटरसाइकिल पर नम्बर प्लेट टूटा पाए जाने व मौके पर कागजात न होने के कारण उसे चौकी परिसर में खड़ा कर कार्यवाही कर दी गयी।आपको बताता चालू की डाला में ऐसे

बहुत से मोटरसाइकिल है जो अक्सर चौकी परिसर में खड़ा रहते है। जिसको चौकी इंचार्ज महोदय देखते रहते है। फिर कार्यवाही क्यों नही होती। या कानून की तहत विशेष सुबिधा उपलब्ध कराई जा रही है।

अपना दल (एस) की राष्ट्रीय अध्यक्ष व केंद्रीय मंत्री अनुप्रिया ने संसदीय जनसंपर्क कार्यालय में जनसंवाद व कार्यकर्ताओं से मुलाकात की

आधुनिक समाचार सेवा

मीरजापुर। अपना दल (एस) की राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केंद्रीय वाणिज्य व उद्योग राज्य मंत्री श्रीमती अनुप्रिया पटेल ने मंगलवार को जनपद के सरदार पटेल चौराहा स्थित संसदीय जनसंपर्क कार्यालय में कार्यकर्ताओं से मुलाकात की एवं जनसंवाद के दौरान आए आगंतुकों से मुलाक़ात कर उनकी समस्याएँ सुनी तथा संबंधित अधिकारियों से बात कर उनकी समस्याओं के तत्काल निस्तारण का निर्देश दिया। इस दौरान जिला अध्यक्ष इंजीनियर राम लौटन बिंद, पूर्व दर्जा प्राप्त मंत्री रेखा वर्मा, पूर्व दर्जा प्राप्त राज्यमंत्री राम लखन पटेल, युवा मंच जिला अध्यक्ष उदय पटेल, जिला उपाध्यक्ष राजकुमार पटेल, नगर विधानसभा अध्यक्ष विजय शंकर केसरी, विधानसभा उपाध्यक्ष कुलदीप पटेल, नगर विधानसभा महासचिव नमिता केसरवानी, नगर महिला मंच अध्यक्ष श्रीमती अर्चना अग्रहरी, जोन अध्यक्ष अखिलेश बिंद, जोन अध्यक्ष आलोक पटेल,जोन अध्यक्ष रतन पटेल, जोन अध्यक्ष विंध्याचल डॉ श्याम कुशवाहा, अजय कुमार केसरवानी, दुर्गा प्रसाद केसरवानी, मुस्तफा जी पाशा, वीरजन यादव, आमिर खान अर्जुन सोनकर, श्रीमती गीता केसरवानी, श्रीमती मीना मोदनवाल, श्रीमती शिल्पी विश्वकर्मा, श्रीमती पारिया खान, श्रीमती शांति विश्वकर्मा, श्रीमती रीता सिंह, श्रीमती रुबी सिंह शेषमणि बिंद, विशंभर पांडे, शिवम अग्रहरी, राजाराम बिंद, मनोज बिंद, रामकुमार बिंद, रमाशंकर गुप्ता सहित आदि लोग उपस्थित रहें। उक्त आशय की जानकारी जिला मीडिया प्रभारी शंकर सिंह चौहान ने दी।

सम्पादकीय

अपनी सीमा समझें राज्य

पूर्वोत्तर के दो राज्यों असम और मिजोरम के बीच सीमा विवाद को लेकर जिस तरह की हिंसक झड़प सोमवार को हुई, वह न केवल इन दोनों राज्यों की सरकारों के लिए बल्कि पूरे देश के लिए चिंता की बात है। आखिरकार गृह मंत्री अमित शाह के दखल देने के बाद स्थिति काबू में आई। उन्होंने दोनों राज्यों से इस मामले में यथास्थिति बनाए रखने की अपील की है। साथ ही, इस बात को भी समझना होगा कि दोनों राज्यों के बीच सीमा विवाद बहुत पुराना है। इसकी जड़ें औपनिवेशिक शासन तक जाती हैं। तब मिजोरम असम का एक जिला था और उसे लुशाई हिल्स के रूप में जाना जाता था। विवाद के मूल में दो नोटिफिकेशन हैं, एक 1875 का जिसने लुशाई हिल्स को कछार के मैदान से अलग रेखांकित किया। दूसरा 1933 का, जो लुशाई हिल्स और मणिपुर के बीच सीमा निर्धारित करता है। मिजोरम का आग्रह है कि राज्य की सीमा तय करने के लिए 1933 के नोटिफिकेशन को आधार माना जाए जबकि असम 1875 के नोटिफिकेशन को आधार मानने की बात करता है। खासकर 1987 में मिजोरम के एक अलग राज्य बनने के बाद से यह विवाद और गहरा होता गया। लेकिन दूसरे राज्यों के बीच अलग-अलग मसलों को लेकर विवाद होते रहते हैं। कई राज्यों के बीच सीमा विवाद भी हैं। ये विवाद कभी-कभार गंभीर तनाव का कारण भी बन जाते हैं। लेकिन जिस तरह की हिंसा असम और मिजोरम के पुलिस बलों के बीच हुई है, वह किसी भी सूरत में स्वीकार्य नहीं हो सकती। दोनों राज्य सरकारों को ही नहीं केंद्र सरकार की तमाम एजेंसियों को भी इस बात की जानकारी थी कि कछार और कोलासिब जिलों की सीमा पर तनाव के हालात बन रहे हैं। दो दिन पहले केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह पूर्वोत्तर के दौरे पर गए थे और मुख्यमंत्रियों के साथ बैठक में सीमा विवाद पर भी बातचीत हुई थी। इस सबके बावजूद ऐसी झड़प हुई। अब दोनों राज्यों की सरकारें एक-दूसरे पर दोषारोपण करते हुए परस्पर विरोधी दावे कर रही हैं, जिनकी सचाई जांची-परखी जा सकती है। जहां तक सवाल सीमा संबंधी विवाद का है तो देश के नियम कानून और संविधान के मुताबिक तमाम मंच उपलब्ध है, जहां दोनों सरकारें अपना पक्ष लेकर जा सकती हैं। मगर अपने-अपने दावों को दूसरे पक्ष से इस तरह मनवाने और इन कोशिशों में सशस्त्र पुलिस बलों को शामिल करने की इजाजत नहीं दी जा सकती। विवाद को उपयुक्त ढंग से हल करने की प्रक्रिया तो अविलंब शुरू होनी ही चाहिए, सोमवार को हुई झड़प की निष्पक्ष और विश्वसनीय जांच भी होनी चाहिए। यह पता लगाया जाना चाहिए कि इस हिंसा के दोषी कौन है। जिन लोगों ने अपने संवैधानिक दायित्वों का निर्वाह नहीं किया है, उनके खिलाफ समुचित कार्रवाई होनी चाहिए। इससे यह संदेश दिया जा सकेगा कि इस तरह की गलती आइंदे बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

हिना कौसर के एहसास हिना की कलम से

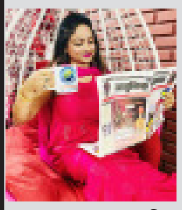

हां सभी हमदर्द हैं मेरे,
बस दर्द में नही कोई मेरे,
हां हमराज़ हैं सभी मेरे,
बस कोई राजदार नहीं मेरे,
हां सभी साथी हैं मेरे ,
बस कोई साथ नहीं मेरे,
रिश्ता इतना गहरा के पल पल के दोस्त मेरे,
बस एक पल को कोई साथ नहीं मेरे,
बातें तो होती हैं रोज़ मेरी,
बस मेरी हर बात में कोई नहीं मेरे,
खुशियों के हैं सभी साझदार मेरे,
बस मेरे ग़म में नही कोई रिश्ता मेरा,
व्हाट्सएप में रोज होती हैं बातें मेरी,
बस मेरी खैरियत से परे हैं मेरे,
हजारों मैसेज और बातें तो करते हैं लोग,
बस हाल ए दिल से वो परे हैं मेरे...

एनडीए 25 साल का होने जा रहा है, भारतीय राजनीतिक इतिहास का यह बहुत बड़ा घटनाक्रम है

केंद्र में मोदी सरकार का नेतृत्व कर रही भाजपा के नेतृत्व वाला राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) अपनी स्थापना के 25 वर्ष पूरे करने जा रहा है जोकि बड़ी उपलब्धि है। देश के राजनीतिक इतिहास में आज तक बहुत से गठबंधन बने और टूटे लेकिन एनडीए 25 वर्षों से अपने अस्तित्व में बना हुआ है और वर्तमान में केंद्र की सरकार के अलावा 15 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में इसकी सरकारें हैं। दरअसल, 90 के दशक में जब भाजपा को राजनीतिक रूप से अछूत माना जाता था और कोई भी दल मुस्लिम मतों को गंवाने के डर से भाजपा के साथ गठबंधन करने से परहेज करता था, उस समय 1998 में अटल बिहारी वाजपेयी ने क्षेत्रीय दलों को शामिल कर जो गठबंधन बनाया था उसे एनडीए नाम दिया गया। हम आपको याद दिला दें कि 1996 के लोकसभा चुनावों में भाजपा सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी थी। तत्कालीन राष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा ने भाजपा नेता अटल बिहारी वाजपेयी को सबसे बड़े दल का नेता होने के नाते पहले सरकार बनाने का अवसर भी दिया लेकिन भाजपा के पास शिवसेना और शिरोमणि अकाली दल के अलावा किसी अन्य दल का समर्थन नहीं था जिसके चलते अटलजी की सरकार मात्र 13 दिनों में ही गिर गयी थी।

1996 के इस अनुभव को देखते हुए भाजपा ने क्षेत्रीय दलों के साथ संवाद का काम शुरू किया और अपने मूल मुद्दों को किनारे रखते हुए एक साझा न्यूनतम कार्यक्रम के तहत राष्ट्रीय स्तर पर गठबंधन बनाने की कवायद शुरू की। जल्द ही यह कवायद रंग लाई और 1998 के लोकसभा चुनावों में कांग्रेस को टक्कर देने के लिए अटल बिहारी वाजपेयी ने उत्तर-दक्षिण-पूरब-पश्चिम के कई दलों का ऐसा संगम बनाया कि कांग्रेस और तीसरे मोर्चे का सफाया हो गया और तेलुगू देशम पार्टी के बाहरी समर्थन से केंद्र में अटलजी की सरकार बन गयी। हालांकि एनडीए सहयोगी अन्नाद्रमुक की नेता जयललिता की ओर से समर्थन वापस लिये जाने के कारण अटलजी की सरकार 13 महीने में ही गिर गयी लेकिन 1999 में हुए लोकसभा चुनावों में एनडीए एक बार फिर सत्ता में पहले से ज्यादा ताकत के साथ लौटा। हालांकि निर्धारित अवधि से छह महीने पहले कराये गये लोकसभा चुनावों में एनडीए की हार हुई और कांग्रेस के नेतृत्व वाला संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (यूपीए) सत्ता में आया। यूपीए ने 2004 से 2014 तक राज किया। उसके बाद मई 2014 में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में एनडीए एक बार फिर सत्ता में लौटा और तबसे केंद्र तथा विभिन्न राज्यों में इसकी सरकार चल रही है।

दरअसल एनडीए 25 साल पूरे कर रहा है सिर्फ यही इसकी उपलब्धि नहीं है। एनडीए की उपलब्धि यह भी है कि इसने सबसे पहले भारत में उस मिथक को तोड़ा था कि गठबंधन सरकारें अपना कार्यकाल पूरा नहीं कर सकतीं। एनडीए की सफलता देख कर ही कांग्रेस का भी अहंकार टूटा था। देवेगौड़ा और गुजराल की सरकार से समर्थन वापस लेकर उन्हें गिराने वाली कांग्रेस कभी क्षेत्रीय दलों को अपने साथ नहीं बिठाती थी लेकिन 2004 के लोकसभा चुनावों से पहले शिमला में हुई कांग्रेस की बैठक में यूपीए के गठन का निर्णय लिया गया और वामदलों से लेकर अन्य कई दलों को इसमें शामिल किया गया। एनडीए के उतार-चढ़ावों की बात करें तो इसमें सबसे पहले शामिल होने वाली शिवसेना और शिरोमणि अकाली दल ने 2019 के लोकसभा चुनावों के बाद अलग-अलग कारणों से इस गठबंधन को छोड़ दिया। हालांकि शिवसेना जबसे एकनाथ शिंदे के हाथ में आई

है तबसे इसकी वापसी एनडीए में हो गयी है। एनडीए की शुरुआत से ही घटक रही समता पार्टी जोकि बाद में जनता दल युनाइटेड कहलाई, वह भी एनडीए में आती जाती रहती है। फिलहाल वह इस गठबंधन से बाहर है। एनडीए के स्वरूप की बात करें तो इसके तहत गठबंधन नेताओं की जो समिति बनी थी वह सीटों और पदों के बंटवारे से लेकर संसद में उठाये जाने वाले मुद्दों और विरोधियों के हमलों से बचाव की रणनीति बनाती है। अतीत में कई बार कुछ निर्णयों में विचारधाराएं आड़े आईं तो बहुमत के आधार पर फैसले भी लिये गये। एनडीए के संयोजकों की बात करें तो अटल बिहारी वाजपेयी इसके संस्थापक संयोजक थे। एनडीए की कमान भाजपा में अटलजी के अलावा लालकृष्ण आडवाणी के पास वर्किंग चेयरमैन के नाते रही तो कुछ समय तक भाजपा नेता जसवंत सिंह ने भी इसका नेतृत्व किया। 2014 से एनडीए के चेयरमैन अमित शाह हैं जबकि इसके शीर्ष नेता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हैं। पूर्व रक्षा मंत्री जॉर्ज फर्नांडिस ने भी 2008 तक एनडीए का इसके संयोजक के नाते नेतृत्व किया, इसके बाद जदयू के तत्कालीन अध्यक्ष शरद यादव के हाथ में एनडीए संयोजक पद की कमान आई। लेकिन जून 2013 में जब जदयू ने एनडीए गठबंधन छोड़ा तो शरद यादव ने भी संयोजक पद छोड़ दिया। तब आंध्र प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री और टीडीपी नेता चंद्रबाबू नायडू को एनडीए का संयोजक बनाया गया। 2018 में चंद्रबाबू ने भी एनडीए छोड़ा और तबसे इसके संयोजक का पद खाली पड़ा हुआ है। एनडीए के कुछ घटक कई बार यह मांग कर चुके हैं कि सहयोगी दलों के बीच बेहतर सामंजस्य बनाये रखने के लिए एनडीए संयोजक की नियुक्ति की जानी चाहिए। केंद्रीय स्तर पर एनडीए में शामिल दलों की बात करें तो इसमें भाजपा के अलावा शिवसेना, आरएलजेपी, अपना दल (सोनेलाल), एनपीपी, एनडीपीपी, आजसू, एसकेएम, एमएनएफ, एनपीएफ, अन्नाद्रमुक, आरपीआई (ए), एजीपी, पीएमके, टीएमसी (मूपनार) और यूपीपीएल शामिल हैं। इसके अलावा उत्तर प्रदेश में निषाद राज पार्टी और कुछ अन्य क्षेत्रीय दलों का भाजपा को समर्थन हासिल है। इसी तरह की स्थिति कुछ अन्य राज्यों में भी है। इसके अलावा 2016 में पूर्वोत्तर में एनडीए के तहत बनाये गये नॉर्थ ईस्ट डेमोक्रेटिक एलायंस (र्ड्डे) में भाजपा के अलावा कई क्षेत्रीय दल शामिल हैं। यह गठबंधन पूर्वोत्तर के अधिकांश राज्यों में सरकार चला रहा है। एनडीए की सफलताओं की बात करें तो इसने 1998, 1999, 2014 और 2019 का लोकसभा चुनाव जीतकर अटल बिहारी वाजपेयी और नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र में सिर्फ सरकार ही नहीं दी है बल्कि तीन बार उसके राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार- डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम, रामनाथ कोविंद और द्रौपदी मुर्मू जीती हैं तो इसके अलावा तीन बार ही एनडीए के उपराष्ट्रपति उम्मीदवार- भैरों सिंह शेखावत, एम. वेंकैया नायडू और जगदीप धनखड़ की जीत हुई। एनडीए ने लालकृष्ण आडवाणी के रूप में देश को एक उपप्रधानमंत्री भी दिया है। अटलजी और मोदी के नेतृत्व में केंद्र में एनडीए की जीत में फर्क यह रहा कि अटलजी को जहां दोनों बार गठबंधन की सरकार चलानी पड़ी वहीं मोदी के नेतृत्व में भाजपा ने अपने दम पर बहुमत हासिल किया लेकिन गठबंधन धर्म निभाते हुए सहयोगी दलों को भी मंत्रिमंडल में स्थान दिया। भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए शासित राज्यों के मुख्यमंत्रियों की बात करें तो अरुणाचल प्रदेश में पेमा खांडू, असम में हिमंत बिस्व सरमा, गोवा में प्रमोद सावंत, गुजरात में भूपेंद्र पटेल, हरियाणा में मनोहर लाल खट्टर, मध्य प्रदेश में शिवराज सिंह चौहान, महाराष्ट्र में एकनाथ शिंदे, मणिपुर में एन. बिरेन सिंह, मेघालय में कोनराड संगमा, नगालैंड में नेफियू रियो, पुडुचेरी में एन. रंगासामी, सिक्किम में प्रेम सिंह तमांग, त्रिपुरा में माणिक साहा, उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ और उत्तराखण्ड में पुष्कर सिंह धामी शामिल हैं। इसके अलावा देश के विभिन्न राज्यों के नगर निकायों में भी एनडीए शासन कर रहा है। देखा जाये तो भाजपा के नेतृत्व वाला एनडीए देश में केंद्र की सत्ता के अलावा अब तक सिर्फ तीन राज्यों- केरल, तेलंगाना और पश्चिम बंगाल को छोड़कर बाकी सभी राज्यों में सरकार बना चुका है। बहरहाल, साल 2024 के लोकसभा चुनावों के लिए एनडीए अपने आप को एक बार फिर तैयार करने में जुटा है। माना जा सकता है कि अपनी स्थापना की रजत जयंती मनाने जा रहे एनडीए में कुछ और दल भी शामिल हो सकते हैं। आने वाले दिनों में इस गठबंधन की अधिक बैठकें भी देखने को मिल सकती हैं क्योंकि एनडीए की अपेक्षा 19 दलों को साथ लेकर कांग्रेस के नेतृत्व वाले यूपीए ने संसद के बजट सत्र में मोदी सरकार को काम नहीं करने दिया, संसद के नये भवन के उद्घाटन कार्यक्रम का बहिष्कार किया और अब पटना में 12 जून को सभी विपक्षी दलों की एक बैठक कर आगे की कार्ययोजना बनाई जायेगी। ऐसे में सिर्फ भाजपा को ही नहीं एनडीए को भी पूरी तरह से सक्रिय होने की जरूरत है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भाजपा शासित राज्यों के मुख्यमंत्रियों और उपमुख्यमंत्रियों की बैठक में निर्देश दिये भी हैं कि राज्य सरकारें क्षेत्रीय आकांक्षाओं को पूरा करने की दिशा में तेजी से कदम उठायें।

विपक्ष ने देश की संसद से ज्यादा अपनी एकजुटता को तवज्जो दी

संविधान निर्माताओं ने संसद भवन को भारतीय लोकतंत्र का पवित्र स्थान मानते हुए जिस संविधान का गठन किया था, उस वक्त उन्हें भी इस बात का अंदाजा नहीं होगा कि यह भवन देश के अमन और तरक्की के रास्ते पर चलते हुए विश्व में लोकतांत्रिक आदर्शों पर चलने की बजाय राजनीति का शर्मसार करने वाला अखाड़ा बन जाएगा। पहले कांग्रेस के वरिष्ठ नेता राहुल गांधी की सदस्यता के विवाद और अब संसद की नई इमारत सत्ता पक्ष और विपक्ष में फजीहत का कारण बन गई है। सत्तापक्ष और विपक्ष में नए संसद भवन के उद्घाटन को लेकर आई कड़ुवाहट से विश्व में भारत की छवि प्रभावित हो रही है। सत्ता पक्ष और विपक्ष में तीखी टकराहट का यह पहला मामला नहीं है। इससे पहले विपक्षी दलों पर ईडी और सीबीआई की कार्रवाई के कारण भी ऐसा नजारा देखने को मिला था। हालांकि इस मुद्दे पर विपक्ष को सुप्रीम कोर्ट से राहत नहीं मिल सकी, किन्तु भाजपा और विपक्षी पार्टियों में तल्खी और बढ़ गई। नये संसद भवन को लेकर सियासी घमासान छिड़ा हुआ है जो कम होने का नाम नहीं ले रहा है। विपक्ष ने नई संसद के उद्घाटन समारोह का बहिष्कार किया, इस बहिष्कार में भी कई दलों में एकता दिख रही है, दरअसल विपक्ष अलग-अलग मुद्दों के जरिए 2024 के चुनाव में एकजुट होकर बीजेपी की ओर चुनावी तीर चलाना चाहता है। यह नया संसद भवन सरकार और विपक्ष के बीच कटुता की एक नई इमारत के रूप में खुल रहा है। ऐसे संकेत हैं कि 2024 के लोकसभा चुनाव तक यह दरार और चौड़ी हो सकती है। कांग्रेस के अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और राहुल गांधी ने केंद्र सरकार पर निशाना साधा है। समूचा विपक्ष राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू से उद्घाटन कराने पर जोर देते हुए समारोह के बहिष्कार पर अड़ा रहा। खरगे ने प्रधानमंत्री मोदी को कहा कि आपकी सरकार के अहंकार ने संसदीय प्रणाली को ध्वस्त कर दिया है। महामहिम राष्ट्रपति का पद संसद का प्रथम अंग है। सरकार के अहंकार ने संसदीय प्रणाली को ध्वस्त कर दिया है। राहुल गांधी ने इस मुद्दे पर ट्वीट किया कि 'नए संसद भवन का राष्ट्रपति को उद्घाटन करना चाहिए, न कि पीएम को।' गृह मंत्री अमित शाह ने विपक्ष के बहिष्कार को लेकर कहा कि आप इसे राजनीति के साथ मत जोड़िये। सब अपने विवेक के हिसाब से काम

कर रहे हैं। भाजपा ने भी कांग्रेस और दूसरे राज्यों की सरकारों के समय हुए ऐसे उद्घाटनों की फेहरिस्त गिनाई है, जिनमें राष्ट्रपति या राज्यपाल को आमंत्रित नहीं किया गया। नए संसद भवन का पीएम मोदी से उद्घाटन को लेकर कांग्रेस और समाजवादी पार्टी समेत 19 विपक्षी दलों ने बहिष्कार किया। सभी दल अपनी सुविधा अनुसार और वोटों के समीकरण के आधार पर विरोध-समर्थन कर रहे थे। सभी की निगाहें 2024 के लोकसभा चुनावों के साथ-साथ आगामी राज्य चुनावों पर भी टिकी हैं। कांग्रेस को एससी, एसटी और पिछड़ों को लुभा कर 2024 में अच्छा प्रदर्शन करने की उम्मीद है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह उनका मजबूत वोट बैंक रहा है और कर्नाटक में भी यह उनके पक्ष में गया। माना जा रहा है कि इसलिए बहिष्कार की राजनीति में यह मोड़ आया।

नए संसद भवन के बहिष्कार के मुद्दे पर कांग्रेस, टीएमसी, समाजवादी पार्टी (सपा) और आप सहित 19 विपक्षी दलों ने हाथ मिलाने का फैसला किया है। वैसे इस बात पर भी आश्चर्य नहीं कि तेलुगु देशम पार्टी, वाईएसआर कांग्रेस और बीजू जनता दल जैसे अन्य विपक्षी दलों ने इस उद्घाटन समारोह में हिस्सा लिया। ये पार्टियां काफी लंबे समय से बीजेपी के करीब चल रही हैं और टीडीपी निश्चित रूप से राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) में फिर से शामिल होने की उम्मीद में बीजेपी के करीब आ रही है। नए भवन के उद्घाटन से पहले एक छोटा-सा हवन किया गया और इस पर भी विपक्षी पार्टी नेताओं द्वारा आपत्ति जताई जा रही है। भाजपा निश्चित तौर पर हवन के विरोध को चुनावी मुद्दा बनाने से नहीं चूकेगी। राष्ट्रवाद और राष्ट्रहित के मुद्दों पर कांग्रेस, कुछ अन्य विपक्षी दलों की तरह बैकफुट पर रही है। कम से कम लोकसभा चुनाव के लिए तो बीजेपी और प्रधानमंत्री इसे अवश्य ही मुद्दा बनाएंगे। विपक्षी दल इस मुद्दे पर केंद्र की भाजपा सरकार का पुरजोर तरीके से विरोध कर रहे हैं। विपक्षी दलों के विरोध से इस बात की ज्यादा संभावना नहीं है कि सभी एकजुट होकर आगामी लोकसभा और राज्यों में होने वाले विधानसभाओं के चुनाव मिल कर लड़ेंगे। संसद भवन से पहले राहुल गांधी की सदस्यता के मामले में विपक्षी दल एकता नहीं दिखा सके। भाजपा का विरोध करने मात्र से विपक्षी एकता की संभावना क्षीण है। विपक्षी दल विगत कई वर्षों से भाजपा का विरोध करते आ रहे हैं, किन्तु पूर्व में हुए चुनावों में भी उनका विरोध एकता को सिरे से नहीं चढ़ा सका। केंद्र सरकार द्वारा अध्यादेश जारी करके दिल्ली की अरविन्द केजरीवाल सरकार के अधिकारों को सीमित करने के मामले में विपक्षी दल राज्य सभा में कानून बनने से रोकने के लिए एकजुट होने का प्रयास कर रहे हैं, हालांकि कांग्रेस ने फिलहाल इससे दूरी बना रखी है, किन्तु संसद में इस कानून के पक्ष में वोट देना कांग्रेस के लिए आसान नहीं होगा। ऐसे में कांग्रेस के पास वॉकआउट ही एक रास्ता होगा। संसद भवन के उद्घाटन पर सत्तारुढ़ और विपक्षी दलों में टकराव को मुद्दा बेशक चुनावी बने, किन्तु इसमें लोकतंत्र की ढहती हुई स्वस्थ परंपराओं का एक नया अध्याय ओर जुड़ गया है। देश और लोकतंत्र के लिए जरूरी है कि सत्ता पक्ष और विपक्ष अपने संकीर्ण स्वार्थों से ऊपर उठ कर ऐसे राष्ट्रीय महत्व के मुद्दों पर एक राय कायम करें।

राष्ट्रपति संसद भवन का उद्घाटन करतीं तब विपक्ष किसी और बहाने से विरोध करता

हिंदी का एक मुहावरा है, मौके पर चौका मारना। अवसर हाथ लगा नहीं कि उसका फायदा उठा लिया जाए। फायदा उठाने का तरीका जायज हो या नाजायज, कम से कम मौजूदा राजनीति इससे प्रभावित नहीं होती। नई संसद भवन के उद्घाटन के अवसर पर बीस विपक्षी दलों ने जो रणनीति अपनाई है, वह मौके पर चौका मारने वाली कहावत का बेहतरीन उदाहरण है। 28 मई को नई बनी संसद के भवन का उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी करने जा रहे हैं, विपक्ष ने इसे मुद्दा बनाकर इस समारोह के बहिष्कार का ऐलान कर दिया है। विपक्षी दलों की मांग है कि इस भवन का उद्घाटन राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से कराया जाना चाहिए। विपक्ष आरोप लगा रहा है कि मोदी सरकार ने ऐसा करके राष्ट्रपति पद की गरिमा और सम्मान को चोट पहुंचाई है।

यह ठीक है कि संविधान के अनुच्छेद 79 के तहत अपनी संसद के दोनों सदनों राज्यसभा और लोकसभा के अलावा एक अंग राष्ट्रपति भी हैं। यह देखते हुए तो विपक्ष की मांग प्रथम दृष्टया वाजिब भी लगती है। लेकिन इस मांग के लिए बाल हठ पकड़ते हुए उद्घाटन कार्यक्रम का बहिष्कार करना भी ठीक नहीं कहा जा सकता। संसदीय लोकतंत्र में संसद ना सिर्फ राष्ट्र की संप्रभुता की गारंटी है, बल्कि वह सबसे पवित्र और सर्वोच्च पंचायत भी है। वह ना सिर्फ देश को दिशा देती है, बल्कि राष्ट्र की संप्रभुता का संरक्षण भी करती है। इसलिए प्रधानमंत्री के नाम पर उसके उद्घाटन अवसर का बहिष्कार करना एक तरह से संसद की पवित्रता पर शुरुआत में ही आशंका की नींव बनाना है।

वैसे भी साल 2014 से जिस तरह विपक्ष राजनीतिक दांवपेंच चल रहा है, जिस तरह से आए दिन विपक्षी राजनीतिक एजेंडे वाले टूलकिट सामने आते रहे हैं, उससे देश में एक धारणा भी पुष्ट हुई है। धारणा यह कि चूंकि देश की कार्यपालिका के सर्वोच्च पद पर विपक्षी नजर में अनचाही शख्सियत नरेंद्र मोदी पहुंच चुकी है, इसलिए उसका विरोध करना है। यह अवधारणा भी स्थापित हुई है कि विपक्षी विरोध का एक मात्र लक्ष्य मोदी के विरोध के लिए विरोध करना है। इससे यह भी स्थापित हुआ है कि विपक्षी दल कार्यपालिका के सर्वोच्च पद पर मोदी के नाम को पचा नहीं पाया है। इसलिए वह अक्सर किसी न किसी बहाने वाजिब कम, गैर वाजिब मुद्दों पर विरोध करता रहता है। तमिलनाडु के किसानों का दिल्ली के जंतर-मंतर पर चले लंबे धरना हो, जिसमें कई बार जुगुप्सा पैदा करने वाले विद्रूप दृश्य भी नजर आए, या फिर नागरिकता संशोधन कानून में बदलाव का देशव्यापी विरोध, अफजल की फांसी का विरोध हो या फिर शिक्षा के कथित भगवाकरण के विरोध में जामिया, जादवपुर और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में चला विरोध, रोहित वेमुला के नाम पर चला कथित दलित विरोधी मोदी सरकार के रुख के विरोध में चला आंदोलन हो या फिर किसान आंदोलन, ऐसे तमाम आंदोलन रहे, जिनके बारे में मोटे तौर पर देश में यह अवधारणा बनी है कि विपक्ष की शह पर ये सारे विरोधी आंदोलन सिर्फ और सिर्फ मोदी विरोध के लिए किए जा रहे हैं।

भारतीय जनता पार्टी की सरकार द्वारा पहले बिहार, फिर जम्मू-कश्मीर, फिर गोवा और बाद में मिजोरम के राज्यपाल बनाए गए सतपाल मलिक के विरोधी तेवर के पीछे भी अवधारणा यही बनी है कि चूंकि मोदी का विरोध करना है, इसलिए वे भी विरोध कर रहे हैं। पुलवामा हमले के पीछे विपक्षी दल मोदी सरकार की साजिश भी बताने से नहीं हिचके। पाकिस्तान की सीमा के भीतर घुसकर भारतीय सेनाओं ने जब सर्जिकल स्ट्राइक किया तो उसके भी सबूत मांगे गए। और तो और न्यायपालिका में हस्तक्षेप के नाम पर भी मोदी सरकार के खिलाफ मोर्चे खोले गए। इस पूरी प्रक्रिया में खुलकर कुछ यूट्यूबर भी विरोधी हवाबाजी का खेल खेलने लगे। हर विरोध प्रदर्शन और आंदोलन खड़ा करते वक्त विपक्षी दलों और मोदी विरोधी यूट्यूबरों को उम्मीद रही कि इससे मोदी की राष्ट्रीय

छवि में दरार पड़ेगी। लेकिन हुआ ठीक उलटा। मोदी ब्रांड पर खास असर नहीं पड़ा। अतीत के ये अनुभव ही हैं कि संसद भवन के उद्घाटन को लेकर मचे सियासी घमासाल को लेकर भी यही माना जा रहा है कि विपक्षी दल हाथ लगे इस मौके का इस्तेमाल मोदी विरोध के लिए जानबूझकर कर रहे हैं।

विपक्षी दलों ने फिलहाल राष्ट्रपति से उद्घाटन ना करने को मुद्दा बनाया है। लेकिन लोक का एक बड़ा हिस्सा यह भी मानता है कि अगर राष्ट्रपति उद्घाटन करतीं, तब भी विपक्ष नई संसद का विरोध करता। तब उसके मुद्दे कुछ और होते। वह इसका तालियां बजाकर स्वागत नहीं करता। आम चौराहे हों, या चायपान की दुकानें या फिर ट्रेन-बस की यात्राएं, यह चर्चा आम है। वैसे अक्टूबर 2020 में नई संसद की जमीन के लिए एजेंसियों ने काम शुरू किया। दस दिसंबर 2020 को प्रधानमंत्री ने इसका शिलान्यास किया। वैसे नई संसद बनाने की योजना भारतीय जनता पार्टी सरकार की है भी नहीं। साल 2010 में लोकसभा की तत्कालीन स्पीकर मीरा कुमार की अध्यक्षता में नए संसद भवन पर विचार करने के लिए एक समिति संसद ने बनाई थी। उसी समिति ने भविष्य की चुनौतियों से निबटने और भविष्य में बढ़ने वाली सांसद संख्या के लिहाज से नई संसद बनाने का प्रस्ताव दिया था। जिसे नरेंद्र मोदी सरकार ने स्वीकार किया। इसी सरकार ने सेंट्रल विस्टा परियोजना शुरू की, जिसमें नया सचिवालय, नई संसद, प्रधानमंत्री और उपराष्ट्रपति के निवास आसपास के परिसर में बनाने का फैसला किया। उसी कड़ी में तैयार संसद भवन के उद्घाटन पर विवाद हो रहा है।

वैसे यह भी याद करना चाहिए कि संसदीय सौध, जिसे पार्लियामेंट एनेक्सी के नाम से जाना जाता है, का उद्घाटन 24 अक्टूबर 1975 को तत्कालीन राष्ट्रपति ने नहीं, तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने किया था। इसी तरह 15 अगस्त 1987 को संसद के पुस्तकालय भवन का शिलान्यास तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने किया था। संसदीय सौध विस्तार यानी पार्लियामेंट हाउस एनेक्सी एक्टेंशन का शिलान्यास भी राष्ट्रपति से तत्कालीन सरकार या लोकसभा के स्पीकर ने नहीं कराया था। बल्कि इसे पांच मई 2009 को लोकसभा के तत्कालीन स्पीकर सोमनाथ चटर्जी और तत्कालीन उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी ने किया था। छत्तीसगढ़ विधानसभा का उद्घाटन अजीत जोगी ने तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी से कराया था...राज्यपाल या राष्ट्रपति को नहीं बुलाया गया था। अगले आम चुनाव की उलटी गिनती शुरू हो गई है। फिर कुछ ही दिन पहले विपक्षी कांग्रेस ने कर्नाटक को भारतीय जनता पार्टी से छीन लिया है। इससे विपक्ष उत्साहित है। उसे लगता है कि अगर नरेंद्र मोदी को घेर लिया जाए तो साल 2024 के चुनावी नतीजे बदल सकते हैं। संसद के उद्घाटन का मौके के ठीक पहले कर्नाटक की कांग्रेसी जीत ने उत्साहित विपक्ष को मौका दे दिया और विपक्ष इसे भुनाने में जुट गया। इस पूरी प्रक्रिया में विपक्षी दलों की ओर से लोकसभा स्पीकर को जानबूझकर निशाना नहीं बनाया जा रहा। जबकि लोकसभा का अध्यक्ष ही संसद परिसर का असली प्रशासक होता है। जाहिर है कि लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने ही प्रधानमंत्री को नए संसद भवन के उद्घाटन के लिए आमंत्रित किया है। विपक्षी बहिष्कार की घटना से 2001 के संसद के बहिष्कार की याद आना स्वाभाविक है। तब ताबूत घोटाले के बाद जार्ज फर्नांडिस को अटल बिहारी वाजपेयी ने फिर से रक्षा मंत्री बना दिया था। उन दिनों संसद में जिस दिन रक्षा मंत्रालय से संबंधित सवाल पूछे जाने होते, समूचा विपक्ष जार्ज का बहिष्कार करते हुए संसद से बाहर हो जाता। विपक्ष खुलेआम उन्हें रक्षा मंत्री मानने से इंकार कर रहा था। संसद के शीतकालीन सत्र में यह रवायत जारी थी, इसी बीच 13 दिसंबर को संसद पर आतंकवादियों का हमला हुआ। भयभीत सांसद संसद के केंद्रीय कक्ष में डर और आशंका के साये में परेशान थे। इसी बीच वहां रक्षा मंत्री जार्ज फर्नांडिस पहुंचे। तब तक हमलावर आतंकी मार गिराए गए थे और संसद भवन पर सेना की टुकड़ियों ने मोर्चा संभाल लिया था। केंद्रीय कक्ष में पहुंचे जार्ज फर्नांडिस ने सांसदों को आश्वस्त किया था, कि समूचे देश पर सरकार का नियंत्रण है। आतंकवादी मार दिए गए हैं। संसद भवन पर सेना पहरेदारी कर रही है। संसद परिसर में विमानभेदी तोपें तक तैनात कर दी गईं हैं, ताकि आसमान से भी खतरा न रहे। जार्ज अभी यह बोल ही रहे थे कि उन्हें विपक्षी सांसदों ने घेर लिया। कोई उनसे हाथ मिलाने को लपक रहा था, तो कोई उन्हें अब तक का सबसे बेहतरीन रक्षा मंत्री बता रहा था। वही विपक्ष, जो कुछ देर पहले तक उन्हें रक्षा मंत्री मानने से इंकार कर रहा था। नए संसद भवन को लेकर भविष्य में विपक्षी दलों का भी रवैया कुछ वैसा ही होगा...ठीक साढ़े इक्कीस साल पहले वाले नजारे की तरह।

आधुनिक मुद्दा

दिल्ली में हुए साक्षी हत्याकांड से पूरी मानवता की रूह कांप गयी है...

फिर एक और 16 साल की साक्षी की साहिल ने बेरहमी से हत्या कर दी। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के शाहबाद डेयरी में हुए इस हत्याकांड ने अनेक सवाल खड़े कर दिये हैं। समाज में बढ़ती हिंसक वृत्ति, क्रूरता एवं संवेदनहीनता से केवल महिलाएं ही नहीं बल्कि हर इंसान खौफ में है। मानवीय संबंधों में जिस तरह से बालिकाओं की निर्मम हत्याएं हो रही हैं उसे लेकर बहुत सारे सवाल उठ खड़े हुए हैं। विडंबना यह है कि समाज में गहरी संवेदनहीनता पसरी है। निर्ममता-क्रूरता एवं बर्बरता हमेशा से हमारे समाज के अंधेरे कोनों में व्याप्त रही है, पर इस मामले में जिस तरह से सरेराह हिंसा एवं बेरहमी देखी गई है और उसके प्रति लोगों में जो शर्मनाक उदासीनता देखी गई है, वह अपने आप में किसी अपराध से कम नहीं है। वह हत्यारा एक नाबालिग लड़की को खुलेआम मारता रहा, इस खौफनाक एवं दर्दनाक दृश्य के दस से ज्यादा लोग साक्षी होने के बावजूद किसी ने भी हत्यारे को यह जघन्य काण्ड करने से नहीं रोका, हत्यारे ने चाकू से वार पर वार किए और लड़की का सिर तक कुचल दिया, पत्थर से भी वार किये, तब भी लोग बचाव के लिए सामने नहीं आए। कोई एक तमाशबीन भी शोर तक मचाने के लिए कुछ पल खड़ा न हुआ। एक व्यक्ति ने हत्यारे का हाथ पकड़ने की कोशिश की, पर झटके जाने के बाद हिम्मत न जुटा सका। मतलब, दस में से किसी एक व्यक्ति ने मानवीयता एवं संवेदनशीलता का तनिक भी परिचय नहीं दिया। श्रद्धा हत्याकांड एवं उसके बाद निक्की हत्याकाण्ड जैसे कई कांड?सामने आ चुके हैं। समाज बार-बार सिहर उठता है, घायल होता है। इस सिहरन को कुछ दिन ही बीते होते हैं कि नया साक्षी हत्याकांड सामने आ जाता है। इन प्रदूषित एवं विकृत सामाजिक हवाओं को कैसे रोका जाए, यह सवाल

सबके सामने है। समाज को उसकी संवेदनशीलता का अहसास कैसे कराया जाए। समाज में उच्च मूल्य कैसे स्थापित किए जाएं, यह चिंता का विषय है। कभी-कभी हिंसा के ऐसे शर्मनाक एवं डरावने दृश्य सामने आते हैं कि निंदा के लिए शब्द कम पड़ने लगते हैं। इस हत्याकांड ने समाज की विकृत एवं संवेदनहीन होती स्थितियों को उधेड़ा है। नये बन रहे समाज में अगर यहां से कोई आंकड़ा निकाला जाए, तो आज समाज में दस में से कोई एक आदमी भी सामने हो रही हत्या या अन्याय को रोकने के लिए आगे नहीं आता। साक्षी अकेली जूझती रही और अंततः समाज की उदासीनता से हार गई। उस लड़की के माता-पिता बिलख रहे हैं और हत्यारे के लिए कड़ी से कड़ी सजा की मांग कर रहे हैं। यह सराहनीय है कि काफी कम समय में पुलिस अपराधी तक पहुंच गई है। अब इस मामले में पूरी तेजी के साथ न्याय सुनिश्चित किया जाना चाहिए। ऐसे मामलों में अपराधी को त्वरित सजा एवं सख्त से सख्त सजा से ही समाज में सही संदेश दिया जा सकता है। जैसे-जैसे समाज उदार एवं आधुनिक होता जा रहा है, जड़ताओं को तोड़ कर युवा वर्ग नई एवं स्वच्छन्द दुनिया में अलग-अलग तरीके से जी रहा है, संबंधों के नए आयाम खुल रहे हैं, उसी में कई बार कुछ युवक अपने लिए बेलगाम जीवन सुविधाओं एवं प्यार को अपनी बपौती समझ कर ऐसी हिंसक एवं अमानवीय घटनाओं को अंजाम दे रहे है। साक्षी हत्याकांड में भी अपराधी लड़के को कथित रूप से यह शिकायत थी कि लड़की उससे दोस्ती रखना नहीं चाहती थी। क्या वह लड़का इतना जाहिल एवं जानवर था कि उसे अपनी बात मनवाने के लिए सभ्य तरीके नहीं आते थे? क्या वह लड़का यह मानता था कि किसी लड़की की मर्जी का कोई अर्थ नहीं है? क्या कोई लड़की अपनी मर्जी से दोस्त भी नहीं चुन सकती? क्या जबरन दोस्ती मुमकिन है? क्या कोई दोस्ती नहीं करेगा, तो उसकी हत्या हो जाएगी? यह दुस्साहस कहां से आ रहा है। समाज और देश में ऐसे सवाल बढ़ते जा रहे हैं, जिनका जवाब सभी लोगों को सोचना चाहिए।यद्यपि समाज में प्यार करने के तौर-तरीकों पर सवाल उठाता रहा है लेकिन जो कुछ समाज में हो रहा है वह पाश्विकता एवं दरिंदगी की हद है। प्यार हो, विवाह हो या लिव-इन रिलेशनशिप, हिंसात्मक व्यवहार और हिंसक-अंत को बीमार मानसिकता से नहीं समझा जा सकता। हिन्दू-मुस्लिम प्रेम संबंधों के बढ़ते प्रचलन से यह समझना मुश्किल है कि भरोसे की बुनियाद पर खड़े संबंधों के बीच किसी व्यक्ति के भीतर इस स्तर की संवेदनहीनता एवं उन्माद कैसे उभर आता है कि वह अपनी प्रेमिका को मार डालता है। पहले तो दुनिया से छिपा कर कोई युवक किसी युवती के साथ प्रेम संबंध में या फिर सहजीवन में जाता है, फिर किसी जटिल स्थिति के पैदा होने पर उसका मानवीय हल निकालने के बजाय वह हत्या का रास्ता अख्तियार करता है। इस तरह की मानसिकता का पनपना नये निर्मित होते समाज पर एक बदनुमा दाग है एवं बड़ा प्रश्न भी है कि इस तरह के प्रेम संबंधों की ऐसी क्रूर एवं हिंसक निष्पत्ति क्यों होती है? इस तरह के व्यवहार को कैसे सोच-समझ कर की गई किसी पेशवर अपराधी की हरकत नहीं कहा जाएगा? निश्चित तौर पर ऐसी घटनाएं कानून की कसौटी पर आम आपराधिक वारदात ही हैं, लेकिन इससे यह भी पता चलता है कि प्रेम संबंधों में भरोसा अब एक जोखिम भी होता जा रहा है! आखिर बेटियों एवं नारी के प्रति यह संवेदनहीनता कब तक चलती रहेगी? युवतियों को लेकर गलत धारणा है कि उन्हें प्रेम, भौतिकतावादी जीवन एवं सैक्स के ख्वाब दिखाओ एवं जहां कहीं कोई रुकावट आये, उसे मार दो। एक विकृत मानसिकता भी कायम है कि बेटियां भोग्य की वस्तु हैं? जैसे-जैसे देश आधुनिकता की तरफ बढ़ता जा रहा है, नया भारत-सशक्त भारत-शिक्षित भारत बनाने की कवायद हो रही है, जीवन जीने के तरीकों में खुलापन आ रहा है, वैसे-वैसे महिलाओं एवं अबोध बालिकाओं पर हिंसा के नये-नये तरीके और आंकड़े भी बढ़ते जा रहे हैं।

जाहिर है, समाज की विकृत सोच को बदलना ज्यादा जरूरी है। बालिकाओं के जीवन से खिलवाड़ करने, उन्हें बीमार मानसिकता के साथ प्रेम-संबंधों में डालने, उनके साथ रेप, हत्या जैसे अपराध करने की घटनाओं पर अंकुश लगाने के लिए कड़ी से कड़ी कार्रवाई करने और पुलिस व्यवस्था को और चाक-चौबंद करने की मांग के साथ समाज के मन-मिजाज को दुरुस्त करने का कठिन काम भी हाथ में लेना होगा। यह घटना शिक्षित समाज के लिए बदनुमा दाग है। अब एक सभ्य समाज के रूप में हमें अपने नागरिकों को उनके कर्तव्यों का बोध कराना ही जरूरी हो गया है। हम अपना हक पाने का, मांगने के लिए तो कहीं भी लड़ जाते हैं, लेकिन कर्तव्य या जिम्मेदरी निभाने की जब बात आती है तो कतरा कर निकल जाते हैं। यह समय है, जब हमें व्यापक रूप से समाज और संस्कृति सुधार के बारे में सोचना चाहिए। अगर ऐसी घटनाएं होती रहीं तो फिर कानून का खौफ किसी को नहीं रहेगा और सरेआम इस तरह की हत्याओं से किसी का भी जीवन कैसे सुरक्षित होगा। समाज तमाशबीन बना रहेगा तो फिर कौन रोकेगा हिंसा, हत्या, हैवानियत, बलात्कार को, और प्रेम-प्यार के नाम पर ऐसी हिंसक दरिंदगी को।

कुछ और भी जानें...

भारत के स्कॉटलैंड की खूबसूरती देख भूल जाएंगे विदेशी नजारे, प्रकृति प्रेमियों के लिए जन्नत है ये जगह

अक्सर हमारे दिल में यह चाहत होती है कि विदेश यात्रा की जाए। लेकिन पैसे, पासपोर्ट या वीजा के कारण कई बार हमारी यह इच्छा अधूरी रह जाती है। अगर आपका भी विदेश घूमने का सपना सिर्फ ख्वाब बनकर रह गया है। तो आपको परेशान होने की जरूरत नहीं है। आपको बता दें कि भारत में कई ऐसी जगहें हैं जो विदेशी जगहों को टक्कर देती हैं। भारत में खूबसूरत पहाड़ों के अलावा आपको शानदार समुद्र के किनारे भी देखने को मिलेंगे। पेरिस, स्कॉटलैंड और स्विट्जरलैंड घूमने का सपना देखने वाले लोग अपने देश में विदेशी नजारों की तरह कुछ जगहें हैं। ऐसे में अगर आप भी स्कॉटलैंड जाने का ख्वाब देख रहे हैं। तो भारत के स्कॉटलैंड की सैर कर सकते हैं। भारत के स्कॉटलैंड को घूमने के लिए आपको अधिक खर्चा भी करने की जरूरत नहीं है। साथ ही यहां पर घूमने के लिए पासपोर्ट और वीजा की भी जरूरत नहीं हैं। आइए जानते हैं भारत के स्कॉटलैंड के बारे में, जो आपको विदेश यात्रा का अनुभव करवाएंगी। जानिए किसे कहते हैं भारत का स्कॉटलैंड कर्नाटक राज्य में एक खूबसूरत हिल स्टेशन मौजूद है। जिसे भारत का स्कॉटलैंड कहा जाता है। बता दें कि समुद्र तल से 900 मीटर से अधिक ऊंचाई पर स्थित इस खूबसूरत हिल स्टेशन के नजारे देख आपका दिल खुश हो जाएगा। इस खूबसूरत जगह का नाम कुर्ग हिल स्टेशन है। यहां पर घूमने के लिहाज से बहुत सुंदर जगह है। यहां पर मौजूद कई पर्यटन स्थल हैं, जो आपके सफर को और भी खूबसूरत बना देंगे। कुर्ग के पर्यटन स्थल कुर्ग के आसपास घूमने के लिए कई बेहतरीन जगहें हैं। कुर्ग में आप ईरपु फॉल्स, नालबंद पैलेस, राजा की गुंबद, अब्बे फॉल्स और मदिकेरी किले घूम सकते हैं। इसके अलावा यहां पर आप ओंकारेश्वर मंदिर,नामद्रोलिंग मठ और मंडलपट्टी व्यू पॉइंट में भी घूमने का आनंद ले सकते हैं। ऐसे पहुंचें कुर्ग कुर्ग के लिए आप एयरपोर्ट और रेलवे स्टेशन दोनों ही सुविधाएं मिलेंगी। अगर आप फ्लाइट से कुर्ग जाने का प्लान कर रहे हैं तो मैंगलोर इंटरनेशनल एयरपोर्ट नजदीक है। इस एयरपोर्ट से कुर्ग 137 किमी दूर है। वहीं ट्रेन से जाने के लिए आपको सबसे नजदीकी रेलने स्टेशन मैसूर जंक्शन मिलेहा। यहां से कुर्ग की दूरी करीब 117 किमी है।

श्वेता निझावन मॉडल, अभिनेत्री प्राइडइंडिया ग्रुप के एसोसिएट ब्रांड एंबेसडर

सवाल...सबसे पहले आपसे हमारा सवाल है कि आपने अपने कैरियर की शुरूआत कहां से की?

जवाब...मैंने अपने मॉडलिंग करियर की शुरुआत फेस ग्रुप के इवेंट से की जिसमे मैंने बेस्ट हेयर्स का टाइटल अपने नाम किया...

सवाल...आपकी प्राथमिक शिक्षा कहां से हुई और आपने किस मोड़ पर अपने जीवन का लक्ष्य तय किया?

जवाब...मेरी बेसिक शिक्षा दिल्ली से ही हुई और मैंने 16 साल की उमर से ही अपना लक्ष्य तय कर लिया था...

सवाल...आपकी सफलता और आज आप जिस मुकाम पर हैं उसने पाने के लिए आपने क्या किया और उसमें मुख्य भूमिका किसकी रही?

जवाब...मेरा कोई गॉड फादर नहीं ह ज्यादा समाज नहीं थी फिर मेरे लाइफ पार्टनर के अलावा कोई सपोर्ट मी नहीं था और आज भी वही साथ...

सवाल..आज आप जिस मुकाम पर हैं और आज लोग आपको जानते हैं यह देख कर आपको कैसा महसूस होता है?

जवाब...मई शुरू से अपनी एक पहचान बनाना चाहती थी इंडस्ट्री में मेरे बहुत दोस्त बने या मुझे बहुत से लोग जाते हैं तो अच्छा लगता है और सबके साथ मैंने ये मुकाम पाया...

सवाल...आपने आज तक अपने जीवन में जो तय किया और उसको पाने के लिए आपने दिन रात मेहनत की क्या अभी वह सपना अधूरा है?

जवाब...जी हां मैंने अपने लिए जू ख्वाब देखे थे वो अभी अधूरा है...

सवाल...आपको आपके परिवार से सबसे ज्यादा सपोर्ट और सहयोग किनसे मिला?

जवाब...मुझे बस मेरे जीवन साथी के अलावा किसी का परिवार मुझे समर्थन नहीं है मेरे सपने अब उनके भी हैं...

सवाल...आपको अभी तक कौन-कौन से सम्मानों से सम्मानित किया जा चुका है?

जवाब...मेरे लिए यह वास्तव में गर्व का क्षण है कि मुझे 16 अक्टूबर 2021 को प्राइडइंडिया ग्रुप के एसोसिएट ब्रांड एंबेसडर के रूप में ताज पहनाया गया। और 1 जुलाई 2022 को यूएसएफआर के ब्रांड अंबासाफोर के रूप में भी ताज पहनाया गया...

अभी तक मैंने वर्ल्ड बुक ऑफ टैलेंट, महात्मा गांधी नोबल पीस अवार्ड, गर्वित इंडियन पार्लियामेंट अवार्ड, वुमन ऑफ सब्सटेंस अवार्ड, **ufsr.org** की तराफ से नेशन प्राइड अवार्ड, एक शाम देश का नाम, हेल्पेज इंडिया अवार्ड ... आदि।

सवाल...आपके जीवन के रोल मॉडल कौन है तथा आप किस फिल्म स्टार की तरह बनना चाहती हैं?

जवाब...मेरी रोल मॉडल मिस यूनिवर्स सुष्मिता सेन तथा मिस वर्ल्ड प्रियंका चोपड़ा है...

सवाल...अभी तक आपने जितनी भी कार्य किए हैं उनमें से आपके लिए सबसे बेस्ट और सबसे अच्छा कार्य और अनुभव कौन सा रहा?

जवाब...मैने ऐड शूट मॉडलिंग सिंगिंग सब किया ज लेकिन थिएटर का अनुभव सबसे अच्छा रहा...

सवाल...आप आने वाली पीढ़ी को कोई ऐसा संदेश देना चाहेंगी जिनसे वह प्रेरित हो सके।

जवाब...अगर अपने लिए कोई भी सपना देखा ज तो वो कभी न कभी जरा पुरा होगा बस आपको अपनी महानत नहीं छोडनी ओथा भगवान में विश्वास करना होगा...

वर्षा सिंह बिसेन वन परीक्षेत्र अधिकारी

खूबसूरती मे फिल्म एक्ट्रेस और मॉडल को भी मात देने वाली इंजीनियर ने ए सी जॉब छोड़ कर लिया देश सेवा का व्रत आइये आज मै सुधांशु शर्मा रेडियो हेड आशुनिक समाचार आपको ऐसी की शख्शियत वन रेंज अधिकारी वर्षा सिंह् बिसेन् से

सवालः सुधांशु शर्मा-सबसे पहले आपसे हमारा सवाल है कि आपने अपने कैरियर की शुरूआत कहां से की? **जवाबः वर्षा सिंह-** जी मैने अपने करियर की शुरुआत कटनी वन कार्यालय से की। **सवालः सुधांशु शर्मा-**आपकी प्राथमिक शिक्षा कहां से हुई और आपने किस मोड़ पर अपने जीवन का लक्ष्य तय किया?

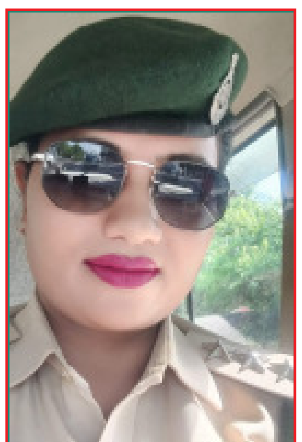

वर्षा सिंह बिसेन
वन परीक्षेत्र अधिकारी

जवाबः वर्षा सिंह-मेरी प्राथमिक शिक्षा सतना के कराईस्ट ज्योति स्कूल से हुइ वही से मेरी ज़िंदगी मे यूनिफार्म पहनने की ललक जागी जिसमे मेरी पिता जी का पूरा आशीर्वाद मिला। **सवालः सुधांशु शर्मा -** आपकी सफलता और आज आप जिस मुकाम पर हैं उसने पाने के लिए आपने क्या किया और उसमें मुख्य भूमिका किसकी रही? **जवाबः वर्षा सिंह -** मेरी सफलता मे मेरी पति दीपक सिंह जी जो की पेशे से इंजीनियर है और सतना के एक बड़े सीमेंट प्लांट मे कार्यरत है एवं पिता जी का पूर्ण सहयोग रहा प्रेरणा पिता जी की समर्पण पति का एवं सहयोग मेरी सास(मा) का रहा **सवालः सुधांशु शर्मा -** आज आप जिस मुकाम पर हैं और आज लोग आपको जानते हैं यह देख कर आपको कैसा महसूस होता है? **जवाबः वर्षा सिंह -** मुझे जिम्मेदारी का पुरा एहसाह रहता है और गौवान्वित् महसूस करती हु की देश के लिए कुछ कर पा रही की हमारा देश कृषि प्रधान देश है और वन उनकी धतोहर् उस धरोहर को संजो कर रखना मुझे अच्छा लगता है। **सवालः सुधांशु शर्मा-** आपने आज तक अपने जीवन में जो तय किया और उसको पाने के लिए आपने दिन रात मेहनत की क्या अभी वह सपना अधूरा है। **जवाबःवर्षा सिंह-** सपना तो बस इतना है की जिस मुकाम पे हु उस जगह देश् और समाज् के लिए कुछ कर पाऊं और इसी फील्ड मे आगे जाऊँ **सवालः सुधांशु शर्मा-**आपको आपके परिवार से सबसे ज्यादा सपोर्ट और सहयोग किनसे मिला? **जवाबःवर्षा सिंह-** मेरे पति दीपक सिंह का

सुधांशु शर्मा
रेडियो हेड आधुनिक समाचार

सवालः सुधांशु शर्मा-आपको अभी तक कौन-कौन से सम्मानों से सम्मानित किया जा चुका है? **जवाबः वर्षा सिंह-**जिलाधिकारी द्वारा उत्कृत कार्य के लिए सम्मानित किया गया। **सवालः सुधांशु शर्मा -**.आप समाज मे लड़कियों के लिए क्या संदेश देंगी **जवाबःवर्षा सिंह-**लड़किया जो ये सोचती है की हम यूनिफार्म की जॉब नही कर सकते ये सुरक्षित नही है तो उन्हे ये समझना चाहिए की देवी दुर्गा शक्ति की देवी है और हर लड़की उनका रूप है और मै भी तहसीलदार के रूप मे चयनित हुई थी लेकिन् मैने वन छेत्राधिकारी बनना चुना आपके सपने आपके है और आप पुरी इमामदारी से उसपे काम करे आपको कोई नह हरा सकता आप आपकी शक्ति को स्वयं पहचानो। **सवालः सुधांशु शर्मा-** आधुनिक समाचार के लिए कोई संदेश **जवाबः वर्षा सिंह-** आधुनिक समाचार समाज् मे सकारात्मक रूप से अच्छा कार्य कर रहा है। और इनकी टीम को मेरा धन्यवाद आप ऐसे ही काम करे और समाज को दिशा दे।

अस्थमा मरीजों के लिए नई 'हीट थेरेपी', बिना कोई साइड इफेक्टस

अस्थमा के 7 से 8 फीसद मरीजों में इसके लक्षण सामने नहीं आते या फिर विकसित नहीं होते, जबकि दवाएं बढ़ती चली जाती हैं। ऐसे मरीजों के लिए एक नई आशा की किरण सामने आई है। एक खास तरह का उपचार (थेरेपी) जिसमें रेडियो फ्रिक्वेंसी हीट वेव (पूेंन) का इस्तेमाल करके सांस की नली की दीवार को हल्का गर्म किया जाता है। खास बात यह है कि इस प्रक्रिया में मरीज को किसी भी तरह के दुष्प्रभाव (साइड इफेक्टस) से नहीं गुजरना पड़ेगा। यह उन मरीजों के लिए भी कारगर साबित होगी जो अस्थमा के साथ स्टेरॉयड (रसायनिक विशेष) की समस्या से भी जूझ रहे हैं। एक अखबार के अनुसार पश्चिमी देशों में इस तकनीक का इस्तेमाल कुछ साल पहले किया गया था और भारत में चेस्ट के कुछ फिजिशियन गंभीर अस्थमा की तकलीफ से गुजर रहे मरीजों पर अब इसका उपयोग कर रहे हैं। ऐसे ही एक मरीज हैं 60 साल के मुकेश गर्ग। पिछले 20 साल से वे लगातार खांसी और सांस नहीं ले पाने की समस्या का सामना कर रहे हैं। बाद उनकी तकलीफ इतनी बढ़ गई कि उन्हें अस्पताल में भर्ती कराना पड़ गया।सर गंगा राम अस्पताल के सीनियर चेस्ट फिजिशियन डॉ। अरूप बसु ने द टाइम्स ऑफ इंडिया से कहा, 'उसे एंटीबायोटिक्स के हैवी डोज दिए गए।

हालांकि इसकी वजह से साइट इफेक्टस की भी खतरा हो सकता है। इसलिए हमने उनका इलाज ब्रॉनिकल थेरेमोप्लास्टी (ऊ) के जरिए करना शुरू किया।' इसके साथ ही उन्होंने कहा कि ब्रॉनिकल थेरेमोप्लास्टी के दौरान एक खास नली का इस्तेमाल हुआ, जिसे तीन अलग-अलग सप्ताह में तीन चरणों (सीटिंग्स) में सामान्य ब्रोन्कोस्कोपी के दौरान डाला गया। कुछ मरीजों को सिर्फ दो चरण में ही राहत मिल गई।

जिम कॉर्बेट का ढिकाला जोन है बहुत ही खूबसूरत और शांत पर्यटक स्थल

उत्तराखंड जिम कॉर्बेट नेशनल पार्क का ढिकाला जोन पाटिल दून घाटी पर स्थित एक बहुत ही खूबसूरत और शांत पर्यटक स्थल है। ये ऐसी जगह है जहां आप अपने तनाव को दूर कर सकते हैं यहां की खूबसूरती और शांति आपको अपने से बांध लेगी और ये जगह छोड़ने का आपका मन बिलकुल नहीं करेगा। **टाइगर रिजर्व ढिकाला** ढिकाला दुनिया भर में अपनी वाइल्ड लाइफ के लिए मशहूर है। वैसे तो कोर्बेट के और भी जोन हैं जेसे झीरना, बिजरानी, सीताबनी, गैराल, दुर्गा देवी ये सभी बहुत ही खूबसूरत हैं और टाइगर रिजर्व भी है लेकिन ढिकाला इन सब में अपनी अगल पहचान के लिए जाना जाता है। यहां आपको हिरण, जंगली हाथी, चीतल, कोबरा सांप, तरह तरह के सरीसृपों और विभिन्न पक्षियों को देखने क अवसर मिलेगा। **100 साल पुराना है यहां का रेस्टहाउस :** जिम कॉर्बेट में अगर आप जंगल के अंदर रहना चाहते हैं और जंगल के बीचों बीच जानवरों की आहट के साथ आप रात गुजारना चाहते हैं तो आप ढिकाला जोन में ये एडवेन्चर भी कर सकते हैं। ये खूबसूरत रिजोर्ट 100 साल पुराना है इसे अंग्रेजों ने बनवाया था। इसकी बनावट आपको आकर्षित करेगी, ये काफी बड़ा है। इस जोन में केवल 20 परिवार ही एक दिन में रह सकते हैं। यहां सरकार का सख्त पहरा है। सब कुछ सरकार की निगरानी में होता है। **45 दिन पहले करनी होगी बुकिंग :** उत्तराखंड सरकार के अधीन होने के कारण यहां के नियम दूसरे टूरिस्ट प्लेसों से अलग हैं। सख्त चैकिंग के बाद आपको गेट से अंदर भेजा जाता है और जंगल की सुरक्षा के लिहाज से आप मीट, शराब, सिगरेट जंगल के अंदर नहीं ले जा सकते इससे आप को खतरा हो सकता है।

शख्सियत....

आपातकाल के दौरान जॉर्ज फर्नांडीस ने हिला दी थीं कांग्रेस की जड़ें, ऐसे दी थी इंदिरा गांधी को मात

जॉर्ज फर्नाडीस ने मजदूर नेता से राजनीति के शीर्ष नेता तक का सफर तय किया था। उनकी गिनती उन नेताओं में की जाती है, जिनको जनता से भरपूर प्यार और सम्मान मिला था। बता दें कि आज ही के दिन यानी की 3 जून को जॉर्ज फर्नाडीस का जन्म हुआ था। जॉर्ज फर्नाडीस ने भारतीय राजनीति में अमिट पहचान बनाई थी। वह आपातकाल के दौरान मछुआरे, साधु और सिख बनकर अपने आंदोलन को चलाते रहे थे। जॉर्ड फर्नाडीस राजनीति की सीढ़ियां चढ़ने से पहले एक ऐसे मजदूर नेता थे, जिनकी एक आवाज पर पूरा मजदूर तबका उनके पीछे चलता था। आइए जानते हैं जॉर्ज फर्नाडीस की बर्थ एनिवर्सिरी के मौके पर उनके जीवन से जुड़ी कुछ रोचक बातों के बारे में...

जन्म और शिक्षाः कर्नाटक के मंगलुरु में 3 जून 1930 को जॉर्ज फर्नांडीस का जन्?म हुआ था। वह एक ग?लोरिन-कैथोलिक परिवार में जन्मे थे। जॉर्ज ने अपनी शुरूआती शिक्षा मंगलुरु के स्कूल से पूरी की। इसके बाद उन्होंने मैंगलौर के सेंट अल?योसिस कॉलेज से अपनी 12वीं की पढ़ाई पूरी की। जॉर्ज अपने सभी भाई-बहनों में सबसे बड़े थे। परिवार के लोग जॉर्ज को गैरी कहकर बुलाते थे। अपने घर के रिवाज के अनुसार, महज 16 साल की आयु में जॉर्ज को बैंगलोर के सेंट पीटर सेमिनरी में धार्मिक शिक्षा के लिए भेजा गया।

कॅरियरः साल 1949 में जॉर्ड मंगलुरु छोड़कर काम की तलाश में मुंबई आ गए थे। लेकिन मुंबई में उन्हें काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा था। शुरूआती दिनों में वह समाचार पत्र में प्रूफरीडर की नौकरी करने से पहले वह फुटपाथ पर रहा करते थे। कई बार उनको जमीन पर भी सोना पड़ता था। साल 1950 में जॉर्ज सामाजिक कार्यकर्ता राममनोहर लोहिया के काफी करीब आ गए थे। वह लोहिया से विचारों से काफी प्रभावित थे। इसके बाद जॉर्ज सोशलिस?ट ट्रेड यूनियन के आंदोलन में शामिल हो गए। इसमें उन्होंने कर्मचारियों तथा होटलों और रेस्तरांओं में काम करने वाले मजदूरों की कम सैलरी के लिए आवाज उठाने का काम किया था।

राजनीतिक सफरः साल 1961 और 1968 में जॉर्ज फर्नाडीस मुंबई सिविक का चुनाव जीतने के बाद बॉम्बे म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन के सदस?य बन गए। इस दौरान वह लगातार निचले स?तर के मजदूरों एवं कर्मचारियों के लिए आवाज उठाते रहे। अपने लगातार आंदोलनों के कारण जॉर्ज अन्य बड़े नेताओं की नजरों में आ गए थे। साल 1967 में लोकसभा चुनाव में उन?हें संयुक?त सोशियल पार्टी की तरफ से टिकट दिया गया था। उस चुनाव में जॉर्ज ने शानदार जीत हासिल की थी। जिसके बाद उनका नाम 'जॉर्ज द जेंटकिलर' रख दिया गया। वहीं जॉर्ज से हारने के बाद कांग्रेस के सदाशिव कानोजी पाटिल ने हमेशा के लिए राजनीति से सन्यास ले लिया था।

रेल हड़तालः साल 1969 में वह संयुक?त सोशियल पार्टी के जनरल सेक्रेटरी बनें। फिर साल 1973 में पार्टी के चेयरमैन बनें। इसके बाद साल 1974 में ऑल इंडिया रेलवे फेडरेशन का अध?यक्ष बनने के बाद जॉर्ज ने भारतीय रेलवे के खिलाफ हड़ताल शुरू की। इस हड़ताल के जरिए वह तीसरे वेतन आयोग को लागू करने की मांग कर रहे थे। जॉर्ज आवासीय भत्ता बढ़ाने की मांग कर रहे थे। साल 1975 में देश की पीएम इंदिरा गांधी ने आपातकाल की घोषणा की थी। वहीं आपातकाल का विरोध करने वालों को गिरफ्तार कर जेल में भेज दिया गया था।

जब जॉर्ज ने भी आपातकाल का विरोध किया तो उनके खिलाफ भी गिरफ्तारी वारंट जारी कर दिया गया था। लेकिन वह गिरफ्तारी से बचने के लिए जॉर्ज अंडरग्राउंड हो गए थे। लेकिन पुलिस ने जॉर्ज के भाई को गिरफ्तार कर लिया। जिसके कारण जॉर्ज को पुलिस के सामने आत्म-समर्पण कर दिया था। जॉर्ज की गिरफ्तारी के बाद एमनेस?टी इंटरनेशनल मेंबर ने सरकार से अपील कर फौरन जॉर्ज को एक वकील दिए जाने की मांग की थी। वहीं वकील न दिए जाने की स्थिति में उनकी जान की गारंटी लेने की बात कही गई थी।

साल 1977 में जब आपातकाल खत?म हुआ तो इंदिरा गांधी की समेत कांग्रेस की हार हो गई। वहीं जेल में रहते हुए जॉर्ज बिहार के मुजफ्फरपुर से चुनाव जीत गए थे। इस दौरान उन्हें जनता पार्टी की सरकार में इंजस्ट्री मंत्री बनाया गया। वहीं साल 1998 में जब अटल बिहारी बाजपेई की सरकार सत्ता में आए तो उसी दौरान एनडीए का गठन हुआ था। वहीं साल 1999 में जनता पार्टी दो दलों जनता दल यूनाटेड तथा जनता दल सेक्युलर में बंट गई।

वहीं जॉर्ज जदयू के साथ हो गए और अपनी समता पार्टी को जदयू में मिला दिया। जदयू में जब वह रक्षामंत्री बने थे। तब पाकिस?तान ने भारत पर हमला कर दिया। भारत-पाकिस्तान के युद्ध में दोनों तरफ से भारी हथियारों का इस्तेमाल किया गया ता। वहीं भारतीय सेना ने 'ऑपरेशन विजय' के दौरान पाकिस्तान की सेना को पीछे हटने पर मजबूर कर दिया था। हालांकि इस युद्ध के बाद सरकार पर कई गंभीर आरोप लगाए गए थे, लेकिन जॉर्ज ने उन सभी आरोपों को खारिज कर दिया था।

मौतः जॉर्ज फर्नाडीस पर कई सारे आरोप भी लगाए गए थे। उस दौरान उन पर आपातकाल के दौरान विदेशी संस?थाओं से पैसे लेकर इंदिरा गांधी का विरोध करना, रक्षामंत्री रहने के दौरान तहलका कांड, 2000 में इसराइल से बैरक-1 की खरीद में 7 मिलियन डॉलर का घोटाला और परमाणु परीक्षण के बाद चीन को युद्ध के लिए भड़काने आदि का आरोप लगाया गया था। वहीं 29 जनवरी साल 2019 में 88 साल की उम्र में उनका 88 साल की उम्र में निधन हो गया था।

15 मिनट की एक्सरसाइज ला सकती है बदलाव

सुबह की सैर हमारे लिये एक ऐसा वरदान है, जिसकी मदद से हम बिना कुछ व्यय किये अपने शरीर को ताउम्र स्वस्थ रख सकते हैं। इससे हमारे शरीर को हाई ब्लड प्रेशर, डायबिटीज, तनाव, बेहतर नींद और वजन और वजन कम रखने में मदद मिलती है। यह न सिर्फ हमें शारीरिक रूप से स्वस्थ रखती है, बल्कि भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक रूप से मजबूत भी करती है। अवसाद से लड़ने, रात में अच्छी नींद और वजन को नियंत्रित रखने में भी यह हमें बेहद मदद करती है।

सुबह की जाने वाली सैर या जॉगिंग हमारे शरीर में ऑक्सीजन की कमी को पूरा करती है और हमारे फेफड़ों, मांसपेशियों को ठीक से काम करने के लिये प्रशिक्षत करती है। यह हमें प्रकृति का दिया हुआ ऐसा वरदान है, जिसकी मदद से हम न सिर्फ अपने शरीर में एक नयी रंगत और ऊर्जा का संचार कर सकते हैं, बल्कि अपने मस्तिष्क को संकेंद्रित रखने में प्रशिक्षित कर सकते हैं, जिससे हमें सही निर्णय लेने, समस्याओं के निराकरण करने में मदद मिलती है। दिन में सिर्फ 15 मिनट की एक्सरसाइज हमारे दिमाग की क्षमता में वृद्धि करती है। एक शोध के अनुसार एक हफ्ते में सिर्फ ढाई घंटे की सैर हमारे शरीर की 7 प्रतिशत अतिरिक्त चर्बी को और 58 प्रतिशत तक डायबिटीज के खतरे को कम करती है। अगर हम

प्रतिदिन सिर्फ आधा घंटा सैर को दें तो यह हृदय की बीमारियों की आशंका को काफी हद तक कम कर देती है।एक्सरसाइज का एक अन्य लाभदायक पहलू यह भी है कि इसे हम घर के अंदर (ट्रेडमिल की मदद से) और बाहर दोनों जगह कर सकते हैं। इससे आप अपनी क्षमता, लक्ष्य और मेडिकल जरूरतों के हिसाब से कर सकते हैं। **शरीर की मांग के हिसाब से अलग-अलग फॉर्मेट :** कई बार ऐसे मामले भी सामने आते है कि बहुत से लोग जो अपने शरीर के वजन को कम करने के लिये तमाम तरह की कठिन एक्सरसाइज का रास्ता अपनाते हैं या कई बार ऐसा भी होता है कि ज्यादा वजन को लोग, जो उसे कम करने के लिये लंबे समय तक हल्की-फुल्की एक्सरसाइज करते हैं। लेकिन आश्चर्यजनक रूप से उन्हें मनोवांछित परिणाम नहीं मिलते हैं। क्योंकि लोगों की अपनी अतिरिक्त कैलोरी को खत्म करने के लिये मांसपेशियों और ऊर्जा तंत्र की जरूरतें अलग-अलग होती है। एक तरह की एक्सरसाइज किसी एक व्यक्ति के लिये कठिन हो सकती है और दूसरे के लिये वह आसान परिणाम देने वाली हो सकती है। याद रखें क जटिल कसरतें शरीर का कार्बोहाइड्रेट तो तेजी के साथ खत्म करती हैं, लेकिन चर्बी के मामले में ज्यादा कारगर साबित नहीं होतीं। इसलिये जटिल एक्सरसाइज से मोटापा कम करने में ज्यादा मदद मिलने की संभावना कम होती है। लेकिन रनिंग या जागिंग ऐसी कसरतें हैं, जो हर प्रकार के एनर्जी लेवल वाले व्यक्ति के लिये फायदेमंद साबित होती हैं। **ये तरीके हो सकते हैं उपयोगी :** पहले 5 मिनट के लिए धीमी गति से चलें, धीरे-धीरे अपनी गति को बढ़ाएं, यह व्यायाम शुरू करने का सबसे अच्छा तरीका है।साइड वे पर चलना अर्थात पैर के किनारों की ओर दबाव बनाकर चलने से जांघों का व्यायाम होता है। इस हिस्से की मांसपेशियां मजबूत होती हैं, साथ ही मेटाबॉलिज्म भी बेहतर तरीके से काम करता है।पैर की अंगुलियों पर चलने से टांगों की मांसपेशियों का व्यायाम होता है। इस हिस्से का फैट कम होता है तथा कैलोरीज बर्न होती हैं, जिससे टांगे अच्छी शेप में आ जाती हैं।8 की आकृति में चलने से हमारे पेट की पेशियों का व्यायाम होता है।चलते समय कंधों के स्तर तक दोनों हाथों को एक-एक करके हिलाने से शरीर के ऊपरी हिस्से का व्यायाम होता है। शरीर को अच्छी शेप मिलती है।तेज चलें, इसके लिये 100 से 500 मीटर की दूरी तय कीजिए और निर्धारित समय में चल कर इस दूरी को तय करें।धीरे-धीरे दूरी को बढ़ाइए। इससे शरीर में ऑक्सीजन की आपूर्ति बढ़ती है। इस तरह का व्यायाम हृदय की फिटनेस एवं ऊर्जा के स्तर को बढ़ाने में मदद करता है।चलते समय बीच-बीच में रुकने से ठीक से सांस लेने का मौका मिलता है। शरीर के ऊपरी हिस्से की मांसपेशियां रिलैक्स हो जाती हैं तथा निचले हिस्से का बेहतर वर्कआउट होता है।

बच्चों के दिमाग पर गहरा असर डालती है ये बीमारी, मूड स्विंग के अलावा होती है ऐसी दिक्कतें

पांडा सिंड्रोम बीमारी कम उम्र के बच्चों में देखने को मिलती है। ऑब्सेसिव-कंपल्सिव डिसऑर्डर यानी की ध्व्ङ या स्ट्रेप्टोकोकल संक्रमण होने के बाद अचानक से दोनों के लक्षण दिखाई देने पर पांडा सिंड्रोम हो सकता है। वहीं एक स्ट्रेप संक्रमण होने के बाद अचानक से ओसीडी या टिक के लक्षण दिखने की स्थिति में भी पांडा सिंड्रोम हो सकता है। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ के मुताबिक पीडियाट्रिक ऑटोइम्यून न्यूरोसाइकैट्रिक डिसऑर्डर एसोसिएटिड विद स्ट्रप्टोकोकल इंफेक्शन को पांडा सिंड्रोम कहते हैं।

बच्चों को ज्यादा खतराः प्राप्त जानकारी के अनुसार, अधिकतर पांडा सिंड्रोम के लक्षण 3 से 12 साल के बच्चों में देखने को मिलते हैं। हेल्थ एक्सपर्ट्स की मानें तो जन्म के दौरान लड़कियों की अपेक्षा यह लड़को में ज्यादा होता है। वहीं कुछ शोधकर्ताओं का मानना है कि किशोरों या वयस्कों में स्ट्रेप संक्रमण से मानसिक या न्यूरोलॉजिकल लक्षण दिखना असामान्य है। इसके अलावा कई रिसर्चों में यह भी सामने आया है कि पांडा सिंड्रोम एक दुर्लभ बीमारी है।

पांडा सिंड्रोम के लक्षणः हेल्थ एक्सपर्ट्स का मानना है कि हर बच्चे में पांडा सिंड्रोम के अलग-अलग लक्षण भी पाए जा सकते हैं। पांडा सिंड्रोम के लक्षण किसी बच्चे में अचानक से भी शुरू हो सकते हैं। कई बार ऐसा लगता है इसके लक्षण सिर्फ कुछ दिनों या हफ्तों तक रहते हैं। लेकिन एक बार खत्म होने के बाद यह लक्षण दोबारा भी लौट आते हैं। इस दौरान पीड़ित में टेंशन, तनाव, बिस्तर गीला करना, सोने में परेशानी, खाने में अरुचि, मूड या व्यक्तित्व

में चेंजेस आना, गुस्सा करना, फिजूलखर्ची और अटेंशन-डेफिसिट/हाइपरएक्टिविटी डिसऑर्डर (एडीएचडी) के लक्षण दिखाई देते हैं। **न्यूरोलॉजिकल लक्षणः** पांडा सिंड्रोम के न्यूरोलॉजिकल लक्षणों में हाथ से लिखने में समस्या होना, स्कूल में खराब परफॉर्मेंस, को-ऑर्डिनेशन में प्रॉब्लम, मोटर स्किल (मांसपेशियों की गति) में परिवर्तन, ध्यान केंद्रित करने या सीखने में कठिनाई होना और रोशनी व ध्वनि के प्रति संवेदनशील होना शामिल है। **क्यों होता है पांडा सिंड्रोमः** जब आपके बच्चे की प्रतिरक्षा प्रणाली बैक्टीरिया से लड़ने के लिए एंटीबॉडी का उत्पादन करने लगती है,तब स्ट्रेप संक्रमण होता है। हालांकि एंटीबॉडी गलती से अन्य ऊतकों में स्वस्थ कोशिकाओं पर भी हमला कर उन्हें प्रभावित कर सकती हैं। क्योंकि यह कोशिकाएं स्ट्रेप संक्रमण की नकल करती हैं। वहीं कुछ एक्सपर्ट्स का मानना है कि आपके बच्चे के मस्तिष्क में ऊतकों को भी एंटीबॉडी प्रभावित कर सकते हैं।

कॉमर्स में तराशें करियर की राहें

देशी-विदेशी बैंक हों या बहुराष्ट्रीय कंपनियां या फिर सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं का बही-खाता हो, कॉमर्स की जरूरत आज कदम-कदम पर है। सुबह से लेकर शाम तक चढ़ते-उतरते शेयर बाजार के आंकड़े हों, बैंकों में जमा पूंजी पर मिलने वाली ब्याज दर हो, पैसे कमाने की माथापच्ची हो या फिर दो रुपए को चार बनाने का गुना-भाग इन्हें समझने, चलाने और जीवन में आगे बढ़ने की मजबूत नींव तैयार करने वाला कोर्स है कॉमर्स यानी वाणिज्य। **अवसरों का खुला आकाश :** कारपोरेट जगत में भले ही आज मैनेजमेंट यानी एमबीए और बीबीए के छात्रों को प्राथमिकता मिल रही है, लेकिन बीकॉम और बीकॉम ऑनर्स करने वाले छात्र बैंकिंग, बीमा और अन्य वित्तीय संस्थाओं के प्रशासनिक कार्यों के लिए आज भी उपयोगी हैं। इसे करने के बाद बैंक में प्रोबेशनरी अधिकारी या सरकारी संस्थाओं में भी अकाउंटिंग आदि से जुड़े काम में ऐसे छात्रों को ढेरों मौके मिलते हैं। एम कॉम करने के बाद स्कूल और कालेज स्तर पर अध्यापन का काम मिल जाता है। अगर कारपोरेट जगत में जाना है तो ऐसे छात्र एमबीए कर सकते हैं। एक और रास्ता ऐसे छात्रों के लिए सीए और सीएस करने का है। बीकॉम के साथ-साथ इस तरह के कोर्स करने के बाद उनके लिए कारपोरेट जगत के लिए भी प्रवेश का द्वार खुल जाता है। दूसरे विषय के छात्र भी इस क्षेत्र में आते हैं, लेकिन कॉमर्स की पढ़ाई के कारण ऐसे छात्रों को सफलता ज्यादा मिलती है। छात्र चाहे तो सिविल सर्विस और अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं में ट्रेडिशनल कॉमर्स की पढ़ाई करके जा सकता है। यानी कॉमर्स क्षेत्र में कैरियर बंधा हुआ नहीं है। इसका एक व्यापक आधार है। **शैक्षणिक योग्यता :** दसवीं के बाद से ही कॉमर्स विषय की पढ़ाई छात्र शुरू कर सकते हैं। कॉमर्स की स्टडी अब पहले की अपेक्षा अधिक स्पेशल हो गई है। रूसा के तहत कॉमर्स के विषय पढ़ाए जा रहे हैं, चौथे सेमेस्टर के बाद विषय में स्पेशलाइजेशन करवाई जा रही

है। **वेतनमान :** इस क्षेत्र में वेतनमान इस बात पर निर्भर करता है कि आप ने कॉमर्स में किस क्षेत्र को चुना है और आप किस पद पर तैनात हैं। फिर भी इस क्षेत्र में शुरुआती वेतन 15 हजार तक होता है। अध्यापन के क्षेत्र में सरकारी मानकों के हिसाब से 40 हजार से 60 हजार तक वेतन मिलता है। निजी क्षेत्र में तो यह वेतन लाखों के हिसाब से भी बनता है। **कॉमर्स में प्रमुख कोर्स :** बीकॉमबीबीएबीसीएबीकॉम फॉरेन ट्रेडबीकॉम विथ कम्प्यूटरबीकॉम एडवर्टाइजमेंटबीकॉम टैक्सबीकॉम आफिस मैनेजमेंट प्लेन कॉमर्स में ग्रेजुएशन के अलावा बीकॉम विद कम्प्यूटर व टैक्स प्रोसीजर करने के बाद युवा अकाउंटिंग और टैक्स संबंधी क्षेत्र में करियर बना सकते हैं। वर्तमान में इन दोनों ही क्षेत्रों में काम करने वालों की आवश्यकता है। कॉमर्स में ग्रेजुएशन के साथ प्रोफेशनल ट्रेनिंग प्राप्त कर नेशनल और इंटरनेशनल कंपनियों में भी करियर के अवसर प्राप्त हो सकते हैं। डिग्री कोर्सेस के अलावा सीए, सीएस की पढ़ाई कर भी करियर बनाया जा सकता है। कॉमर्स में युवा टैक्सेशन, कम्प्यूटर साइंस, फॉरेन ट्रेड, इंश्योरेंस, कम्प्यूटर एप्लीकेशन आदि में ग्रेजुएशन कर शानदार करियर बना सकते हैं। कॉर्मस के विद्यार्थी कामर्शियलर टैक्स इंस्पेक्टर इन्कम टैक्स आफिसर, सीए, सीएस, कॉस्ट अकाउंट आदि के रूप में करियर बना सकते हैं। **यहां से करें कोर्स :** हिमाचल प्रदेश यूनिवर्सिटी, शिमलापीजी कालेज ,धर्मशाला (हिप्र)राजकीय महाविद्यालय, देहरीडीएवी कालेज, कांगड़ा(हिप्र)कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी, कुरुक्षेत्रश्रीराम कालेज ऑफ कॉमर्स, दिल्लीसेंट जेवियर कालेज, मुंबईसिंबॉयोसिस, पुणेप्रेसिडेंसी कालेज, चेन्नई।

बढ़ता बीएमआई प्रैगनैंसी के लिए साबित हो सकता है खतरा

गर्भावस्था की कुछ सामान्य जटिलताएं मोटी महिलाओं के स्वास्थ्य से जुड़ी होती हैं, जिन में सम्मिलित हैं- गर्भपात। जैस्टेशनल डायबिटीज, उच्च रक्त दाब (इसे जैस्टेशनल हाइपरटैंशन भी कहा जाता है), प्रीऐक्लैंप्सिया, प्रसव के दौरान सामान्य से अधिक रक्तस्राव

आदि। हालांकि ये समस्याएं किसी भी गर्भवती महिला को हो सकती हैं। इस से कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह मोटापे की शिकार है या नहीं, लेकिन बीएमआई (बौडी मास इन्डैक्स) अधिक होने से खतरा बढ़ जाता है। मोटोपे का डायग्नोसिस बीएमआई की गणना कर के किया जाता है, जो वजन और लंबाई पर आधारित होता है। बीएमआई 30 या उस से अधिक होना यकीनन मोटापे को परिभाषित करता है। बीएमआई जितना अधिक होगा, उतना ही गर्भावस्था के दौरान जटिलताएं होने का खतरा अधिक होगा। अगर किसी महिला का बीएमआई 30 या उस से अधिक है, तो इस की संभावना है कि उसे प्रसव पीड़ा के लिए प्रेरित करना पड़ेगा या उसे सिजेरियन सैक्शन का विकल्प चुनना होगा। अगर किसी महिला का बीएमआई 40 से अधिक है, तो डाक्टरों के लिए बच्चे के विकास के बारे में जानकारी प्राप्त करना कठिन हो जाएगा। **बच्चे के लिए खतरा -ः अगर गर्भावस्था के दौरान आप का वजन अधिक है, तो आप के बच्चे को कुछ निश्चित खतरे होने की आशंका बढ़ जाएगी। इन में सम्मिलित हैंः - समयपूर्व प्रसव (37 सप्ताह के पहले)। - जन्म के समय वजन अधिक होना। - मृत बच्चे का जन्म। - दुर्लभ जन्मजात विकृतियां। - क्रौनिक कंडीशंस जो मस्तिष्क, स्पाइनल कार्ड, हृदय से संबंधित होती हैं, का खतरा या फिर आगे चल कर डायबिटीज की चपेट में आना। गर्भावस्था से पहले वेट लौस -ः** अगर आप ने पहले ही वेट लौस सर्जरी करा ली है, तो यह जरूरी सुझाव है कि गर्भधारण के लिए कम से कम 18 महीने प्रतीक्षा करें। मोटापे से ग्रस्त महिलाओं में वजन कम करने से गर्भधारण करने की संभावना बढ़ जाती है। अगर वेट लौस सर्जरी के बाद गर्भधारण की योजना बनाई जाए तो यह मां और-बच्चे दोनों के लिए सुरक्षित हो सकती है। इस से मोटापे के कारण गर्भावस्था से जुड़े खतरे कम हो जाते हैं। **गर्भावस्था के बाद वेट लौस -ः** गर्भावस्था के दौरान वजन बढ़ना आम बात है, लेकिन बहुत सी महिलाओं को इसे कम करना बहुत मुश्किल लगता है। जिन महिलाओं का वजन गर्भावस्था के पहले अधिक था उन के लिए प्रसव के बाद वजन कम करना और अधिक कठिन हो सकता है। इस के कारण जैवविज्ञानी, हारमोनल या पर्यावर्णीय हो सकते हैं। उन महिलाओं के लिए जिन का बीएमआई 40 या उस से अधिक है, यह एक बहुत ही गंभीर समस्या हो सकती है। इसलिए बैरिएट्रिक सर्जरी उन महिलाओं के लिए जो अत्यधिक मोटी हैं, एक बहुत ही अच्छा विकल्प है। लेकिन बच्चे के जन्म के बाद उन्हें कम से कम 12 महीने इंतजार करना चाहिए। **गर्भावस्था में रहें स्वस्थ -ः** रिश्ते में गरमाहट लाना चाहती हैं, तो इन बातों का ध्यान जरूर रखें कुछ सामान्य स्टैप्स जैसे स्वस्थ खाने, नियमित ऐक्सरसाइज करने और वजन न बढ़न के लिए दिए गए दिशानिर्देशों का पालन करने वाली महिला अपने बच्चे के स्वास्थ्य की सुरक्षा कर सकती है। गर्भवती होने पर वजन कम करने लिए डाइटिंग करना बच्चे के लिए नुकसानदायक हो सकता है। इस दौरान रोज खूब पानी पीएं, सब्जियां और फल अधिक मात्रा में खाएं। नियमित अंतराल पर पोषक भोजन का सेवन थोड़ीथोड़ी मात्रा में करे। फास्ट फूड, फ्राइड फूड, पैकेज्ड फूड सोडा, पेस्ट्री आदि का सेवन न करें। स्वस्थ डाइट लेने के साथसाथ सप्लिमैंटस लेने की भी जरूरत होती है, जिन में विटामिन डी और फौलिक ऐसिड आदि सम्मिलित होते हैं। अपने शरीर को गर्भावस्था में हो रहे बदलावों से निबटने लिए तैयार करने के लिए गर्भावस्था में नियमित रूप से ऐक्सरसाइज करना बहुत जरूरी है। यह आप के भार का प्रबंधन करने के सब से अधिक प्रभावी उपायों में से एक है। अगर आप गर्भावस्था से पहले ऐक्सरसाइज नहीं कर रही थीं, तो यह सही समय नहीं है कि आप कड़ी ऐक्सरसाइज शुरू कर दें। आप प्रतिदिन 5 या 10 मिनट तक ऐक्सरसाइज करने से शुरुआत करें। सब से महत्त्वपूर्ण है कि आप अपने शरीर की सुनें। अगर आप को कोई परेशानी हो रही है तो वर्कआउट करना बंद कर दें। अगर कोई इमरजैंसी हो तो तुरंत डाक्टर से संपर्क करें।

वेडिंग प्लानर बनकर सँवारें कॅरियर, लाखों रुपए कमा सकते हैं हर महीने

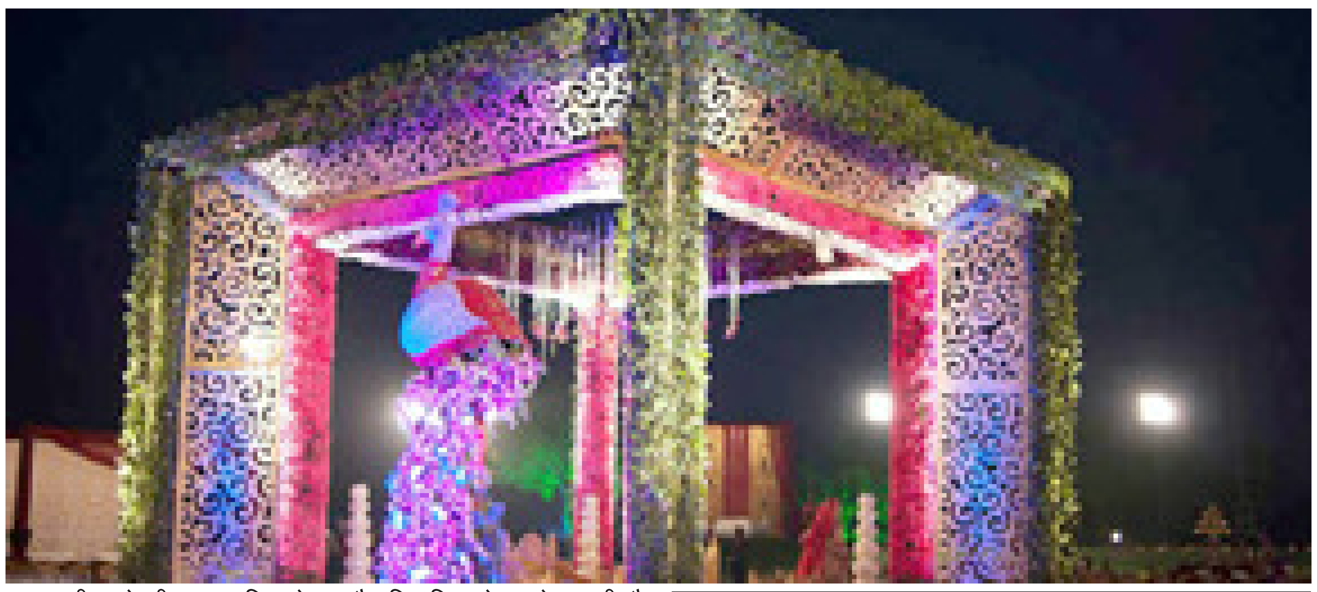

शादी भले ही हर व्यक्ति के जीवन का एक सुखद समय हो लेकिन इसकी तैयारी वास्तव में इतनी भी आसान नहीं होती। इसमें आपको हर छोटी-बड़ी चीज का ख्याल रखना होता है। वैसे भी वर्तमान समय में विवाह सिर्फ एक रीति तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह लोगों के लिए स्टेटमेंट की बात बनता जा रहा है। इतना ही नहीं, इसमें कई आयाम जैसे थीम वेडिंग या डेस्टिनेशन वेडिंग भी जुड़ गए हैं। जिसके कारण इसे स्वयं आर्गेनाइज करना काफी मुश्किल हो गया है। ऐसे में अपनी परेशानी को आसान बनाने और विवाह को एक बेहतर स्वरूप देने के लिए आप प्रोफेशनल्स की मदद लेते हैं, जिन्हें वेडिंग प्लानर कहा जाता है। बीते काफी सालों में इस क्षेत्र में कॅरियर का स्कोप काफी बढ़ा है। **स्किल्स** : वेडिंग प्लानिंग के क्षेत्र में सफलता के ख्वाब देख रहे व्यक्तियों में कुछ गुणों का होना बेहद आवश्यक है। सबसे पहले तो आपको अपना काम पसंद होना चाहिए। यह काम देखने में भले ही आकर्षक लगता हो लेकिन वास्तव में वेडिंग प्लॉन करना इतना भी आसान नहीं होता। इस क्षेत्र में अलग पहचान बनाने के लिए आपका इनोवेटिव और क्रिएटिव होना तो जरूरी है ही, साथ ही आपकी कम्युनिकेशन स्किल भी बेहतर होनी चाहिए। वहीं आपमें इतनी समझ होनी चाहिए कि आप यह समझ सकें कि क्लाइंट खुद के लिए क्या चाहता है। एक बेहतर वेडिंग प्लॉनर क्लाइंट की डिमांड और मार्केट के लेटेस्ट ट्रेंड को मिलाकर एक बेहतर रिजल्ट देता है। याद रखें कि अगर इस क्षेत्र में आप अपने क्लाइंट को संतुष्ट करने में सक्षम नहीं होंगे तो आपके लिए बहुत दूर तक जाना संभव नहीं है क्योंकि कॉन्टैक्टस भी इस क्षेत्र में एक अहम भूमिका निभाते हैं। वेडिंग प्लानिंग के लिए आपको एक टीम वर्क की जरूरत होती है, इसलिए आपकी बेहतर लीडरशिप क्वालिटी आपके काम को आसान बनाएगी। अंत में आप जिन लोगों के लिए वेडिंग प्लॉन कर रहे हैं, उनके रीति-रिवाजों व धार्मिक मान्यताओं की भी जानकारी रखें ताकि आपके काम के दौरान किसी प्रकार की कोई समस्या पैदा न हो। **कार्यक्षेत्र :** एक वेडिंग प्लानर का मुख्य काम अपने क्लाइंट की पसंद, उनकी डिमांड व बजट के अनुसार एक परफेक्ट वेडिंग प्लॉन करना होता है। उनका काम काफी विस्तृत होता है। आने वाले मेहमानों की लिस्ट तैयार करने से लेकर आपको भोजन, सजावट, विवाह के परिधान, संगीत-मेंहदी कार्यक्रम, फोटोग्राफी आदि हर चीज का बखूबी इंतजाम करना होता है। इतना ही नहीं, अगर आपके क्लाइंट की कोई विशेष डिमांड है, तो उसे भी पूरा करना आपका काम है। **योग्यता** इस क्षेत्र में कदम रखने के लिए अलग से वेडिंग प्लानिंग कोर्स उपलब्ध नहीं है लेकिन आप इवेंट मैनेजमेंट का कोर्स करके इस क्षेत्र में अपने कदम बढ़ा सकते हैं। इवेंट मैनेजमेंट का डिप्लोमा कोर्स बारहवीं के बाद ही बेहद आसानी से किया जा सकता है। वहीं पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा कोर्स करने के लिए पहले आप अपनी ग्रेजुएशन को पूरा करें। **संभावनाएं :** चूंकि एक ग्रैंड वेडिंग हर किसी का सपना होती है और लोग शादी में कम से कम टेंशन लेकर उसे पूरी तरह इन्जॉय करना चाहते हैं, इसलिए वेडिंग प्लानर की डिमांड काफी बढ़ने लगी है। आप भी अपने कॅरियर की शुरूआत में किसी वेडिंग प्लानिंग कपंनी के साथ जुड़कर काम कर सकते हैं और जब आपका अनुभव व कॉन्टैक्टस बिल्डअप हो जाए तो आप खुद की वेडिंग कंपनी भी खोल सकते हैं। **आमदनी :** इस क्षेत्र में आपकी कमाई इस बात पर निर्भर करेगी कि आपको कौन सा प्रोजेक्ट मिलता है। इतना ही नहीं, हर वेडिंग प्लानर क्लाइंट की डिमांड और अपनी सर्विसेज के अनुसार चार्ज करता है। इस क्षेत्र में कमाई की कोई सीमा नहीं है। अगर आप बेहतर सर्विसेज दे पाते हैं तो आप प्रतिमाह लाखों तक में भी कमा सकते है। वहीं अगर आप किसी वेडिंग प्लानिंग कंपनी के साथ जुड़कर काम करते हैं तो आपको शुरूआती दौर में बतौर सैलरी दस से बीस हजार रूपए आसानी से कमा सकते हैं।

प्रमुख संस्थान

इवेंट मैनेजमेंट डेवलॅपमेंट इंस्टीट्यूट, विभिन्न केन्द्र।
नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ इवेंट मैनेजमेंट, विभिन्न केन्द्र।
इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ इवेंट मैनेजमेंट, मुंबई।
एमिटी इंस्टीट्यूट ऑफ इवेंट मैनेजमेंट,दिल्ली।

अगर दिमाग करना हो तेज तो अपनाए ये तरीका!

एक नये अध्ययन में सामने आया है कि वाद्य यंत्र को सीखने और एक नई भाषा को बोलना सीखने से आपका दिमाग ज्यादा प्रभावी तरीके से काम करने में सक्षम हो सकता है। अध्ययन में पाया गया कि संगीतज्ञों और द्विभाषी लोग में काम की याद्दाश्त बेहतर होती है। न्यूयॉर्क एकेडमी ऑफ साइंसेज के जर्नल एन्नल्स में प्रकाशित अध्ययन में शोधकर्ताओं ने कहा कि संगीत या एक से ज्यादा भाषाओं की जानकारी की पृष्ठभूमि वाले व्यक्ति विभिन्न दिमागी नेटवर्क सक्रिय करते हैं और उनकी दिमागी गतिविधि कम होती है। कनाडा में बेक्रेस्टस रॉटमैन रिसर्च इंस्टीट्यूट के वरिष्ठ वैज्ञानिक क्लाउडे अलेन ने कहा,ये नतीजे दिखाते हैं कि समान काम करने के लिये संगीतकारों और द्विभाषियों को कम प्रयास करने पड़ते हैं, यह ज्ञान संबंधी गिरावट के खिलाफ भी उनका बचाव करती है और डिमेंशिया के खतरों को भी टालती है। अलेन ने कहा, हमारे नतीजे यह भी दिखाते हैं कि एक व्यक्ति के अनुभव, जो एक वाद्य यंत्र बजाना सीखता है या एक अन्य भाषा सीखता है, यह तय कर सकते हैं कि दिमाग कैसे काम करता है और किस नेटवर्क का इस्तेमाल होता है। संगीतकार और द्विभाषी लोग दिखाते हैं कि उनमें काम को लेकर बेहद अच्छी याद्दाश्त , चीजों को दिमाग में रखने की बेहतर क्षमता जैसे फोन नंबरों, निर्देशों को याद रखना, और दिमागी गणित की अच्छी क्षमता होती है।

हीमोफीलिया से पीड़ित बच्चे की देखभाल के लिए अपनाएं ये टिप्स

हीमोफीलिया अनुवांशिक रोग होता है, यह बच्चों को अपने माता-पिता से विरासत में मिलता है। हीमोफीलिया में खून के थक्के नहीं बन पाते हैं और वह जम नहीं पाते हैं। ऐसी स्थिति में जब किसी को चोट आदि लगती है तो उसके शरीर से अधिक खून बनता हैं। क्योंकि शरीर में थक्के न बन पाने के कारण लगातार खून बहता रहता है। हमारे खून में क्लॉटिंग प्रोटीन पाया जाता है, जो प्रोटीन रक्त में थक्कों के निर्माण में सहायक होते हैं। जिससे रक्तस्राव को रोकने में मदद मिलती है। ऐसे में बच्चों को कई गंभीर परेशानियों का सामना करना पड़ता है। बच्चों की मांसपेशियों या जोड़ों में ब्लीडिंग की समस्या हो सकती है। जिनके जरिए आप अपने बच्चों का ध्यान रख सकते

हैं।**इन बातों का रखें खास ख्यालः** यदि किसी बच्चे को हीमोफीलिया होता है, तो ऐसी स्थिति में अधिक से अधिक प्रयास यही करे कि बच्चे को चोट न लगे। क्योंकि चोट लगने से ब्लीडिंग होगी समय-समय पर बच्चे का डॉक्टर से चेकअप जरूर कराते हैं। डॉक्टर द्वारा दी गई दवाएं रेगुलर तौर पर बच्चे को जरूर दें। डॉक्टर से यह भी पूछ लें कि बच्चों को किन खेलों से दूरी बनानी चाहिए। इसके साथ ही किसी भी तरह की सर्जरी से पहले डॉक्टर का परामर्श जरूर लें। **इन बातों पर दें ध्यानः** हेल्थ एक्सपर्ट्स के मुताबिक यदि बच्चे को हीमोफिलिया है तो बच्चे के स्कूल स्टाफ, दोस्तों आदि को इसकी जानकारी जरूर दें। साथ ही आपातकाल स्थिति में बच्चे को किस तरह की देखभाल की जरूरत है, यह जानकारी भी देनी चाहिए। इसके अलावा ब्लीडिंग को कैसे रोकना है, या अगर छोटी-मोटी चोट लगी है, तो उस दौरान क्या करना चाहिए। डॉक्टर से कब परामर्श लेनी है और उनके पास कब जाना है या बुलाना है। इन सब बातों के बारे में जानकारी होनी जरूरी है।

'यह सीजन तुमको क्या सीखा के गया..'चेन्नई की जीत के बाद एमएस धोनी ने टीम से पूछा

नई दिल्ली। इंडियन प्रीमियर लीग 2023 का खिताब जब से चेन्नई सुपर किंग्स ने अपनी झोली में डालकर इतिहास रचा है तभी से टीम लगातार चर्चा में बनी हुई है। कभी टीम के सफलतम कप्तान महेंद्र सिंह धोनी की चर्चा होती तो कभी मैच विनर रविंद्र जडेजा की। इसी बीच एक नई जानकारी सामने आई है। महेंद्र सिंह धोनी ने जीत के बाद अपनी चेन्नई सुपर किंग्स की टीम से खास बातचीत की है। गौरतलब है कि चेन्नई सुपर किंग्स के कप्तान एमएस धोनी अपनी बात कहने वालों में से हैं। आमतौर पर महेंद्र सिंह धोनी जो भी महसूस करते हैं वो बोलते है और अपनी बात खुलकर सभी के सामने रखते है। हाल ही में टीम के तेज गेंदबाज तुषार देशपांडे ने खुलासा किया कि धोनी ने फाइनल में गुजरात टाइटन्स के खिलाफ आईपीएल 2023 की जीत के बाद ड्रेसिंग रूम में अपने खिलाड़ियों से खास बातचीत की थी। बता दें कि ये महेंद्र सिंह धोनी और चेन्नई सुपर किंग्स के लिए ये इंडियन प्रीमियर लीग का पांचवा खिताब था। मगर कप्तान महेंद्र सिंह धोनी चाहते थे

की टीम के कई खिलाड़ी जिनका ये पहला खिताब है वो जमीन से ही जुड़े रहे। खिताब जीतने के बाद भी महेंद्र सिंह धोनी ने इसी का ज्ञान अपने खिलाड़ियों को दिया।

गौरतलब है कि सोमवार को अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में जीटी पर सीएसके की 5 विकेट से जीत के बाद बोलते हुए, धोनी ने पुष्टि की कि वह अगले सत्र में भी खेलकर खुद को चुनौती देने की संभावना रखते हैं। आईपीएल का सीजन खत्म होने और टीम के चैंपियन बनने के बाद अपने साथियों को संदेश देकर सीख भी दी है। वहीं तुषार देशपांडे और शिवम दूबे की सीएसके जोड़ी ने खुलासा किया कि कैसे धोनी ने दो युवाओं के लिए दबाव में खेलना और कामयाब होना आसान बना दिया। शिवम दुबे ने कहा कि माही भाई ने क्लैरिटी दी थी कि मुझे क्या करना है और मेरा रोल क्या होने वाला है। ये काफी सिंपल था क्योंकि तुझे जाकर टीम का रन रेट बढ़ाना है। उन्होंने कहा था कि बस अपने दिए गए कार्य को पूरा जरुर करना। वहीं तुषार देशपांडे, जिसने टीम के लिए 21 विकेट हासिल किए, ने बताया कि कैसे धोनी ने फाइनल में 56 रन देने के बावजूद युवा तेज गेंदबाज का समर्थन किया। तुषार ने कहा कि एक बार जब मैंने अच्छी गेंदबाजी नहीं की तो वह आए और कहा कि इंपैक्ट प्लेयर नियम के साथ 200 से अधिक का स्कोर सामान्य है। उन्होंने वो गारंटी दी जो आमतौर पर युवाओं को चाहिए होती है। देशपांडे ने बताया की जीत के बाद धोनी ने सभी खिलाड़ियों से पूछा की टूर्नामेंट के दौरान क्या सही और क्या गलत हुआ था। देशपांडे ने अपने खिलाड़ी के लिए 41 वर्षीय के संदेश को याद करते हुए कहा कि उन्होंने ड्रेसिंग रूम में सभी को यह बताने के लिए कहा कि आईपीएल 2023 सत्र के दौरान क्या सही हुआ और क्या गलत हुआ। जीत को लेकर महेंद्र सिंह धोनी ने कहा कि सभी की मेहनत रंग लाई है, लेकिन याद रखें कि इस साल हमने क्या सही किया और कहां गलत किया। माही भाई ने कहा, 'ये सीजन तुमको क्या सीखा के गया है, और आगे क्या करना है, ये जरूर सोचना।

एडिडास ने शेयर की भारतीय क्रिकेट टीम की नई जर्सी के लुक, फैंस हुए खुश

नई दिल्ली। इंडियन प्रीमियर लीग 2023 के खत्म होने के बाद अब भारतीय क्रिकेट टीम वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप 2023 के फाइनल मुकाबले के लिए कमर कस रही है। वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप 2023 का फाइनल मुकाबला सात जून से लंदन के केनिंगटन ओवल मैदान में खेला जाना है। वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल के लिए टीम इंडिया के खिलाड़ी इंग्लैंड पहुंच चुके हैं। वहीं भारतीय टीम के खिलाड़ियों ने टेस्ट चैंपियनशिप के लिए इंग्लैंड में जोरदार प्रैक्टिस की शुरुआत कर दी है। इसी बीच भारतीय क्रिकेट टीम नए अंदाज में फाइनल मुकाबले में दिखेगी। एडिडास ने टीम इंडिया की नई ट्रेनिंग किट और जर्सी फैंस के बीच शेयर की है। बता दें कि भारतीय टीम के खिलाड़ी प्रैक्टिस करने के दौरान नई जर्सी में दिखेंगे। इसे लेकर एडिडास ने प्रैक्टिस सेशन से टीम इंडिया के कुछ फोटोज शेयर किए है। एडिडास द्वारा प्रायोजित नए क्रिकेट गियर के साथ टीम इंडिया सबसे प्रत्याशित कार्यक्रम में भी जाएगी। गौरतलब है कि दुनिया के क्रिकेट फैंस क्रिकेट के इस महाइवेंट के आयोजन को लेकर बेहद उत्साहित है। भारतीय टीम नई सफेद गेंद के साथ नई जर्सी में खेलने के लिए तैयार है। इस नई जर्सी की कई फोटो सोशल मीडिया पर जारी की गई है। इन्हें फैंस काफी शेयर कर

रहे है। नई जर्सी का बेसब्री से इंतजार कर रहे भारतीय क्रिकेट टीम के फैंस अब तक सामने आई फोटो को काफी पसंद कर रहे है। हालांकि अब तक पूरी जर्सी का लुक सामने नहीं आया है मगर कुछ झलकियों को देखकर भी फैंस काफी खुश है।

हाल ही में बीसीसीआई ने घोषणा की थी कि एडिडास ब्रैंड भारतीय टीम के साथ जुड़ रहा है। बीसीसीआई को खेल के परिधान के लिए एडिडास के रूप में नया प्रायोजक मिला है। नए प्रायोजक के लोगो वाली नई किट का अनावरण कर दिया गया है। वर्तमान में किलर जीन्स प्रायोजक है, जिसके साथ अनुबंध 31 मई को खत्म होगा। इसके बाद भारतीय क्रिकेट टीम के प्रायोजक के तौर पर एडिडास होगा। वहीं नए एड़िडास के लोगो वाली नई किट में खिलाड़ियों ने 26 मई को तस्वीरें भी पोस्ट की है। नई जर्सी में शार्दुल ठाकुर, उमेश यादव, राहुल द्रविड़, विक्रम राठौर समेत अन्य टीम के स्टाफ दिख रहे है।

क्रिकेट इतिहास की वह बेहतरीन पारी जिसमें गेंदबाजों पर कहर बनकर टूटे थे विव रिचड्र्स

नई दिल्ली। क्रिकेट के इतिहास में कुछ ऐसे मौके आए हैं जिसके चर्चा आज भी होती है। क्रिकेट में कई ऐसी पारियां भी खेली गई हैं जिनकी बदौलत खिलाड़ी क्रिकेट के इतिहास में हमेशा के लिए अमर हो गए हैं। वेस्टइंडीज के क्रिकेटर सर विव रिचड्र्स किसी परिचय के मोहताज नहीं है। उनके बल्ले से निकले हर शॉट को लोग बार-बार देखना पसंद करते हैं। भले ही उन्होंने वेस्टइंडीज की ओर से क्रिकेट खेला लेकिन उनके प्रशंसक दुनिया में हर जगह मिल जाएंगे। आज हम उनकी एक ऐसी पारी की बारे में आपको बताने जा रहे हैं जिसको जानकर आप भी आश्चर्य हो जाएंगे।

आज से 38 साल पहले विव रिचड्र्स ने एक ऐसी तूफानी बल्लेबाजी की थी कि जिसकी मिशाल अब भी दी जाती है। अपनी इस पारी की बदौलत उन्होंने 1 दिन में कई बड़े रिकॉर्ड ध्वस्त कर दिए थे। अपनी विस्फोटक बल्लेबाजी की

बदौलत उन्होंने 1 दिन में 300 रन बना डाले थे। इस दौरान उन्होंने 258 गेंदों का सामना किया था और 322 रन बनाए थे जिसमें 42 चौके और आठ लंबे छक्के शामिल थे। इस पारी की सबसे खास बात यह थी कि रिचड्र्स ने एक ही दिन में 300 रन बना डाले थे। उस वक्त वेस्टइंडीज की तरफ से फर्स्ट क्लास क्रिकेट में यह सर्वश्रेष्ठ पारी थी और यही कारण है कि इसकी आज की चर्चा होती है। अपनी इस पारी में विव रिचड्र्स ने 244 गेंदों में तिहरा शतक जमाया था जबकि सिर्फ 130 गेंदों में 200 रन बनाए थे। इनकी पारी की बदौलत समरसेट ने 5 विकेट खोकर 566 रन बनाए थे। लेकिन इस मुकाबले में कोई रिजल्ट नहीं निकला था। यह मुकाबला ड्रॉ रहा था। विव रिचड्र्स क्रिकेट के बेहतरीन खिलाड़ियों में से एक हैं जिन्होंने 1974 में पहली बार डेब्यू किया। अपने करियर में 121 टेस्ट और 187 एकदिवसीय मुकाबले उन्होंने खेले हैं। वह दुनिया के महान बल्लेबाजों में से एक हैं।

पूर्व भारतीय फुटबॉलर मेहताब ने पहलवानों का समर्थन किया

कोलकाता। पीड़ित पहलवानों के साथ एकजुटता दिखाते हुए भारत के पूर्व मिडफील्डर मेहताब हुसैन बुधवार को शहर में विरोध मार्च से जुड़े जिसकी अगुआई पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने की। पहलवान भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) के निवर्तमान अध्यक्ष बृजभूषण शरण सिंह को गिरफ्तार करने की मांग कर रहे हैं जिन पर एक नाबालिग सहित कई महिला पहलवानों के कथित यौन उत्पीड़न का आरोप लगा है। ईस्ट बंगाल के पूर्व मिडफील्डर मेहताब ने पीटीआई से कहा, ''जब यही खिलाड़ी ओलंपिक में पदक जीतते हैं तो प्रधानमंत्री के पास चाय पर उनकी मेजबानी करने और फोटो खिंचवाने का समय होता। उन्होंने कहा, ''अगर प्रधानमंत्री पांच मिनट निकालकर उनकी बात सुन लेने तो कुश्ती का यह नाटक इस स्तर पर नहीं पहुंचता।'' मंगलवार को पहलवान हरिद्वार में हर की पौड़ी पर पहुंचे और अपने पदक गंगा में विसर्जित करने की धमकी दी लेकिन बाद में खाप और किसान नेताओं ने उन्हें रोक दिया।

भारतीय पहलवान के साथ हुआ बर्ताव बहुत परेशान करने वालाः आईओसी

नयी दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) ने विरोध प्रदर्शन कर रहे पहलवानों के खिलाफ दिल्ली पुलिस के बर्ताव की कड़े शब्दों में निंदा करते हुए कहा कि यह 'बहुत परेशान करने वाला' था। आईओसी की प्रतिक्रिया यूनाइटेड वर्ल्ड रेसलिंग (यूडब्ल्यूडब्ल्यू) द्वारा जंतर मंतर पर अपने विरोध प्रदर्शन के दौरान पहलवानों को हिरासत में लेने की आलोचना के बाद आई है। कुश्ती के इस वैश्विक निकाय ने निर्धारित समय के भीतर अपना चुनाव कराने में विफल रहने पर इस राष्ट्रीय महासंघ को निलंबित करने की धमकी दी थी। साक्षी मलिक, विनेश फोगाट, बजरंग पूनिया और संगीता फोगाट जैसे शीर्ष पहलवानों ने भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) के पूर्व अध्यक्ष बृजभूषण शरण सिंह पर यौन शोषण का आरोप लगाया है।

आईओसी से जारी बयान के मुताबिक, '' सप्ताहांत में भारतीय कुश्ती खिलाड़ियों के साथ हुआ व्यवहार बहुत परेशान करने वाला था। आईओसी गंभीरता से चाहता है कि पहलवानों द्वारा लगाए गए आरोपों की स्थानीय कानून के अनुसार निष्पक्ष आपराधिक जांच की जानी चाहिये।'' उन्होंने कहा, '' हमें पता चला है कि इस तरह की

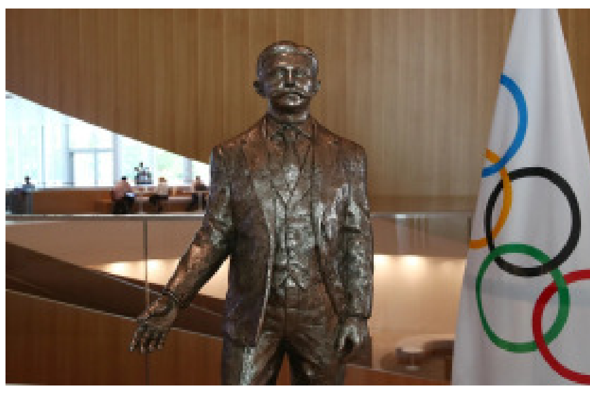

आपराधिक जांच की दिशा में पहला कदम उठाया जा चुका है, लेकिन ठोस कार्रवाई के सामने आने से पहले और कदम उठाने होंगे। हम आग्रह करते हैं कि इस प्रक्रिया के दौरान इन पहलवानों की सुरक्षा पर ध्यान दिया जाये और इस जांच को तेजी से पूरी की जाये।''

दिल्ली पुलिस ने साक्षी के साथ विश्व चैंपियनशिप की कांस्य विजेता विनेश और एक अन्य ओलंपिक पदक विजेता बजरंग को हिरासत में लिया और बाद में उनके खिलाफ कानून और व्यवस्था के उल्लंघन के लिए प्राथमिकी दर्ज की। पहलवान और उनके समर्थक अनुमति नहीं मिलने के बावजूद सुरक्षा घेरा तोड़कर महिला 'महापंचायत' के लिए नये संसद भवन की ओर बढ़ने की कोशिश कर रहे थे। दिल्ली पुलिस ने उन्हें रोकने की कोशिश और फिर उन्हें जबरदस्ती बस में डाल कर ले गये। पहलवान एक नाबालिग सहित कई महिला पहलवानों का यौन उत्पीड़न करने के आरोप में बृजभूषण को गिरफ्तार करने की मांग कर रहे हैं।

आईओसी ने अपने बयान में आगे कहा, '' आरोपों की शुरुआत से ही आईओसी यूडब्ल्यूडब्ल्यू के संपर्क में है। यूडब्ल्यूडब्ल्यू ने पहले ही इस मामले पर अपने कदम उठाये है।'' उन्होंने कहा, '' आईओसी इस मुद्दे को संबोधित करने के लिए यूडब्ल्यूडब्ल्यू का समर्थन करता है क्योंकि यह भारत में कुश्ती के खेल के शासन से संबंधित है। हमें उन्होंने सूचित किया है कि डब्ल्यूएफआई के (पूर्व) अध्यक्ष वर्तमान में प्रभारी नहीं हैं।'' आईओसी ने आईओए से खिलाड़ियों की सुरक्षा के साथ डब्ल्यूएफआई के चुनावों को योजना के अनुसार और अंतरराष्ट्रीय महासंघ के रूप में यूडब्ल्यूडब्ल्यू के नियमों के अनुरूप सुनिश्चित करने को कहा है।

कोनवे को सीखते रहने की विलियमसन की लत लग गई है : ब्रेसवेल

ऑकलैंड। न्यूजीलैंड के पूर्व स्पिनर जॉन ब्रेसवेल का मानना है कि करिश्माई बल्लेबाज डेवोन कॉनवे को पिछली गलतियों से सीखते रहने और अपनी बल्लेबाजी तकनीक में तेजी से सुधार करने की 'केन विलियमसन की लत' लग गई है। न्यूजीलैंड की टीम में देरी से 29 साल की उम्र में जगह बनाने वाले कॉनवे ने 2021 में इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट पदार्पण पर दोहरा शतक जड़ा था और सबसे लंबे प्रारूप में ऐसा करने वाले केवल सातवें बल्लेबाज बन गए। अब 31 बरस के कॉनवेने अपने दूसरे इंडियन प्रीमियर लीग सत्र में चेन्नई सुपरकिंग्स की खिताबी जीत में अहम भूमिका निभाते हुए छह अर्धशतक की मदद से 51 से अधिक की औसत से 672 रन बनाए और इस दौरान नाबाद 92 रन उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर रहा। रुतुराज गायकवाड़ के साथ उनकी पहले विकेट की साझेदारियों ने

सुपरकिंग्स के रिकॉर्ड बराबर करने वाले पांचवें आईपीएल खिताब की नींव रखी। शुभमन गिल और फाफ डुप्लेसी के बाद वह ऑरेंज कैप की दौड़ में तीसरे स्थान पर रहे। न्यूजीलैंड के लिए 41 टेस्ट में 102 विकेट चटकाने और 1000 से अधिक रन बनाने वाले ब्रेसवेल ने 'एसईएन रेडियो' से कहा, ''मुझे लगता है कि वह तीनों प्रारूपों में सामंजस्य बैठाने और कौशल के मामले में पूरी तरह से जादूगर है।'' उन्होंने कहा, ''जिस तरह से वह हर समय बेहतर क्रिकेटर बनता जा रहा है, वह मुझे पसंद है।

दक्षिण कोरिया को रौंद कर भारत जूनियर एशिया कप हॉकी के फाइनल में

सालालाह। भारतीय हॉकी टीम ने बुधवार को यहां दक्षिण कोरिया को एकतरफा मुकाबले में 9-1 से हराकर जूनियर एशिया कप के फाइनल में प्रवेश किया। गुरुवार को होने वाले खिताबी मुकाबले में भारत के सामने मलेशिया और पाकिस्तान के बीच होने वाले दूसरे सेमीफाइनल के विजेता की चुनौती होगी। धामी बोबी सिंह ने हैट्रिक गोल कर भारत के जीत के अंतर को बढ़ाया। वह 'प्लेयर ऑफ द मैच' चुने गये। धामी ने 31वें, 39वें और 55वें मिनट में गोल किया तो वहीं लाकरा सुनीत ने 13वें मिनट में भारत का खाता खोला। मैच के 19वें मिनट में हुंदल अरिजीत सिंह ने बढ़त को दोगुना कर दिया। अंगद वीर सिंह और उत्तम सिंह ने क्रमशः 34वें और 38वें मिनट में गोल किया जिससे भारतीय टीम ने तीसरे क्वार्टर के बाद अपनी बढ़त को 6-0 कर ली। कोरियाई टीम ने हालांकि आखिरी क्वार्टर में बेहतर खेल दिखाया।

पाकिस्तान के लिए होगी बड़ी राहत,डब्ल्यूटीसी फाइनल से बाहर होने के बावजूद भी आईसीसी देगा इतने लाख रुपए

नई दिल्ली। इंग्लैड के ओवल में भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच वर्ल्ड टेस्ट चैम्पियनशिप 2023 का फाइनल मुकाबला खेला जाएगा। इसके लिए दोनों ही टीमें प्रैक्टिस भी शुरू कर चुकी हैं। आईसीसी की ओर फाइनल जीतने वाली टीम को पुरस्कार के रूप में कितनी राशि मिलेगी इसका ऐलान भी किया जा चुका है। इस ऐलान से पाकिस्तान के लिए भी राहत भरी खबर है। दरअसल, आईसीसी की ओर विजेता और उपविजेता के अलावा अन्य टीमों को भी पुरस्कार राशि दी जाएगी।

दी गई जानकारी के मुताबिक भारत और आस्ट्रेलिया के बीच विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप फाइनल के विजेता को 16 लाख डॉलर ईनामी राशि के तौर पर मिलेंगे जबकि उपविजेता को आठ लाख डॉलर दिये जायेंगे। डब्ल्यूटीसी के पिछले संस्करण के लिए पुरस्कार राशि में कोई बदलाव नहीं हुआ है। पिछली बार न्यूजीलैंड को भी 16 लाख डॉलर मिले थे। न्यूजीलैंड ने भारत को हराकर विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप का फाइनल

मुकाबला जीता था। विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप की कुल 38 लाख डॉलर ईनामी राशि में से सभी नौ टीमों को हिस्सा मिलेगा। दक्षिण अफ्रीका को 2021-23 में तीसरे स्थान पर रहने के लिये 450000 डॉलर मिलेंगे। इंग्लैंड को चौथे स्थान पर रहने के 350000 डॉलर मिलेंगे। श्रीलंका को पांचवें स्थान पर रहने के दो लाख डॉलर दिये जायेंगे। बाकी टीमों को एक-एक लाख डॉलर मिलेंगे। पाकिस्तान के अलावा बांग्लादेश, वेस्टइंडीज और न्यूज़ीलैंड को भी एक-एक लाख डॉलर मिलेंगे।

सैन्य निर्माण में इजाफा, सैटेलाइट तस्वीरों से खुलासा,एलएसी पर चीन की बड़ी साजिश

बीजिंग। एलएसी के पास चीन की बड़ी साजिश का खुलासा हुआ है। एलएसी पर चीनी सेना ने तैयारी बढ़ दी है। हवाई क्षेत्र, हेलीपैड निर्माण भी तेजी से चल रहा है। ड्रोन से ली गई तस्वीरें मिसाइल ठिकानों, सड़कों, पुलों के निर्माण में तेजी देखने को मिल रही है। मई 2020 के मुकाबले चीन ने अपनी तैयारी और बढ़ा दी है। सैटेलाइट इमेज से चीन की साजिश का खुलासा हुआ है।

तस्वीरें दिखाती हैं कि चीन ने सैनिकों को तेजी से तैनात करने और आक्रामक क्षमताओं का निर्माण करने के लिए बड़े पैमाने पर हवाई क्षेत्र, हेलीपैड, रेलवे सुविधाएं, मिसाइल बेस, सड़कों और पुलों का विस्तार किया है।

सैटेलाइट इमेज से ये पता चल रहा है कि ड्रैगन अपनी साजिशों के साथ आगे बढ़ रहा है। वहां पर सड़क का निर्माण और बाकी ऐसे कई काम है जिससे लगने लगा है कि मई 2020 के मुकाबले चीन ने अपनी तैयारी तेज कर दी है। सैटेलाइट इमेज से ये साफ पता चल रहा है कि मिसाइल ठिकाने, सड़क, पल सब कुछ तेजी से बन रहा है। कंस्ट्रक्शन की भी तस्वीरें सामने आई हैं।

होतान, न्गारी गुनसा और ल्हासा में प्लैनेट लैब्स द्वारा प्रदान की गई सैटेलाइट इमेज के विश्लेषण से पता चलता है कि चीनी पक्ष ने शायद नए रनवे का निर्माण करके इन सुविधाओं का विस्तार किया है और लड़ाकू जेट विमानों की सुरक्षा के लिए कठोर आश्रयों, और नए समर्थन और निर्माण का निर्माण किया है। इन तीन चीनी हवाई क्षेत्रों को विश्लेषण के लिए चुना गया था क्योंकि भारतीय पक्ष में रणनीतिक स्थिति के विपरीत उनके स्थान और भारत के साथ गतिरोध के बीच वर्तमान संचालन में उपयोग किया गया था।

किम जोंग उन की बहन ने असफल उपग्रह प्रक्षेपण की आलोचना को लेकर अमेरिका पर निशाना साधा

सियोल। उत्तर कोरिया के नेता किम जोंग उन की बहन ने एक जासूसी उपग्रह के प्रक्षेपण में असफल रहने के लिए उनके देश की आलोचना करने को लेकर बृहस्पतिवार को अमेरिका पर निशाना साधा। उन्होंने अमेरिका पर ''गैंगस्टर जैसा'' पाखंड करने का आरोप लगाया और जोर देकर कहा कि जल्द ही (उपग्रह का) सफल प्रक्षेपण किया जाएगा। दरअसल, उत्तर कोरिया ने बुधवार को एक जासूसी उपग्रह प्रक्षेपित करने का प्रयास किया था, लेकिन वह इसमें नाकाम रहा था। प्रक्षेपण के तत्काल बाद अमेरिका, दक्षिण कोरिया और जापान ने उत्तर कोरिया की आलोचना की थी। अमेरिका के राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के प्रवक्ता एडम हॉग ने कहा था कि वाशिंगटन उत्तर कोरिया की ओर से जासूसी उपग्रह प्रक्षेपण की कड़ी निंदा करता है, क्योंकि उसने प्रतिबंधित बैलिस्टिक मिसाइल तकनीक का प्रयोग किया, तनाव बढ़ाया और क्षेत्र में व अन्य जगहों पर सुरक्षा व्यवस्था को अस्थिर करने का खतरा पैदा किया।

चीन-पाक के साथ रिश्तों में बढ़े तनाव को देखते हुए एससीओ शिखर सम्मेलन को लेकर भारत ने अपनाया कड़ा रुख

लाहौर। भारत इस समय शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) की अध्यक्षता कर रहा है जिसमें सदस्य देशों के बीच साझा हितों से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की जा रही है। इसी कड़ी में हाल ही में एससीओ सदस्य देशों के विदेश मंत्रियों की बैठक गोवा में और उससे पहले रक्षा मंत्रियों की बैठक दिल्ली में आयोजित की गयी थी। इन दोनों बैठकों में चीनी मंत्रियों की भागीदारी को देखते हुए माना जा रहा था कि एससीओ वार्षिक शिखर सम्मेलन में चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग भी आएंगे। भारत सरकार ने उनको न्यौता भी भेज दिया था। इसके अलावा यह भी माना जा रहा था कि एससीओ विदेश मंत्रियों की बैठक में जिस तरह पाकिस्तानी विदेश मंत्री बिलावल भुट्टो ने हिस्सा लिया था उसी तरह पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ भी एससीओ शिखर सम्मेलन में हिस्सा ले सकते हैं। लेकिन चीन और पाकिस्तान, दोनों ही देशों के साथ भारत के रिश्ते तनावपूर्ण चल रहे हैं और चीन के साथ हालिया द्विपक्षीय बैठकों के बावजूद दोनों देशों के बीच कई मुद्दों पर गतिरोध बना हुआ है। इसके अलावा भारत की ओर से जी-20 बैठकों का आयोजन अरुणाचल प्रदेश और कश्मीर में किये जाने पर चीन और पाकिस्तान की ओर से जतायी गयी आपत्तियों को

जिस तरह भारत ने खारिज करते हुए कड़ी प्रतिक्रिया जताई थी उससे भी संबंधों में तनाव बढ़ा है। यही नहीं, एससीओ विदेश मंत्रियों की बैठक के दौरान पाकिस्तान के विदेश मंत्री को जिस तरह भारतीय विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने खरी-खरी सुनाई थी उसको लेकर भी पाकिस्तान बुरी तरह चिढ़ा हुआ है। इसके अलावा यूक्रेन के राष्ट्रपति से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की हालिया मुलाकात से उपजी परिस्थितियों के बीच माना जा रहा था कि रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन भी शायद तत्काल भारत यात्रा से बचना चाहते थे। इसी बात को देखते हुए एससीओ शिखर सम्मेलन में कई बड़े नेताओं की भागीदारी को लेकर संशय के बादल दिखने लगे थे और आखिरकार आशंकाएं सच साबित हो गयी हैं क्योंकि भारत अब चार जुलाई को डिजिटल तरीके से शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के वार्षिक शिखर सम्मेलन की मेजबानी करेगा। हालांकि भारतीय विदेश मंत्रालय ने हालांकि शिखर सम्मेलन को डिजिटल तरीके से आयोजित कराने की वजह नहीं बतायी है। अधिकारियों ने बताया कि विभिन्न पहलुओं पर विचार करते हुए, डिजिटल तरीके से शिखर सम्मेलन आयोजित कराने के विकल्प पर चर्चा की गयी और सदस्य देशों से विचार-विमर्श करने के बाद इस संबंध में अंतिम निर्णय लिया गया। हम आपको बता दें कि पिछले साल एससीओ शिखर सम्मेलन उज्बेकिस्तान के समरकंद शहर में हुआ थे जिसमें प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग और रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन समेत सभी शीर्ष नेता शामिल हुए थे। भारत ने पिछले साल 16 सितंबर को समरकंद शिखर सम्मेलन में एससीओ की अध्यक्षता संभाली थी। विदेश मंत्रालय ने एक बयान में कहा, ''पहली बार भारत की अध्यक्षता में एससीओ का 22वां शिखर सम्मेलन डिजिटल तरीके से चार जुलाई को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में होगा।'' विदेश मंत्रालय ने कहा कि एससीओ के सभी सदस्य देशों- चीन, रूस, कजाखस्तान, किर्गिस्तान, पाकिस्तान, ताजिकिस्तान और उज्बेकिस्तान को शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया है।

शाहरुख खान के साथ फिल्म जवान में नजर आएंगी सान्या मल्होत्रा

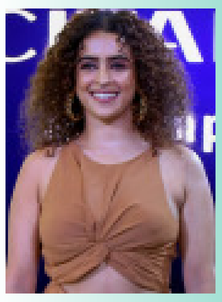

मुम्बई। शाहरुख खान की 'जवान' इस साल की बहुप्रतीक्षित फिल्मों में से एक है। एटली द्वारा निर्देशित यह फिल्म 2 जून, 2023 को रिलीज होने वाली थी। हालांकि हाल ही में निर्माताओं ने फिल्म की नई रिलीज डेट की घोषणा की। शाहरुख और नयनतारा अभिनीत जवान अब 7 सितंबर, 2023 को बड़े पर्दे पर आएगी। शाहरुख और नयनतारा के अलावा, फिल्म में विजय सेतुपति और रिधि डोगरा भी हैं। अब सान्या मल्होत्रा ने पुष्टि की है कि वह एटली निर्देशित फिल्म में दिखाई देंगी। फिल्म में एक्ट्रेस शाहरुख खान के साथ स्क्रीन स्पेस शेयर करती नजर आ सकती हैं। और एक्ट्रेस ने इस प्रोजेक्ट को अपने लिए सपने के सच होने जैसा बताया है। द इंडियन एक्सप्रेस के साथ एक साक्षात्कार में, सान्या मल्होत्रा ने पुष्टि की कि वह शाहरुख के साथ एटली के जवान में अभिनय करेंगी। अभिनेत्री ने कहा, 'मैं उत्साहित हूं क्योंकि मैं आखिरकार इसके बारे में बात कर सकती हूं। इससे पहले, जब भी मुझसे पूछा जाता था कि मैं 'जवान' में हूं या नहीं, मैं वास्तव में कुछ अजीब जवाब देती थी। मैं हमेशा शाहरुख के साथ काम करने की उम्मीद करती थी।' एक दिन, तो यह एक सपने के सच होने जैसा है। मैं खुद को उसके आसपास देखने के लिए इंतजार नहीं कर सकता...यह एक ड्रीम रोल है, एक ड्रीम फिल्म है। बस उसके आसपास होने से मुझे वास्तव में खुशी मिलती है।' काम के मोर्चे पर सान्या अगली बार कथल में दिखाई देंगी। फिल्म नेटफ्लिक्स पर डिजिटल रिलीज होगी। इस फिल्म के अलावा एक्ट्रेस के पास मेघना गुलज़ार की सैम बहादुर भी पाइपलाइन में हैं। सान्या फिल्म में विक्की कौशल और फातिमा सना शेख के साथ स्क्रीन स्पेस साझा करेंगी।

कॉमेडियन भारती सिंह ने कहा- मैं पार्क जाती हूं और सत्संग सुनती हूं इस लिए कोरोना नहीं होगा मुझे!

नई दिल्ली। भारती के ज्यातर वीडियो फनी होते हैं जिसे देखकर अगर आप सेड हैं तो जरूर हंसने लगेंगे। हाल ही में भारती ने एक वीडियो पोस्ट की है जिसमें वह बोलती हैं कि मैं सुबह पार्क जाती हूं और चार घंटे सत्संग सुनती हूं मुझे कोरोना छू भी नहीं सकता। कॉमेडियन भारती सिंह को टीवी पर देखकर आप की हंसी तो छूट ही जाती होगी लेकिन आज कर भारती सोशल मीडिया पर भी मजेदार वीडियोज बना रही हैं। भारती के ज्यातर वीडियो फनी होते हैं जिसे देखकर अगर आप सेड हैं तो जरूर हंसने लगेंगे। हाल ही में भारती ने एक वीडियो पोस्ट की है जिसमें वह बोलती हैं कि मैं सुबह पार्क जाती हूं और चार घंटे सत्संग सुनती हूं मुझे कोरोना छू भी नहीं सकता। दरअसल भारती सिंह कुछ दिन पहले जब देश में लॉकडाउन लगाया गया था तो कोरोना वायरस को लेकर एक फीमेल रिपोर्ट ने घर से बाहर निकल रही औरते से सवाल किया था। जिसके जवाब में एक औरत ने कहा था कि मैं सुबह पार्क जाती हूं, गुरु जी का सत्संग सुनती हूं 4 घंटे, मुझे कोरोना वायरस नहीं होगा। इस औरत की ये बात सोशल मीडिया पर काफी वायरल हो रही थी।

रुस्तम-ए-हिंद दारा सिंह

नई दिल्ली। दारा सिंह का नाम लेते ही एक हट्ठे-कट्ठे बलशाली पुरुष की छवि उभरती है, जिससे डर नहीं लगता बल्कि ऐसा महसूस होता है कि फौलाद के शरीर वाला यह शख्स किसी भी मुसीबत से हमें बचाने का माद्दा रखता है। 19 नवम्बर 1928 सोमवार के दिन वीरों की धरती पंजाब के धरमूचक गांव में एक ऐसे शख्स का जन्म हुआ जिसका नाम लेते हुए हर भारतीय का सीना चौड़ा और गर्दन गर्व से असमान छूने लग जाती है। पहलवानी और अभिनय के क्षेत्र में अमिट इतिहास छोड़ जाने वाले इस

शख्स का पूरा नाम दारा सिंह रन्धावा था। दारा सिंह द्वारा कुश्ती में दिए योगदान और रामायण में किया हुआ उनका हनुमान का रोल मरने के बाद उनको भारतीयों के बीच जीवंत किये हुए है। आज हम उसी महान शख्सियत रुस्तमे हिंद दारा सिंह के जीवन से जुड़े कुछ राज आपके साथ शेयर कर रहे है। दारा सिंह का जन्म श्रीमती बलवन्त कौर और श्री सूरत सिंह रन्धावा के घर हुआ था और उनके माता-पिता ने उनकी परवरिश करते हुए उनका विवाह बहुत ही छोटी उम्र में के बड़ी उम्र वाली लड़की से कर दिया था। छोटी उम्र में विवाह होने के बाद उनकी माँ की बड़ी तमन्ना थी कि उनका यह पुत्र जल्दी से जल्दी बड़ा हो जाए इसलिए वह लगभग 100 बादाम को मक्खन में पीस कर दूध के साथ देती थी। माँ के हाथों उच्च खुराक मिलने के वजह से दारा सिंह का शरीर जल्द ही पहलवानी वाला शरीर लगने लगा। दारा सिंह कुश्ती में नाम कमाने से पहले नाबालिग होते हुए 17 साल की उम्र में एक पुत्र प्रद्युम्न को जन्म दिया था जो आजकल मेरठ में रहते है। दारा सिंह ने अपने जीवनकाल में दो विवाह किये थे एक तो बचपन में घर वालों की मर्जी से और दूसरा नाम कमाने के बाद उन्होंने अपनी पसन्द-द्वारा पास लड़की सुरजीत कौर से जिनसे उनको 5 बच्चों को प्राप्त हुए जिनमे तीन लड़कियां और दो लड़के थे। मुंबई में रहने वाले विन्दु दारासिंह दूसरी माँ के पुत्र है। दारा सिंह का शरीर अच्छा होने की वजह से उन्होंने अपने भाई सरदारा सिंह रन्धावा के साथ मिल कर जल्द ही कुश्ती में अभ्यास कर बड़े-बड़े पहलवानों को धूल चटाने लग गये। इसी कारण उनके पास कुश्ती लड़ने के लिए राजा महाराजाओं के बुलावे आने लगे और वह अपने गांव से बाहर भी पहलवानी में विख्यात होने लगे। विजय रथ पर सवार होकर कुश्ती के लिए सफर करने वाले दारा सिंह ने 1947 में पहलवान तरलोक सिंह को कुआलालंपुर में, 1959 में हंगरी के विश्व चैम्पियन किंगकांग को,कनाडा के पेशेवर पहलवान जार्ज गारडियान्का और न्यूजीलैण्ड के जान डिसिल्वा को हराकर अपना और देश का परचम विदेशों तक लहराया। 6 फुट 2 इंच लम्बाई और 127 किलो वजन वाले इस रुस्तमे हिंद ने सभी देशों में अपनी धाक कयाम कर कुश्ती चैम्पियन का ख़िताब अपने नाम कर लिया। दारा सिंह भारतीय कुश्ती के चैम्पियन 1954 में ही बन गये थे और 29 मई 1968 को अमरीका के विश्व चैम्पियन लाऊ थेज को धूल चटाकर वह फ्रीस्टाइल कुश्ती के विश्व चैम्पियन भी बन गये थे। दारा सिंह ने अपनी उम्र के लगभग 55 साल कुश्ती को दिए और इस दौरान उन्होंने भिन्न-भिन्न स्टाइल में कुश्ती करते हुए कुल 500 के करीब मुकाबले किये और किसी भी मुकाबले में उन्होंने हार का मुंह नहीं देखा। 1983 में दारा सिंह ने पहलवानी करते हुए अपनी आखरी कुश्ती जीती थी जिसके बाद उस समय के राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह ने उन्हें अपराजेय पहलवान का ख़िताब दिया और इसी ख़िताब के साथ दारा सिंह ने कुश्ती से सन्यास ले लिया। दारा सिंह ने पहलवानी के साथ-साथ बॉलीवुड फिल्मों में भी हाथ आजमाया और हर जगह अपनी जीत के झंडे गड़ने वाले इस पहलवान खिलाडी ने बॉलीवुड में कुल 148 फिल्मों में अभिनय किया और साथ में 1978 में मोहाली के अंदर एक दारा स्टूडियो की नींव भी रखी। दारा सिंह और मुमताज की जोड़ी 60 के दशक में बॉलीवुड की सबसे सफल और महंगी जोड़ी थी ये जोड़ी 60 के दशक में हर फिल्म के लिए 4 लाख रूपये लेती थी। दारा सिंह ने अभिनय के साथ-साथ कुल 7 फिल्में भी लिखी थी। 1978 में आई फिल्म भक्ति में शक्ति का लेखन और निर्देशन दारा सिंह ने ही किया था इस फिल्म के साथ-साथ दारा सिंह मेरा देश मेरा धर्म में भी बतौर निर्देशक काम कर चुके है। शाहिद कपूर और करीना कपूर खान के साथ उनकी आखरी फिल्म जब वी मेट थी। कभी किसी भी दांव से हार न मानने वाला ये पहलवान गुरुवार 12 जुलाई 2012 को बिमारी से हार गया और सुबह साढ़े सात बजे 'दारा विला' में अपने जीवन की आखरी सांसे ली। दारा सिंह के बेशक अभी तक भारत रत्न अवार्ड नहीं दिया गया है पर वह भारत के बहुमूल्य रत्नों में से एक है और दुनिया के किसी भी कोने में बसने वाले भारतीय उनका नाम बड़े फर्क से लेता है।

कई एक्टर्स से जुड़ा नाम फिर भी रहीं अकेली

मुम्बई। कई उतार-चढ़ाव उनकी रील और रियल लाइफ में आए। इस दौरान कई फ़िल्मस्टार्स के साथ उनका नाम जुड़ा। इनमें नवीन निश्चल से लेकर अक्षय कुमार तक का नाम शामिल है। कहते हैं कि विनोद मेहरा से तो रेखा ने शादी तक कर ली थी। लेकिन, इतने अफेयर होने के बावजूद आज भी रेखा अकेली हैं।कहा जाता रहा है कि रेखा का पहला प्यार शुरुआती फ़िल्म 'सावन भादो' के नायक नवीन निश्चल थे। लेकिन, यासीर उस्मान ने अपनी किताब 'रेखाः एन अनटोल्ड स्टोरी' में दावा किया है कि रेखा को पहला इश्क जितेंद्र से हुआ, लेकिन जितेंद्र अपनी एयरहोस्टेस गर्लफ्रेंड शोभा के साथ कमिटेड थे। इसलिए ये लवस्टोरी आगे नहीं बढ़ पाई। ऐसे में रेखा का पहला प्यार अधूरा रह गया। इसके बाद रेखा का दिल विनोद मेहरा पर आ गया। ख़बरों की मानें तो रेखा ने विनोद मेहरा से शादी की थी। यह शादी कोलकाता में हुई थी। इसके बाद विनोद मेहरा, रेखा को अपने घर ले गए। लेकिन, विनोद मेहरा की मां कमला मेहरा ने रेखा को बहू के रूप में स्वीकार नहीं किया। बताते हैं कि कमला को रेखा के अतीत के बारे में पता था कि वह बिन-ब्याही मां पुष्पावती की बेटी हैं। इसलिए कमला ने रेखा को घर में घुसने ही नहीं दिया। ऐसे में विनोद मेहरा भी कुछ कर नहीं पाए और यह रिश्ता टूट गया। हालांकि, रेखा और विनोद मेहरा की शादी का कोई सबूत नहीं है। रेखा भी इस बात का खंडन कर चुकी हैं। एक इंटरव्यू में रेखा ने शादी की ख़बर को अफ़वाह बताते हुए विनोद मेहरा को अपना शुभचिंतक बताया था। विनोद मेहरा से रिश्ता टूटने के बाद रेखा की ज़िंदगी में जीवन के बेटे और मशहूर विलन किरण कुमार आए। लेकिन, रेखा से किरण का रिश्ता जीवन को मंजूर नहीं था। ऐसे में किरण ने भी रेखा का साथ छोड़ दिया। आखिर रेखा की यह छोटी-सी लव स्टोरी भी ख़त्म हो गई।अमिताभ और जया की शादी 1973 में हो गई थी। इसके कुछ सालों बाद ही अमिताभ और रेखा के अफेयर की ख़बरें सुर्खियों में आने लगीं। कहा जाता है कि 1976 में फ़िल्म 'दो अनजाने' की शूटिंग के वक्त अमिताभ और रेखा करीब आए थे। 1981 में यश चोपड़ा ने जया-अमिताभ और रेखा के रिश्ते को लेकर ही फ़िल्म 'सिलसिला' बनाई। इस फ़िल्म में ही अमिताभ-रेखा आखिरी बार साथ दिखे थे।1990 में रेखा की शादी दिल्ली बेस्ड बिजनेसमैन मुकेश अग्रवाल से हुई थी, जिन्होंने सालभर के अंदर सुसाइड कर लिया था। बताते हैं कि शादी के कुछ दिनों बाद ही रेखा और मुकेश के बीच दूरियां आ गई थी। रेखा, मुकेश को छोड़कर मुंबई आ गई थीं। मुकेश भी रेखा के पीछे-पीछे मुंबई आ गए थे। फिर एक दिन मुकेश ने अपने फ्लैट में पंखे से लटककर फांसी लगा ली। यह 90 के दशक के मध्य की बात है, जब रेखा का नाम अक्षय कुमार के साथ जोड़ा गया। दरअसल, दोनों 'खिलाडियों के खिलाड़ी' फ़िल्म में साथ नज़र आये थे और तभी उन दोनों के नजदीकी की चर्चा शुरू हुई थी। अक्षय कुमार और रेखा के बीच के इस संबंध के बारे में ज्यादा कुछ बाहर निकल कर नहीं आया। बहरहाल, रिलेशनशिप से इतर अगर बात करें तो इसमें किसी को संदेह नहीं कि रेखा एक ज़बरदस्त अभिनेत्री हैं। आज भी उनका जादू उनके चाहने वालों के सिर चढ़ कर बोलता है।

झुलसी त्वचा की कैसे रखें देखभाल

गर्मियों के मौसम में चिलचिलाती धूप तथा यूवी रेडिएशन की वजह से त्वचा में नमी कम हो जाती है, जिस वजह से त्वचा रूखी, मुरझाई तथा बेजान हो जाती है और त्वचा का रंग सामान्य से ज्यादा गहरा या काला हो जाता है। सौंदर्य विशेषज्ञ शहनाज हुसैन ने इस मौसम में त्वचा की देखभाल के उपाय बताते हुए कहा कि इस समय सूर्य की किरणों से त्वचा के बचाव के लिए सनस्क्रीन का लेप काफी प्रभावी माना जाता है। इसके अलावा टोपी पहनना, छाता लेकर चलना तथा दोपहर 12 बजे से 3 बजे तक घर में रहना वैकल्पिक उपाय माने जाते हैं। अगर आपको भरी दोपहर में घर से निकलना ही पड़े तो सूर्य की गर्मी से बचाव करने वाली सनस्क्रीन बाजार में उपलब्ध है। सूर्य की गर्मी तथा वायु प्रदूषण से चेहरे पर कील - मुहांसे, छाइयां, काले दाग, ब्लैकशेड तथा पसीने की बदबू की समस्या हो जाती है। **कैसे झुलसती है त्वचा :** सूर्य के सीधे प्रभाव में आने से त्वचा में मेलेनिन की मात्रा बढ़ जाती है जो कि त्वचा की रंगत को प्रभावित करती है। मेलेनिन वास्तव में सूर्य की हानिकारक अल्ट्रा वॉयलेट किरणों से त्वचा की रक्षा करता है। मेलेनिन जब त्वचा के निचले हिस्सों में पैदा होने के बाद इसके ऊपरी बाहरी हिस्सों तक पहुंचता है तो त्वचा की रंगत काली पड़ जाती है। शहनाज ने कहा कि सूर्य की गर्मी से झुलसी त्वचा की रंगत को दुबारा हल्की रंगत में लाने के लिए त्वचा के अनुरूप फेशियल स्क्रब का उपयोग कर सकते हैं। यदि आपकी त्वचा शुष्क हो तो सप्ताह में मात्र एक बार ही स्क्रब का उपयोग करना चाहिए, लेकिन तैलीय त्वचा में इसका उपयोग दोहरा सकते हैं। स्क्रब को त्वचा पर आहिस्ता से गोलाकार स्वरूप में उंगलियों के सहारे लगाना चाहिए तथा कुछ समय बाद इसे ताजे सादे पानी से धो डालना चाहिए। इससे त्वचा की मृत कोशिकाएं हट जाती हैं जिससे त्वचा में निखार आ जाता है। शहनाज ने कहा कि रसोई में रखे उत्पादों से आसानी से स्क्रब बनाया जा सकता है। वास्तव में रसोई में रखे अनेक उत्पादों को झुलसी त्वचा को ठीक करने के लिए सीधे तौर पर लगाया जा सकता है।

सौंदर्य विशेषज्ञ के सुझाव.... -दिनभर बाहर रहने पर शाम को चेहरे पर कुछ समय तक बर्फ के टुकड़ों को रखिए। इससे सनबर्न से हुए नुकसान से राहत मिलेगी तथा त्वचा में नमी बढ़ेगी। -चेहरे पर टमाटर का पेस्ट लगाने से भी गर्मियों में झुलसी त्वचा को काफी सुकून मिलता है। -सनबर्न के नुकसान को कम करने के लिए चेहरे को बार बार ताजे, साफ तथा ठंडे पानी से धोइए। -गुलाब जल में तरबूज का रस मिलाकर चेहरे पर लगाने के 20 मिनट बाद ताजे पानी से धो डालने से सनबर्न का असर खत्म हो जाएगा। -एक चम्मच शहद में दो चम्मच नींबू का रस मिलाइए तथा आधा घंटा बाद ताजे साफ पानी से धो डालिए। इसे प्रतिदिन चेहरे पर लगाइए। -तैलीय त्वचा से झुलसी त्वचा को राहत प्रदान करने के लिए खीरे की लुगदी को दही में मिलाइए और इस मिश्रण को 20 मिनट बाद ताजे स्वच्छ पानी से धो डालिए। -सूर्य की किरणों से झुलसी त्वचा पर कॉटनवूल की मदद से ठंडा दूध लगाएं।

इन दिनों क्या कर रही हैं फराह नाज, साल 2005 में शादी के बाद हो गई थीं गायब

मुम्बई। बॉलीवुड अभिनेत्री फराह नाज अपने समय की मशहूर अदाकारा रही हैं। इंडस्ट्री में उन्हें उनके दमदार अभिनय के लिए पहचाना जाता है। फराह नाज ने अपने फिल्मी करियर के दौरान बॉलीवुड में कई हिट फिल्में दी लेकिन उन्हें सबसे ज्यादा उनके गुस्सैल स्वभाव के लिए जाना जाता था। ऐसे में आज हम आपको बताने जा रहे है कि बॉलीवुड की यह मशहूर अदाकारा इन दिनों कहां हैं। कहा तो यह तक जाता था कि किसी को कुछ पता नहीं होता था कि वह कब किस पर हाथ उठा देंगी। आपको बता दें कि फराह नाज को लेकर कई बार खबरें तो यह तक आई कि उन्होंने एक पार्टी के दौरान एक प्रोड्यूसर पर हाथ उठा दिया था।

फराह नाज बॉलीवुड की मशहूर अभिनेत्री तबू की बड़ी बहन हैं। फराह नाज ने विंदु दारा सिंह से शादी की थी। हालांकि उनकी यह शादी ज्यादा समय तक नहीं चल पाई। विंदु दारा सिंह के पिता दारा सिंह इस शादी के खिलाफ लेकिन फिर भी दोनों ने शादी की और हमेशा के लिए एक-दूजे के हो गए। फराह नाज और विंदु दारा सिंह की शादीशुदा जिंदगी में बढ़ती दिक्कतों के बाद दोनों ने अलग होने का फैसला

कर लिया। शादी के 7 साल बाद विंदु दारा सिंह से तलाक लेने के बाद फराह नाज ने सुमित सहगल संग शादी रचाई।

फिलहाल वह अपने पति के साथ मुंबई में रहती हैं और उनके साथ डबिंग कंपनी के काम में हाथ बटाती है। फराह और सुमित का एक बेटा भी है। वहीं आपको बता दें कि फराह को लेकर खबरें तो यह भी थी कि एक बार उन्होंने चंकी पांडे को जोरदार तमाचा जड़ दिया था। फराह ने अपने फिल्म करियर में की शुरुआत फिल्म फासले से की थी। इसके बाद उन्होंने मरते दम तक, नसीब अपना अपना, लव 86, ईमानदार और घर-घर की कहानी जैसी कई फिल्मों में काम किया। इसके बाद साल 2005 में फराह शादी कर बॉलीवुड से गायब हो गई थीं।

गर्मियों की छुट्टियों में त्वचा की कैसे रखें ख्याल

सौंदर्य के लिहाज से गर्मियां हमारी त्वचा को सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचाती हैं। गर्मियों के मौसम में सभी छुट्टियों पर जाना पसंद करते हैं, लेकिन छुट्टियों पर जाने से पहले ही सूर्य की तेज हानिकारक यू.वी. किरणों से त्वचा को होने वाले नुकसान के प्रभावी रोकथाम के उपाय करने चाहिए ताकि सौंदर्य के हिसाब से छुट्टियां दुखद अनुभव की यादगार न बन जाए। समुद्री तटों और पहाड़ों की बर्फ की पारदर्शी सतहों पर सूर्य की किरणें मैदानी इलाकों की बजाय ज्यादा तेज होती हैं जिससे आपकी त्वचा में जलन, कालापन, सनबर्न तथा मुहांसों जैसी सौंदर्य समस्याएं उग्र रूप धारण कर सकती हैं।सौंदर्य विशेषज्ञ शहनाज हुसैन का कहना है कि रेतीले समुद्री तटों तथा बर्फीले क्षेत्रों में गर्मियों के मौसम में सूर्य की तेज किरणों की वजह से साफ सुथरी त्वचा को कील मुंहासों की समस्या से रूबरू होना पड़ सकता है। उनका कहना है कि आप कुछ सावधानियां बरत कर अपनी छुट्टियों का भरपूर आनन्द उठा सकती है। आप सूर्य की किरणें से बचाव के लिए प्रभावी सनस्क्रीन लोशन जरूर रखें। जब भी आप बाहर धूप में जा रहे हों तो जाने से 20 मिनट पहले चेहरे तथा शरीर के सभी खुले अंगों पर सनस्क्रीन का लेप जरूर कर लें। यदि आप धूप में एक घंटा या ज्यादा समय तक रहें तो दोबारा सनस्क्रीन लगा लें। संवेदनशील तथा सनबर्न से प्रभावित त्वचा में 30 या ज्यादा एस.पी.एफ. सनस्क्रीन का उपयोग करें। गर्मियों में छुट्टियों के दौरान अपने सौंदर्य को बनाए रखने के लिए माइस्चराईजर, रिहाईडरेंट क्लींजर, हैंड क्रीम तथा होठों का बाम साथ रखना कतई न भूलें। गर्मियों की छुट्टियों के दौरान तैलीय त्वचा को चमकाने तथा छिद्रों को साफ करने के लिए स्क्रब का अधिकतम उपयोग कीजिए। शहनाज का कहना है कि समुद्री तट पर खारे पानी में नहाने के बाद चेहरे को ताजे साफ पानी से धोएं। जब भी आप वापस अपने होटल के कमरे में पहुंचें तो चेहरे पर ठंडे दूध की मालिश करके इसे कुछ समय तक छोड़ दें। इससे सनबर्न के प्रभाव को रोकने में मदद मिलेगी तथा चेहरे की त्वचा को ठंडक मिलेगी। इसके बाद चेहरे पर मॉइस्चराईजर लगाएं। चेहरे की त्वचा के पोषण तथा फिर से जवां बनाने के लिए 'पील आफ मास्क' उपयोगी साबित होगा। शहद को अण्डे के सफेद भाग में मिलाकर इस पेस्ट को चेहरे पर 20 मिनट तक लगा रहने के बाद इसे ताजे स्वच्छ जल से धो डालिए। इस मिश्रण से त्वचा कोमल, मुलायम तथा चमकदार बनती है। शहनाज हुसैन का कहना है कि समुद्री पानी से नहाने से आपके बाल निर्जीव तथा उलझ सकते हैं। समुद्री पानी में नहाते समय सिर को कैप से ढकने से बालों को सूर्य की गर्मी तथा खारे पानी के नुकसान से प्रभावी तरीके से बचाया जा सकता है। समुद्री पानी में नहाने के बाद बालों को हल्के हर्बल शैम्पू

से धो डालिए तथा शैम्पू के बाद बालों में कंडीशनर या हेयर सीरम का उपयोग कीजिए। समुद्री तट पर जाने से पहले सौंदर्य प्रसाधनों का कम से कम इस्तेमाल करें जबकि आप सफर के दौरान लिप गलॉस, पाऊडर, आई-पेंसिल, मस्कारा, लिपस्टिक जैसे सामान्य सौंदर्य प्रसाधनों का उपयोग कर सकती हैं। यदि आपकी तैलीय त्वचा है तथा आप गर्मियों में आद्र्रता भरे मौसम में सफर कर रहे हैं तो टिशू पेपर, टैलकम पाऊडर तथा डीओडरेंट अपने साथ जरूर रखें। 'पिक मी अप' फेस मास्क आपकी त्वचा को साफ, चमकदार तथा आकर्षक बना सकता है। इससे त्वचा की थकान को मिटाने तथा त्वचा को तरोताजा बनाए रखने में मदद मिलती है। सफर के दौरान 'पील आफ मास्क' के प्रयोग से त्वचा में चमक बनाए रखने में मदद मिलती है। इस मौसम में हाथों तथा शरीर के खुले अंगों में दिन में दो तीन बार मॉइस्चराईजर का प्रयोग करें तथा इसकी त्वचा पर मालिश करें। बालों के सौंदर्य के लिए सनस्क्रीन रहित हेयर क्रीम, हर्बल शैम्पू, हेयर सीरम तथा कंडीशनर का लगातार उपयोग करें। बालों को सूर्य की किरणों, हवा के झोकों तथा धूल मिट्टी से बचाने के लिए स्कार्फ का उपयोग करें। तैलीय बालों के लिए गर्म पानी में टी बैग डुबोइए।

रुपहले पर्दे को अपनी दिलकश अदाओं से सजाया मधुबाला ने

मुम्बई। बॉलीवुड में मधुबाला को एक ऐसी अभिनेत्री के रूप में याद किया जाता जिन्होंने अपनी दिलकश अदाओं और दमदार अभिनय से लगभग चार दक तक सिने प्रेमियों का भरपूर मनोरंजन किया। मधुबाला मूल नाम मुमताज बेगम देहलवी का जन्म दिल्ली में 14 फरवरी 1933 को हुआ था। उनके पिता अताउल्लाह खान रिक्शा चलाया करते थे। तभी उनकी मुलाकात एक नजूमी, भविष्यवक्ता, कश्मीर वाले बाबा से हुई जिन्होंने भविष्यवाणी की कि मधुबाला बड़ी होकर बहुत शोहरत पाएंगी। इस भविष्यवाणी को अताउल्लाह खान ने गंभीरता से लिया और वह मधुबाला को लेकर मुंबई आ गये।वर्ष 1942 में मधुबाला को बतौर बाल कलाकार 'बेबी मुमताज' के नाम से फिल्म 'बसंत' में काम करने का मौका मिला। बेबी मुमताज के सौंदर्य से अभिनेत्री देविका रानी काफी मुग्ध हुयी और उन्होंने उनका नाम 'मधुबाला' रख दिया। उन्होंने मधुबाला से बॉम्बे टॉकीज की फिल्म 'ज्वार भाटा' में दिलीप कुमार के साथ काम करने की पेशकश भी कर दी। लेकिन मधुबाला उस फिल्म में किसी कारण काम नहीं कर सकीं। 'ज्वारभाटा' हिंदी की महत्वपूण फिल्मों में से एक है। इसी फिल्म से अभिनेता दिलीप कुमार ने अपने सिने करियर की शुरुआत की थी। मधुबाला को फिल्म अभिनेत्री के रूप में पहचान निर्माता निर्देक केदार शर्मा की वर्ष 1947 में आई फिल्म 'नीलकमल' से मिली। इस फिल्म में उनके अभिनेता थे 'राजकपूर' नील कमल बतौर अभिनेता राजकपूर की पहली फिल्म थी। भले हीं फिल्म नीलकमल सफल नहीं रही लेकिन इससे मधुबाला ने बतौर अभिनेत्री अपने सिने करियर की शुरुआत कर दी। वर्ष 1949 तक मधुबाला की कई फिल्में प्रदर्शित हुई लेकिन इनसे उन्हें कुछ खास फायदा नहीं हुआ। वर्ष 1949 में बॉम्बे टॉकीज के बैनर तले बनी निर्माता अशोक कुमार की फिल्म 'महल' मधुबाला के सिने करियर में महत्वपूर्ण फिल्म साबित हुई। रहस्य और रोमांच से भरपूर यह फिल्म सुपरहिट रही और इसी के साथ बॉलीवुड में 'हारर और सस्पेंस' फिल्मों के निर्माण का सिलसिला चल पड़ा। फिल्म की जबरदस्त कामयाबी ने नायिका मधुबाला के साथ हीं निर्देशक कमाल अमरोही और गायिका लता मंगेशकर को भी फिल्म इंडस्ट्री में स्थापित कर दिया। वर्ष 1950 से 1957 तक का वक्त मधुबाला के सिने करियर के लिये बुरा साबित हुआ। इस दौरान उनकी कई फिल्में असफल रही। लेकिन वर्ष 1958 में 'फागुन', 'हावडा ब्रिज', 'कालापानी' तथा 'चलती का नाम गाड़ी' जैसी फिल्मों की सफलता के बाद मधुबाला एक बार फिर शोहरत की बुंलदियों तक जा पहुंची। फिल्म 'हावडा ब्रिज' में मधुबाला ने क्लब डांसर की सटीक भूमिका अदा करके दर्शकों का मन मोह लिया। इसके साथ ही वर्ष 1958 मे हीं प्रदर्शित फिल्म 'चलती का नाम गाड़ी' में उन्होंने अपने अभिनय से दर्शकों को हंसाते हंसाते लोटपोट कर दिया। मधुबाला के सिने करियर में उनकी जोड़ी अभिनेता दिलीप कुमार के साथ काफी पसंद की गयी। फिल्म 'तराना' के निर्माण के दौरान मधुबाला दिलीप कुमार से मोहब्बत करने लगी। उन्होंने अपने ड्रेस डिजाइनर को गुलाब का फूल और एक खत देकर दिलीप कुमार के पास इस संदेश के साथ भेजा कि यदि वह भी उनसे प्यार करते हैं तो इसे अपने पास रख ले। दिलीप कुमार ने फूल और खत दोनों को सहर्ष

स्वीकार कर लिया। बी आर चोपड़ा की फिल्म नया दौर में पहले दिलीप कुमार के साथ नायिका की भूमिका के लिये मधुबाला का चयन किया गया और मुंबई में ही इस फिल्म की शूटिंग की जानी थी। लेकिन बाद में फिल्म के निर्माता को लगा कि इसकी शूटिंग भोपाल में भी जरूरी है। मधुबाला के पिता अताउल्लाह खान ने बेटी को मुंबई से बाहर जाने की इजाजत देने से इंकार कर दिया। उन्हें लगा कि मुंबई से बाहर जाने पर मधुबाला और दिलीप कुमार के बीच का प्यार परवान चढ़ेगा और वह इसके लिए राजी नहीं थे। बाद में बी.आर. चोपड़ा को मधुबाला की जगह वैजयंतीमाला को लेना पड़ा। अताउल्लाह खान बाद में इस मामले को अदालत में ले गये और इसके बाद उन्होंने मधुबाला को दिलीप कुमार के साथ काम करने से मना कर दिया। यहीं से दिलीप कुमार और मधुबाला की जोड़ी अलग हो गयी। पचास के दशक में स्वास्थ्य परीक्षण के दौरान मधुबाला को अहसास हुआ कि वह हृदय की बीमारी से ग्रसित हो चुकी हैं। इस दौरान उनकी कई फिल्में निर्माण के दौर में थीं। मधुबाला को लगा यदि उनकी बीमारी के बारे में फिल्म इंडस्ट्री को पता चल जायेगा तो इससे फिल्म निर्माता को नुकसान होगा। इसलिये उन्होंने यह बात किसी को नहीं बतायी। उन दिनों मधुबाला के.आसिफ की फिल्म 'मुगल-ए-आजम' की शूटिंग में व्यस्त थीं। मधुबाला की तबीयत काफी खराब रहा करती थी। मधुबाला अपनी नफासत और नजाकत को कायम रखने के लिये घर में उबले पानी के सिवाए कुछ नहीं पीती थीं। उन्हें जैसलमेलर के रेगिस्तान में कुंए और पोखरे का गंदा पानी तक पीना पड़ा। मधुबाला के शरीर पर असली लोहे की जंजीर भी लादी गयी लेकिन उन्होंने उफ तक नहीं की और फिल्म की शूटिंग जारी रखी। मधुबाला का मानना था कि 'अनारकली' के किरदार को निभाने का मौका बार-बार नहीं मिलता। वर्ष 1960 में जब 'मुगल-ए-आजम' प्रदर्शित हुयी तो फिल्म में मधुबाला के अभिनय से दर्शक मुग्ध हो गये। हांलाकि बदकिस्मती से इस फिल्म के लिये मधुबाला को सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का फिल्म फेयर पुरस्कार नहीं मिला लेकिन सिने दर्शक आज भी ऐसा मानते हैं कि मधुबाला उस वर्ष फिल्म फेयर पुरस्कार की हकदार थीं। साठ के दशक में मधुबाला ने फिल्मों मे काम करना काफी कम कर दिया था। 'चलती का नाम गाड़ी' और 'झुमरू' के निर्माण के दौरान ही मधुबाला किशोर कुमार के काफी करीब आ गयी थीं। मधुबाला के पिता ने किशोर कुमार को सूचित किया कि मधुबाला इलाज के लिये लंदन जा रही हैं और वहां से लौटने के बाद ही उनसे शादी कर पायेगी। लेकिन मधुबाला को अहसास हुआ कि शायद लंदन में ऑपरेशन होने के बाद वह जिंदा नहीं रह पाये और यह बात उन्होंने किशोर कुमार को बतायी। इसके बाद मधुबाला की इच्छा पूरा करने के लिये किशोर कुमार ने मधुबाला से शादी कर ली। शादी के बाद मधुबाला की तबीयत और ज्यादा खराब रहने लगी। हांलाकि इस बीच उनकी 'पासपोर्ट', 'झुमरू', 'बॉय फ्रेंड', 'हाफ टिकट' और 'शराबी' जैसी कुछ फिल्में प्रदर्शित हुयी। वर्ष 1964 में एक बार फिर मधुबाला ने फिल्म इंडस्ट्री की ओर रुख किया। लेकिन फिल्म 'चालाक' के पहले दिन की शूटिंग में मधुबाला बेहोश हो गयीं और बाद में यह फिल्म बंद कर देनी पड़ी। अपनी दिलकश अदाओं से दर्शकों के दिल में खास पहचान बनाने वाली मधुबाला 23 फरवरी 1969 को इस दुनिया को अलविदा कह गयीं।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक दीपक अरोरा द्वारा
श्री आधुनिक प्रिन्टर्स एण्ड पैकेजर्स प्रा.लि.
1-मिर्जापुर रोड नैनी इलाहाबाद उ.प्र.-211008 से मुद्रित एवं एम2ए/25 एडीए कालोनी नैनी इलाहाबाद 211008 (उ.प्र.) से प्रकाशित।

सम्पादकः- डा0 दीपक अरोरा
मो0न0 09415608783
RNI No. UPHIN/2012/41154
डाक पंजीयन नं. 99/2018-20

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगे।